दीप जरैत रहए

ई उपन्यास कोनो व्यक्ति विशेषक जीवनपर आधारित नहि अछि। एहिमे लेल गेल नाम, ठाम ओ कथानक सभ काल्पनिक थिक। तथापि यदि ककरो नाम मिलि रहल अछि तँ एकरा एकटा मात्र संयोग बूझल जाए

दीप जरैत रहए

उपन्यास

रबीन्द्र नारायण मिश्र

दीप जरैत रहए

मैथिली उपन्यास

रबीन्द्र नारायण मिश्र

ISBN: 978-93-5811-247-4

दाम : 300 रूपया

सर्वाधिकार सुरक्षित © : रबीन्द्र नारायण मिश्र

पहिल संस्करण :2023

लेखक एवम् प्रकाशक :रबीन्द्र नारायण मिश्र
House No: C 42, NSG SAS Ltd, Black Cat Enclave
Pocket No: 6 Builders Area Greater Noida
District: Gautam Buddha Nagar
UP: 201315
M-9968502767

भारतमे मुद्रित(Printed in India)

दीप जरैत रहए A Maithili Novel by Shri. Rabindra Narayan Mishra.

एहि पोथीक सर्वाधिकार पुस्तकक लेखक श्री रबीन्द्र नारायण मिश्र लग सुरक्षित अछि। काँपीराइट धारकक लिखित अनुमतिक बिना पोथीक कोनो अंशक छायाप्रति एवम् रिकॉडिंग सहित इलेक्ट्रॉनिक अथवा यांत्रिक, कोनो माध्यमसँ अथवा ज्ञानक संग्रहण वा पुनर्प्रयोगक प्रणाली द्वारा कोनो रूपमे पुनरुत्पादित अथवा संचारित-प्रसारित नहि कएल जा सकैत अछि।

स्नेहार्पण

जीवन यात्राक सहगामिनी
श्रीमती आशा मिश्रकेँ

आभार

हमर प्रकाशित पुस्तकसभपर कतेको विद्वान लोकनिक उत्साहवर्धक प्रतिक्रिया प्राप्त होइत रहल अछि। हम अत्यंत विनम्रतापूर्वक हुनका लोकनिक प्रति कृतज्ञता व्यक्त करैत छी आ आशा करैत छी जे हुनकासभक मार्गदर्शन भविष्योमे एहिना प्राप्त होइत रहत।

एहि उपन्यासक रचनाक क्रममे आदरणीय श्री बुद्धिनाथ झा आ आदरणीय श्री चन्द्र मोहन कर्णक महत्वपूर्ण सुझाओ प्राप्त भेल। ताहि हेतु हम हुनकालोकनिक आभारी छी।

हम अपन पत्नी श्रीमती आशा मिश्रक आभारी छी, जे एहि पोथीक रचना होइत काल अनेको रचनात्मक सुझाव देलीह जाहिसँ एहिमे गुणात्मक सुधार भेल।

रबीन्द्र नारायण मिश्र

ग्रेटर नोएडा

9.2.2023

श्री रबीन्द्र नारायण मिश्रक प्रकाशित कृति :

मैथिलीमे:-

प्रकाशन वर्ष:2017
१. 'भोरसँ साँझ धरि' (आत्म कथा), २. 'प्रसंगवश' (निवंध), ३. 'स्वर्ग एतहि अछि' (यात्रा प्रसंग),

प्रकाशन वर्ष:2018

४. 'फसाद' (कथा संग्रह) ५. `नमस्तस्यै' (उपन्यास) ६. विविध प्रसंग (निवंध) ७.महराज(उपन्यास) ८.लजकोटर(उपन्यास)

प्रकाशन वर्ष:2019

९.सीमाक ओहि पार(उपन्यास)१०.समाधान(निवंध संग्रह) ११.मातृभूमि(उपन्यास) १२.स्वप्नलोक(उपन्यास)

प्रकाशन वर्ष:2020

१३.शंखनाद(उपन्यास) १४.इएह थिक जीवन(संस्मरण)

१५.ढहैत देबाल(उपन्यास) १६.पाथेय(संस्मरण)

प्रकाशन वर्ष:2021

१७.हम आबि रहल छी(उपन्यास) १८.प्रलयक परात(उपन्यास)

प्रकाशन वर्ष:2022

१९.बीति गेल समय(उपन्यास) २०.प्रतिबिम्ब(उपन्यास)

२१.बदलि रहल अछि सभकिछु(उपन्यास)

22. राष्ट्र मंदिर(उपन्यास) २३. संयोग(कथा संग्रह) २४. नाचि रहल छलि वसुधा (उपन्यास)

प्रकाशन वर्षः2023

२५.दीप जरैत रहए(उपन्यास)

In English: -

Year of publication:2018
1. The Lost House (Collection of short stories)
2. Life is an art

हिन्दी में –

प्रकाशन वर्ष:2019
१.न्याय की गुहार(उपन्यास)

दीप जरैत रहए

1

आइ कैकदिनसँ मुसलाधार वर्षा भए रहल अछि। रस्तासभपर ठेहुन भरि पानि लागि गेल अछि। कतहु आएब-जाएब संभव नहि भए रहल अछि। हथिआ नक्षत्र एही लेल तँ नामी अछि। ई कोनो एही साल एना भेलैक अछि से बात नहि छैक। सभसाल एहि समयमे एहने हाल रहैत अछि। यथासंभव लोक अपन बचाओक तैयारीओ केने रहैत अछि। मास दिन पहिनहिसँ जारनिक ओरिआन केने रहैत अछि। जरूरी सामानसभक जोगार केने रहैत अछि। मुदा ओ सभ भविष्यक की ओरिआन करत जकर नित्यप्रतिक जीवन दावपर लागल रहैत अछि,जकर जीवन संघर्षसँ भरल अछि? जे नित्य कमाइत अछि आ नित्य खाइत अछि। ओ सभ घर बैसि गेल अछि। बाहर जा नहि सकैत अछि। काजसभ बंद छैक। मुदा पेट तँ मानतैक नहि? ओकरो तँ भोजन चाहबे करी,टेल्हसभकेँ किछु आहार तँ चाही जाहिसँ ओकर चिकरब-भोकरब कम होइक। करवनहु खाइत, करवनहु भूखले रहि जाइत। एहि तरहेँ समय काटि रहल लोकसभक संख्या सेहो कम नहि छल। मौका भेटितहि ओ सभ कोनो जोगारमे लागि जाइत। आर नहि किछु तँ मालिकसभक ओहिठाम पहुँचि जाइत।

समयकेँ तँ बितबेक रहैत छैक। एहनो बेकाल समय आखिर बीतिए जाइत छलैक। बुनछेक होइतहि लोकसभ फटाफट अपन-अपन जीविकामे लागि जाइत छल। जहाँ बुनछेक होइत, लोकसभ धराधर अपन जरूरी काजसभ कए लितथि। ओहने समयमे एकटा रमनगर बात होइत छलैक। सभसाल हथिआ नक्षत्र अबैत छल आ

संग लागल दुर्गा पूजाक प्रारंभ सेहो होइत छल। मौसम चाहे जेहन होउक,दुर्गापूजा तँ होएबे करत। ओकरा तँ टारल नहि जा सकैत छल,ओहो मिथिलामे। सबाले नहि उठैत अछि। दुर्गापूजाक आगमन होइते घर-घर ढोल बजबैत ढोलिआ पूजाक हकार दैत छल। डिग,डिग,डिग....। षष्टी दिन साँझुक उखरामे बेलनोती देखबाक हेतु लोकसभ जमा होइत। ओहीदिनसँ दुर्गापूजाक धमगिज्जर शुरु भए जाइत। सप्तमी,अष्टमी आ नवमी तीन दिन तँ विशेष कार्यक्रम होइते छल। कैकबेर नाच-गानसभ एकाध दिन बेसीए चलि जाइत छल। संपूर्ण वायुमंडलमे एकटा अपूर्व सुगंध पसरि जाइत छल। लगैक जेना प्रकृति ऋृतु परिवर्तनक सूचना दए रहल छथि। यदि वर्षा रुकि गेल,तँ आनन्दे-आनन्द।

दुर्गापूजाक अवसरपर नाटक करबाक हेतु गामक कलाकारसभ कैक मास पहिनेसँ पूर्वाभ्यास करए लगैत छलाह। सही नाटकक चुनाओ,फेर कलाकारसभक चयन ,नाटकक निदेशक के हेताह ताहिपर कतेको बेर घमरथन। एहूसभसँ बेसी परेसानी होइत छल स्त्रीपात्रक चयनमे। कारण ओहिसमयमे अपन समाजमे वालिकाकेँ एतेक स्वतंत्रता नहि रहैत छलैक। एहिसभक अछैत लोकसभमे नाटकक प्रतिए बेस उत्साह रहैत छलैक। नाटक होएत आ ताहि संगे नटुआ नाचत,रंग-विरंगक गीतसभ गाओल जाएत। लोकसभ से सोचिए कए आनन्दमे रहैत छलाह। नाटकक घोषणा माइकपर गामे-गाम कएल जाइत छल। तकरबाद तँ लोकक उत्साह देखएबाला होइत छल। साँझ कोना पड़त? जल्दीसँ धिआ-पुतासभ अपन-अपन जगह छेकि लैत छल। लगपासक लोकसभ सेहो दुर्गास्थानमे नाटक देखबाक हेतु पहुँचि जाइत छलाह। नाटक शुरु होइत-होइत तँ लोकक करमान लागि जाइत छल। कैकबेर नाटक आब शुरु होमहिबाला रहैत छल कि पानि टिपिर-टिपिर शुरु भए जाइत।

दुर्गापूजाक मौसम अबितहि सिङरहारक गाछसभमे लाल-लाल डंटीमे उज्जर-उज्जर सिंगारक फूल लागि जाइत छल। फटकिएसँ ओकर अपूर्व सुगंधसँ मोन आनन्दित भए जाइत छल। सिङरहारक गाछपर भुआ सेहो लटकले रहैत छल। मुदा तेँ की? लोक फूल लोढ़नाइ छोड़ि देत की? लगपासमे खसल सिङरहारक फूलकेँ पवित्र मानि बीछल जाइत छल। ओकरा फुलडालीमे राखल जाइत छल। संगहि अढ़ूलक लाल टुह-टुह फूल ताकि-ताकि कए आनल जाइत छल।

दुर्गापूजाक समयमे घर-घर वातावरणमे सात्विकता भरि जाइत छल। धूप-दीपसँ भगवती घर पवित्र लगैत रहैत छल। मह-मह करैत रहैत छल। घरे-घर सभ दुर्गापाठ करैत छलाह। के ओकर उच्चारणपर ध्यान दैत अछि,के ओकर अर्थ बुझबाक प्रयास करैत अछि? मुदा हृदय जगदम्बाक भक्तिसँ भरल रहैत छल। कतेकोगोटे तँ पाठ करैत-करैत अश्रुपात करए लगैत छलाह। माता हे! जगदम्बा हे! क संवोधनसँ जगदम्बाक आवाहन करैत रहैत छलाह।

भगवती लग बाउलपर जयन्ती खसाओल जाइत छल। नित्य अछिंजल सँ ओकरा सिक्त कएल जाइत छल। क्रमशः जयन्ती बढ़ैत,आ दशमी दिन ओकरा काटल जाइत। विधि-विधानपूर्वक ओकरा सभक टीकमे बान्हल जाइत। दुर्गापूजाक ओ अंतिम दिन रहैत छल। तकर बाद लोकसभ माताकेँ विदा कए फेर अगिला साल एहिना दर्शन देबाक आग्रह करैत छलाह। सभकेँ सुखी-संपन्न रखबाक हेतु प्रार्थना करैत छलाह।

दशमीक बाद कोजागरा,फेर दीयाबाती,तकर बाद भरदुतिआ,तखन छठि। कहबाक माने जे पाबनिक श्रृंखला शुरु भए जाइत छल। ओना जितिआ पाबनि धिआ-पुताक हेतु कम रोमांचकारी नहि होइत छल। अधरतिएमे बच्चासभकेँ औंठन करबाक हेतु उठाओल जाइत छल। बच्चासभमे की उत्साह रहैत छल तकर वर्णन नहि कएल जा सकैत अछि।

2

मोन बहुत उदास छल। पाबनिक समयमे परिस्थितिवश अपन परिवार-समाजसँ दूर जा रहल छलहुँ। कतए जाएब,की करब तकर कोनो ठेकान नहि छल। मुदा गामोमे रहब संभव नहि छल । अभावग्रस्त लोकक हेतु गामसँ खराब किछु नहि। अपनो लोक शत्रु भए जाइत अछि। तरह-तरहसँ अपमानित करैत अछि। कम सँ कम अपरिचित स्थानमे से तँ नहि होएत। मरनो भलो विदेशमे जहाँ न अपनो कोइ । सएहसभ सोचि डेग आगू केने जाइत छलहुँ।

गामसँ निकलि हम एक बेर वापस अपन घर दिस देखलहुँ। नीचाँमे इंटाक देबाल आ ऊपर खपड़ासँ छारल चार छल। लगीचेमे नारियरक दूटा गाछ। चौरचनक समयमे ओहि नारियरक गाछसँ बाबू नारियर तोड़ि कए अपनो रखैत छलाह आ गामोमे बँटैत छलाह । गामक बीचमे पोखरि छल। ओकर महारक चारूकात घरे-घर छल। कनीके फटकी हटि कए मधुबनी जाएबाला सड़क छल । ओही सड़कपर पैरे-पैरे हम बिदा भेल रही । सड़कक दुनूकात हरिअर खेतसभ। जेना-तेना आगू बढ़ल जा रहल छलहुँ।

हमर गाम गगनपुर-मधुबनी टीसनसँ पाँच माइल उत्तर दिशामे अछि। गाम हरल-भरल छल। पहिने गाममे बेसीलोक जीवन खेतीपर आधारित रहैत छल। खेती-बारीसँ नीक उपार्जन भए जाइत छलैक। मुदा जकरा खेत-पथार नहि छलैक तकर हालति बहुत खराब रहैत छलैक। ओसभ मजदूरी करैत छल। किछुगोटे बटाइ करैत छल। किछुगोटे महिस पोषिआ रखैत छल। केओ-केओ जीबिका हेतु परदेश चलि जाइत छल। ओहि समयमे परदेशक माने कोलकाता।

हमर नेनपन गामेमे बितल छल। हमर माता-पिताक आर्थिक स्थित ठीक नहि रहनि । ओ सभ बहुत संघर्षमे जीबैत छलाह ।

जीबिकाक हेतु हमर पिताजी सेहो कोलकाता गेल रहथि। मुदा ओतए रहि नहि सकलाह। वापस होमए पड़लनि। तरह-तरहक घटनासभ घटैत रहल। नेनाक ओ समय हमर मोनमे गरि गेल छल। रहि-रहि कए बितल बातसभ घिरनी जकाँ आँखिक सामनेमे नाचए लगैत छल।

हथिआक झटकमे भूखल-पिआसल, भिजैत-तितैत गामसँ बिदा भए गेल रही। जेना-तेना कोलकता पहुँचल रही। हम सुनने रही जे कोलकातामे कालीमाता सभकेँ शरण दैत छथिन, सभक पेट भरि दैत छथिन। गामक दुर्गापूजाकेँ बीचेमे छोड़ि परिस्थितिवश हम कोलकाता आबि गेल रही। एहूठाम दुर्गापूजा चलिए रहल छल। मुदा बेसी पैघ उत्सवक संग। लोकसभ बहुत नीकसँ सजल-धजल छल। कोलकाता सहर डेग-डेगपर रंग-विरंगक कार्यक्रम चलि रहल छल। मुदा हम तँ एतहु परेसानीएमे रही। बात ई छैक जे अहाँ कतहु चलि जाउ,मुदा जीवनसँ जुड़ल समस्या तँ रहबे करत। भूख लगबे करत,तकर समाधान हेतु प्रयास करहि पड़त। मुदा कोलकातामे तकर अवसर होएबाकक संभावना हेतैक,सएह सोचि हम गामसँ बिदा भेल रही। से छलैहो,मुदा कोलकाताक अपन समस्या छैक। हमरा सन अनभिज्ञ,अनाड़ी लोकक हेतु कोलकाताक जीवन कोनो आसान नहि होमएबाला छलैक, से बुझा रहल छल।

3

हमरा अखनहु ओ दिन मोन पड़ैत रहैत अछि जहिआ हम कोलकातामे पहिल बेर डेग देने रही। दशमीक दिन छल। बहुत रास पुरुष आ महिलासभ विचित्र ध्वनि निकालि माताकेँ बिदा कए रहल छलाह। भसानक हेतु जा रहल माताक प्रतिबिम्बक शोभा देखैत बनैत छल। लोकसभ रहि-रहि कए उद्घोष कए रहल छल-

“दुर्गामाताक जय! दुर्गा माताक जय!”

ओहि भीड़मे अधिकांश लोकसभ बंगाली बजैत रहथि,मुदा किछुगोटे मैथिली सेहो बजैत रहथि। असलमे ओसभ आर केओ नहि प्रवासी मैथिले रहथि। जाधरि भीड़ आगू नहि बढ़ि गेल,हम माताक प्रतिबिम्बकेँ एकटक देखैत रहि गेल रही।

कोलकाताक सहरक कोन-कोनसँ देवीक प्रतिमाकेँ सजा-धजा कए उत्तमसँ सजाओल ट्रकपर राखल गेल छल। संगमे आ पाछू-पाछू सेहो कतेको भक्तलोकनि माताक स्नेहपूर्ण बिदाइमे भाव विभोर भए वंदना गाबि रहल छथि। अबीर-गुलालसँ ओ सभ एक-दोसरकेँ पोति देने छथि। लगैत छल जेना सौंसे कोलकाता सहर गंगाकात दिस बढ़ल जा रहल अछि। एहि तरहेँ हजारो प्रतिमा गंगा कातमे पहुँचि जाइत छथि। हुनकासभकेँ बेराबेरी गंगामे भसाओल जाइत अछि। माताक बिछोहमे कतेको भक्तलोकनि भोकारि पारि कए कानि रहल छथि। माताकेँ अश्रुपूर्ण बिदाइ कए रहल छथि।

गंगामे भसानक हेतु लए जा रहलि दुर्गामाताक प्रतिबिम्बसभ बहुत दुखी लागि रहल छथि। जेना कहि रहल होथि -

“हम तँ आब जा रहल छी। आब साल भरिक बादे फेर तोरासभ लग आबि सकब। ताबे तूँसभ कोना रहबह? कहीं आपसमे झंझटि ने कए लिअह?कखनहु खेत-पथारक लेल, कखनहु राजनीति चमकाबक हेतु, तँ कखनहु दोसरक हिस्सापर अधिकार करबाक हेतु तूँसभ झंझटि करिते रहैत छह। केओ माए अपन संतानसभकेँ एना लड़ैत-झगड़ैत देखि कोना निचैन रहि सकैत अछि? ततबे नहि,तूँसभ अपन बुद्धिक दुरुपयोग कए एक सँ एक विनाशकारी युद्धक सामग्री बना लेने छह,एटम बम बना लेने छह। सौंसे दुनिआ जेना विनाशक कोनटापर ठाढ़ अछि। कखनहु केओ एटम बम फोड़ि देत आ समस्त पृथ्वीक नाश भए जाएत। समस्त जीव-जन्तु देखिते-देखिते मोम जकाँ गलि जाएत। गाछ-बृक्ष,तीमन-तरकारीसभ बरबाद भए जाएत। सहर-सहर जरि कए खाक भए जाएत। अट्टालिकासभक नामो-

निसान नहि रहि जाएत। तूँही कहह जे एनामे हम कोना निश्चिन्त भए जाउ।

हम छी जगदम्बा। तोहरसभक कल्याण हेतु बेकल छी। चाहैत छी जे तूँसभ आपसमे प्रेमभावसँ रहह। ककरो तंग नहि करहक। सभकेँ ओकर उचित अधिकार भेटैक तकर व्यवस्था होइक। मुदा जखन सभटा प्रतिकूले देखाइत अछि तखन चिंता कोना ने होएत?

हमरा तूँसभ भसा देबह। हम गंगामे समाहित भए जाएब। मुदा ताहिसँ की होएत? तूँसभ भने निश्चिन्त भए जेबह,मुदा हम? हम छी सर्वव्यापी। हमर प्रतिबिम्ब रहए,नहि रहए ताहिसँ की फरक पड़त। हमर आस्तित्व यथावत रहत। तूँ सभ ढ़ोल बजा-बजा कए,हमर प्रतिबिम्बकेँ गंगामे विसर्जित कए भने शांत भए जेबह,मुदा ओहिसँ हमर मौलिक स्वरुपमे किछु परिवर्तन नहि होएत।”

हम बड़ीकाल धरि माताक प्रतिबिम्बकेँ देखैत रहि गेलहुँ,मोनमे मचल द्वंदमे ओझराएल रहि गेलहुँ। मुदा जगदंबाक प्रश्नक उत्तर नहि दए सकलहुँ। कनी काल लेल हम अपन ध्यान माताक प्रतिबिम्बसँ फटकी लए जेबाक प्रयास करैत छी। लगैत अछि जेना ओ हमरा जोरसँ झटकि दैत छथि। कहि रहल छथि-

“एना जान छोड़ेलासँ काज चलतह? सभ एक-दोसरपर टारि रहल अछि। जखन केओ आगू बढ़बे नहि करत तँ परिवर्तन केना होएत?केना बाँचत संहारक दुष्चक्रसँ ई संसार?”

“मुदा हम कोन जोगर छी? अहाँ तँ सभकिछु जनैत छी। हमर हालति अहाँसँ कोनो नुकाएल नहि अछि। हम तँ स्वयं एहि अनजान सहरमे पेट भरबाक हेतु बौआ रहल छी।”

“तूँ व्यर्थ परेसान छह। तोरा हाथे बहुत किछु होमएबाला अछि। तूँ बस देखैत रहह।”

“माता! अहाँक रहस्य बूझब हमरा वशमे नहि अछि । हमरा किछु नहि फुराइत अछि जे हम की करू,कोमहर जाउ,ककरा संग करु। एहिठाम हमर अछिए के?”

“फेर ओएह बात? ई संपूर्ण शृष्टि हमर मायाक अधीन अछि। तोरा जखन जे प्रयोजन हेतह,तकर समाधान हेतु हम प्रस्तुत रहबह।”

“जे आज्ञा माता!”

तकर बाद लागल जेना माता बौक भए गेलीह। सभकिछु जेना एकहि क्षणमे विलुप्त भए गेल। जेना एकाएक सभकिछु बदलि गेल। माताक प्रतिबिम्बसभ एक-एक कए गंगामे समाहित भए गेलि। हम अबाक देखैत रहि गेलहुँ।

देखिते-देखिते गंगा प्रतिमासभसँ भरि जाइत छथि। लगपासक पानि घोर बनि जाइत अछि। माताक प्रतिमासभ अंग-भंग भए यत्र-तत्र छितराइत देखाइत छथि । गंगाक हालति एहन भए जाइत अछि जे केओ ओहिमे सँ एक चुरुक पानि लेब पसिंद नहि कए सकैत अछि।

4

कोलकाता पहुँचलाक बाद कैकदिन धरि हम सौंसे सहर बौआइति रहि गेल रही । ने रहबाक ठेकान ने खेबा-पीबाक कोनो जोगार। कतए जाउ,ककरा अपन दुख कहिऔक किछु बुझेबे नहि करए। जेना-तेना जीबैत रहलहुँ। कैक राति तँ भूखले सुति रहलहुँ। एकदिन ओहने परिस्थितिमे कालीमन्दिर पहुँचलहुँ। भेल जे आर किछु नहि तँ माताक दर्शन तँ होएबे करत । माता थिकी सर्वशक्तिशालिनी,सर्वव्यापी,सर्वज्ञ। जरूर रक्षा करतीह। हुनके निहोरा करबनि। साइत किछु रस्ता भेटि जाए। इहो लोभ रहए जे किछु प्रसादो भेटि जाएत । तत्काल भूख मेटा जाएत,मोनमे शांति होएत । मुदा

ओहिठाम निर्दोष छागरसभक बलिप्रदान देखि मोन दुखसँ भरि गेल। बलिप्रदान केनिहारक हाथक तरुआरि रक्तरंजित छल । ओहिसँ छागरसभक गरम-गरम रक्त टपकि रहल छल । ओकर लाल-लाल आँखिसँ जेना ज्वाला निकलि रहल छल। एकटा छागरक गर्दनि कटैत कि दोसर तैयार कए देल जाइत छल। ओकर मालिकसभ ओकरा नहा-सोना कए बलिप्रदानक हेतु उपस्थित कए दैत छलाह। दुर्गा माताक जय!क घोषक संग एकटा आर छागरक गर्दनि कटि जाइत छल । ओकर मालिकसभ छागरक मुरी आ धरकेँ सम्हारि कए प्रसादस्वरुप ग्रहण करबाक हेतु अपन-अपन घर लए जाइत छलाह। एहि तरहें घंटो चलि रहल बलिप्रदानक शृंखलासँ लगपासक जमीन रक्तरंजित भए गेल छल। मुदा तकर ककरो कोनो परबाह नहि छलैक। सभ माताक भक्तिमे लीन छल आ माता एहि क्रूर प्रक्रियाकेँ निःसहाय देखि रहल छलीह । ओहिठामक संपूर्ण वातावरण दुर्गंन्धसँ भरल छल । दर्शकसभकेँ तँ निरंतर चलि रहल बलिप्रदानकेँ देखि-देखि जेना निसाँ लागि गेल छलैक। निर्दोष छागरसभक गर्दनि कटैत आ ओहिसँ खूनक फुचक्का निकलैत देखि हमर हृदय हाहाकार कए उठल -

“हे भगवान! ई की भए रहल अछि? अपन संतानक हत्या देखि माता कतहु प्रसन्न हेतीह? किन्नहु नहि।”

आब की करी? यद्यपि मोन पीड़ासँ भरि गेल छल,तथापि भेल जे जखन आबिए गेल छी तँ माताक दर्शन केनहि चली। ओही प्रयासमे हम आगू बढ़लहुँ कि एकटा पंडा चिकरैत अछि-

“कतए बढ़ल जा रहल छैं?”

हम किछु उत्तर दितिऐक ताहिसँ पहिने दोसर पंडा हमर जेबीमे हाथ धए देलक। जेबीमे टाका छल नहि। ओ एहि बातसँ बहुत कुपित भेल आ हमरा ततेक जोरसँ गरदनिआ देलक जे काली मन्दिरक आगा धराम दए माथे भरे खसलहुँ। एक क्षणक हेतु लागल जेना बेहोस भए

गेल रही। ओतबेमे केओ हमरा हाथ पकड़ि कए उठओलथि। हमर हालति देखि साइत ओ बहुत दुखी भए गेल रहथि।

“बालक! तूँ के छह आ कतए जा रहल छह?”

“हम छी वसंत। मधुबनी जिलाक गगनपुर गाममे रहैत छी। गाममे हमर माए बहुत परेसानीमे छथि। हमरा हुनकर दुख नहि देखल गेल। तेँ एकदिन भूखले पेटे,बिना ककरो कहने गामसँ पड़ा गेलहुँ। संयोगसँ कोलकाताक ट्रेन पकड़ि एहि सहरमे आबि गेलहुँ। शुरुमे तँ हमर मोन बहुत प्रसन्न रहए। सोची जे एतेकटा सहर छैक,किछु-ने-किछु हमरो जोगार भइए जाएत। मुदा आइ कैकदिनसँ एहिना बौआ रहल छी। हारि कए काली मन्दिर अएलहुँ। भेल जे आर नहि किछु तँ कम सँ कम माताक दर्शन तँ होएत। साइत पेटो भरि जाएत। मुदा एहिठाम जे भेल से तँ देखिए रहल छी। हम आब कतए जाएब,की करब से किछु नहि बुझा रहल अछि। अहीं कहू जे हम की करू?

“तोहर पिताक की नाम छनि?”

“बलराम।”

“ओ तँ हमरा जनैत छथि।

“से कोना?”

“हमसभ थोड़ेक दिन कोलकातामे एकहि कोठरीमे रही। दुनूगोटे लगे-पासमे दोकानो करी। मुदा संयोग एहन भेलैक जे ओ किछुए दिनमे वापस गाम घुरि गेलाह। तकर बादो कहिओ-काल गाम जाइ तँ हमरासँ भेंट करए ओ अबस्स आबथि। मुदा एमहर बहुत दिनसँ हुनकर किछु जनतब नहि अछि।”

“अहाँसँ भेंट भेलासँ हमरा बहत उसास भेल अछि। लगैत अछि जे आब हमर प्राण बँचि जाएत।”

तकर बाद हम हुनका संगे-संगे हुनकर डेरा पहुँचलहुँ। ओहिठाम हुनकर एकमात्र संतान अचला रहनि।

“ई छथि वसंत। संयोगसँ कालीमन्दिर लग हिनकासँ भेंट भए गेल। हिनकर पिता हमर संगी रहथि। अपन गाम गगनपुरसँ पहिल बेर कोलकाता आएल छथि।”

गजबक आकर्षण छनि अचलामे। लगैत छल जेना साक्षात दुर्गा उपस्थित भए गेल छथि। हुनकर सौंदर्य देखि हम सभकिछु बिसरि जाइत छी। हम एकटक अचलाकेँ देखैत रहि जाइत छी। ईहो बिसरा जाइत अछि जे लगेमे हुनकर पिता ठाढ़ छथि आ हमरासभसँ संवाद कए रहल छथि। गोर-नार,एकहरा देह,बड़का-बड़का आँखि,चाकर आ तेजस्वी ललाट। हम अचलाकेँ देखैत छी ,ओहो हमरा देखि रहल छथि। लगैक जेना हमरा आ अचलाक बीचमे किछु आर नहि रहि गेल अछि। एकाएक एहन घटना घटत आ हम ओहिमे एना समाहित भए जाएब तकर अनुमान नहि छल। थोड़ेकालक हेतु ओहिठाम मौन पसरि गेल छल। परिस्थितिकेँ बुझैत भुवनकेँ देरी नहि लगलनि। ओ बजैत छथि-

“अचला!”

“जी बाबूजी!”

“ई बहुत थाकल छथि। हिनका जल्दीसँ भगवतीक प्रसाद दहुन। फ्रिजमे सँ निकालि कए किछु आर जलखै सेहो दहुन।”

अचला एकटा थारीमे हमरा लेल टटका बनल माउस आ भात आनि कए राखि देलथि। हम एक बेर हुनका दिस देखैत छलहुँ आ एकबेर थारीमे परसल ओहि प्रसादकेँ। भूखसँ व्याकुल तँ रहबे करी। तथापि बलिप्रदानक जे दृश्य देखि कए आएल रही तकर बाद ई प्रसाद ग्रहण करबाक साहस नहि होअए। मुदा बहुत भूखाएल रही। कैकदिनपर थारीमे परसि कए केओ भोजन अनने छलि। ओना हम निरामिष नहि छी। हमरा घरमे ई सभ चलैत छल। कहिओ माछ,कहिओ डोका कहिओ किछु खाइत रहैत छलहुँ। मुदा आइ

थारीमे राखल प्रसाद खेबाक साहस नहि भए रहल छल। मोन आगू-पाछू कए रहल छल। अंततोगत्वा,भूखक विजय भेल। हमर हाथ मुँह धरि पहुँचल। एक कर प्रसादक संगे भात भितर गेले छल कि मोन ओकिआए लागल। हाँइ-हाँइ पानि पीबए लगलहुँ। धुआनि ढेकार देबए लागल। कतबो रोकबाक प्रयास केलिऐक,नहि रुकल,रद्द होमए लागल। देहक सभटा पानि बाहर भए गेल। अचला दौड़लीह,ओसारापरसँ हुनकर पिता सेहो आबि गेलाह।

"पुदीनाक रस दहुन। जल्दीसँ लाबै। देरी नहि करै। आल्मीरामे दहिना कात राखल छैक।"

एकहि साँसमे ओ बाजि गेलाह आ बजिते रहलाह। अचला पुदीनाक रस बाटीमे लेने उपस्थित छलीह। हमरा किछु पीबाक होस नहि रहए। सामनेमे राखल खाटपर ठामहि टगि गेलहुँ।

5

अखनअचलाक पिता भुवनक बएस पचास वर्ष हेतिन। एकाध वर्ष आगू-पाछू,एहिसँ कम-बेसी नहि। । देखबामे साधारण,पिंडश्याम वर्ण, मध्यम कद-काठी। कोलकातामे कैक बेर छोट-मोट नौकरी भेटलनि,छुटलनि। आखिर अपन काज शुरु केलनि। शुरुमे चाह-पानक दोकान चलबथि। मुदा जखन हमर बाबू गामसँ कोलकाता अएलाह आ कोनो काज नहि भेटि सकलनि तँ भुवन हुनका अपन चाह-पानक दोकान सुंझा देलथि आ अपने लगमे तरकारीक दोकान खोलि लेलथि। एहि तरहेँ दुनूगोटेक गुजर होमए लगलनि। दुनूगोटे एकहि संगे रहए लगलाह। थोड़े दिनक बाद हमर बाबू लगेमे एकटा फराक डेरा किरायापर लए लेलथि। एहि प्रकारेँ दुनूगोटेक समय बीति रहल छल।

भुवन पितमरु छलाह,ककरोसँ झंझटि नहि करैत छलाह । काज सँ काज मतलब रखैत छलाह। व्यापारक हुनर सेहो हुनका अबैत छलनि। सभसँ नीक बात हुनकामे छलनि सहनशीलता आ मधुर व्यवहार। तेँ हुनकर दोकान चलि पड़लनि । बंगालीसभसँ ओकरे भाषामे गप्प करैत छलाह। यदि केओ मैथिल आबि गेलाह तँ हुनकासँ मैथिलीएमे गप्प करैत छलाह। जे जेहन ग्राहक रहैत तकर संगे तहिना व्यवहार करैत अपन काज निकालि लैत छलाह। भुवन अपन काजमे लागल रहलाह आ कालक्रमे कोलकाता सहरमे नीकसँ व्यवस्थित भए गेलाह।

भुवन स्वभावसँ मिलनसार,मृदुभाषी आ उदार छलाह । कोलकाता सहरमे कोनो मैथिलकेँ परेसानी होइतैक तँ ओ यथासंभव मदति करैत छलाह। कतेको गोटेकेँ जीबिका दिअओने छलाह। हुनकर भुवन चुरा दही भंडार सौंसे कोलकाता विख्यात छल। लगपासमे किछु आओर दोकानसभ छल। निश्चित रूपसँ ओ दोकानसभ बहुत चलैत छल,मुदा तकरे बले भुवनक हालतिमे चमत्कारिक परिवर्तन भेलैक कि किछु आओर बात छल,ताहिपर ककरो ध्यान नहि गेलैक। फेर भुवनक व्यक्तिगत व्यवहार ततेक नीक रहैत छलनि जे आनो-अपन भए जाए। देखिते-देखिते कोलकाता सहरमे ओ नीकसँ व्यवस्थित भए गेलथि। सहरमे कैकटा मकान कीनि लेलथि। रहबाक हेतु तँ फराक मकान बनाइए लेलथि।

असलमे भुवन सभ तरहक नंबर दू काजसभमे लिप्त भए गेल छलथि। हुनका धन कमएबाक निसाँ भए गेल रहनि। जे होइक,जेना होइक,पाइ होएबाकक चाही। क्रमशः हुनकर कारोबार आनो-आन सहरमे पसरैत गेल। भुवन आब कोनो मामुली आदमी नहि रहि गेलथि। चुरा-दहीक दोकान तँ देखाबा छलैक। असली कारोबार तँ आर-आर छलैक। मुदा अचला ई सभ की जाने गेलथि? भुवन भोरे

घरसँ निकलैत रहथि आ बहुत राति बितलापर घर वापस आबथि। ई हुनकर नित्यप्रतिक दिनचर्या छल।

ओकर ठीक उल्टा छलाह बलबीर। बात-बातमे झगड़ि जाएब हुनकर स्वभाव रहनि। ग्राहकसभकेँ तरह-तरहक उपदेश देबए लगैत छलाह। यदि केओ उधारी मंगलक तँ तुरंत मना कए दैत छलाह। परिणाम भेल जे थोड़बे दिनमे हुनकर शत्रु भरि गेल। दोकानक हालति बहुत पातर भए गेल। आर तँ आर एकदिन किछु स्थानीय ग्राहकसभ हुनका बाता-बाती भए गेलनि। बात ई भेलैक जे दूटा छौंड़ा साँझमे चाह पीबए हुनकर दोकानपर आएल। दोकानमे दूध घटि गेल रहैक। दूधक जोगार करबामे किछु समय लागि गेलैक। थोड़बे फटकी दोसर दोकानसँ दूध लए जाबे ओ वापस अएलाह,ताबे ओ सभ हिनकर दोकानकेँ तहस-नहस कए चुकल छल। सामानसभ एमहर-ओमहर सड़कपर छिड़िआएल पड़ल छल। हमर बाबूकेँ ई दृश्य देखितहि देहमे आगि लागि गेलनि। ओ ओकरासभकेँ गड़िआबए लगलाह। एहिबातसँ कुपित भए ओ सभ हुनका पिटनाइ शुरु कए देलक। देखिते-देखिते ओहिठाम लोकसभक करमान लागि गेल । लोकसभ जाबे बूझितए,किछु उपाय सोचितए,ताबे तँ ओ अधमरु भए चुकल छलाह। लगपासमे ठाढ़ लोकसभ तमासा देखैत रहि गेल,किछु नहि केलक। संयोगसँ दूटा पुलिस मोटर साइकिलसँ जा रहल छल। ओ सभ हल्ला होइत देखि रुकि गेल। पुलिसकेँ देखितहि दुनू बदमास छौंड़ा इएह-ले ओएह-ले ओहिठामसँ भागल । पुलिससभ हमर बाबूकेँ अस्पताल पहुँचओलक । बहुत मोसकिलसँ हुनकर इलाज कराओल गेल । अस्पतालमे हुनकर मलहम-पट्टी कएल गेल। सुइआ पड़ल। एक्सरे सेहो भेल। संयोगवश हड्डी बाँचि गेल रहनि। साँझ धरि ओ अपन डेरा वापस आबि गेलाह। तकर बाद कान पकड़ि लेलनि - “जे होएत ,आब कोलकातामे नहि रहब। जिअब,मरब,मुदा रहब अपने गाममे।” ठीक

होइतहि ओ गाम घुरि गेलाह । कतबो भुवन रोकलकनि ,ओ नहि मानलाह।

हमर पिता प्राते भेने गाम वापस भए गेलाह। गाम पहुँचि तँ गेलाह,मुदा एके दिनमे फेर ओही हालमे पहुँचि गेलाह। गाममे हमसभ बाट तकैत रही जे बाबू टाका पठेताह। मुदा एहिबेर टाकाक बदलामे ओ स्वयं आबि गेलाह । ऐहिमास जे किछु कमाएल छलाह से कोलकातासँ अएबासँ पूर्ब हिसाब-किताब फरिछएबामे खर्च भए गेलनि। किछु टाका भुवनक बाँकीए रहि गेलनि। बाबू बहुत संकोचमे रहथि। ओ ई बात बुझलखिन।

“तूँ अनेरे चिंतामे पड़ल छह। तत्काल हमरा कोनो दिक्कति नहि अछि। तोरा जहिआ सुविधा होअए तहिआ दए दिअह। अखन तूँ गाम जाह।”

ततबे नहि किछु टाका सेहो देलखिन जाहिसँ टिकटक जोगार केलाह् । किछु टाका बाँचल रहि गेल छलनि ताहिसँ एक-दू दिन परिवारक खर्च चलल । तकर बाद..? ओएह संघर्ष..ओहिना गौंवासभक दुष्चक्र शुरु भेल। करथि तँ की करथि? गाममे यदि अपनेकेँ जेबी खाली अछि तँ ओ नरकोसँ आलय भए जाइत अछि। तथापि ओ गामक मोहमे पड़ि वापस भेल छलाह । कोलकातामे परेसानी भेलनि तँ गाम मोन पड़लनि। हमसभ हुनकर आशामे छलहुँ से बिसरा गेलनि। जखन परिवारक स्थिति गंभीर भए गेल,हमसभ अन्न बेगर घोर कष्टमे पड़ि गेलहुँ तँ ओ घड़ारीसँ सटले एककठ्ठा पैत्रिक जमीनकेँ बेचबाक हेतु निवंधन कार्यालय गेलाह । ओतए कैकदिनक बाद भरिपेट रसगुल्ला खेलनि । किछु टाका सेहो भेटलनि। बाँकी टाका गामपर देल जइतनि।

रिक्सापर गाम वापस जाइत काल मोन बहुत दुखी रहनि। बाप-पितामहक देल जमीनकेँ बेचि ओ बहुत शोकमे रहथि। आँखि नोरसँ भरल छलनि। रिक्सापर ककरोसँ गप्प नहि करथि। लगैत छल

जेना लकबा मारि देने होनि । मोनमे तरह-तरहक प्रश्नसभ उठैत छलनि। ओही खेतक उपजासँ हुनकर परिवार जीबैत छल । आब ओहो चलि गेल। काल्हिसँ ओहि खेतपर केओ आओर कोदारि पाड़त,ओ से चुपचाप देखैत रहि जेताह। हुनकर परिवारक मुँहमे जाबी लागल रहत। सभगोटे अन्न बिना सहैत-सहैत मरि जाएत। मुदा उपाय की छल? जखन लोक आइ जिअत तखन ने कल्हुका सोचल जेतैक। इएहसभ सोचैत-सोचैत ओ बहुत परेसान भए गेल छलाह। लगीचेमे बैसल ग्रामीण हुनका टोकथिन,मुदा ओ किछु उत्तर नहि देथि। जेना बहीर भए गेल होथि। अचानक छातीमे बड़ी जोरसँ दर्द उठलनि। जाबे केओ किछु बुझितए ओ रिक्सापरसँ ठामहि खसलाह आ शांत भए गेलाह।

लगेमे बैसल ग्रामीण रिक्सापरसँ कुदलाह । पाछू चलि रहल रिक्सापरसँ सेहो लोकसभ कुदलाह। ओ सभ बाबूकेँ छातीपर हाथ दैत छथि । हिला-डोला कए देखैत छथि । मुदा ओ तँ निःप्राण भए गेल रहथि। हुनका ओही रिक्सापर जेना-तेना कए गाम आनल गेल । संयोगसँ ओहि समय हम स्नान कए आबि रहल छलहुँ। हमरा देखितहि ओ सभ चिचिआइत छथि-

“वसंत! वसंत!”

हमर ध्यान एकाएक रिक्सापर टांगल बाबूक लासपर जाइत अछि। हम हुनकर निःप्राण शरीर देखितहि भोकारि पारि कए कानए लगैत छी। देखिते-देखिते ओतए बहुत रास लोकसभ जमा भए जाइत छथि। बाबूक लास हमर दनानपर पहुँचाओल जाइत अछि। तकर बाद तँ जे दृश्य उपस्थित भेल तकर की वर्णन करू?

जेना-तेना बाबूक श्राद्ध भेल। खेत बिका गेल। बाबूक जान चलि गेलनि। मुदा खेत कीननहार ओकर बाँकी टाका नहि देलाह।

“हम तँ पाइ-पाइ दए देने छलिअनि। तखनहि ओ रजिष्ट्रीक हेतु बिदा भेल रहथि। आब अहाँकेँ आर टाकाक प्रयोजन भए गेल अछि तँ तरह-तरहक झंझटि कए रहल छी।”

एहि तरहेँ ओ अपन बातपर अड़ि गेलाह। हमर माएक दुर्दशाक अंत नहि छल। ऊपरसँ श्राद्ध करबाक भार। कहुना कए एगारहटा ब्राह्मणक ओरिआन कए उतरी तोरलहुँ। समय बितैत गेल। मुदा ई बातसभ हमर मोनमे गड़ल रहि गेल। गामसँ कोलकाता जाइत काल बेर-बेर ई बातसभ मोन पड़ैत छल।

6

रतुका प्रसाद खेलाक बाद मोनमे ततेक घिन भेल जे ओहि डेरामे एकहुँ क्षण रहब संभव नहि लगैत छल। सौंसे घरमे एकटा विचित्र गंध लागि रहल छल। भोर होइतहि हम भुवनक घर छोड़ि बिदा भए गेलहुँ। ओहि समयमे अचला ओतए नहि रहथि। भुवन काजपर चलि गेल रहथि। हम जेना-जेना आगू बढ़ैत छलहुँ तेना-तेना लागए जेना केओ हमर टांगकेँ गछाड़ि रहल छल। बेर-बेर अचला मोन पड़ि रहल छलि।

“कम सँ कम हुनकासँ भेंट कए लेबाक छल। एना चुपचाप निकलि जाएब ठीक नहि भेल।”

ई बात मोनमे घुरिआइत छल। हम आगू बढ़ि रहल छलहुँ आ मोन हमरा पाछू घिचि रहल छल। हमर घरसँ निकलि सड़कपर पहुँचले छलहुँ कि लागल जेना केओ सोर पारि रहल अछि-

“वसंत! वसंत!”

हम पाछू घुमैत छी तँ अचलाकेँ हँसैत देखैत छी।

“केमहर जा रहल छी?”

हम की उत्तर दितिअनि? चुप रहि गेलहुँ।

“एना कोना चलि जाएब? बाबू अहाँक लेल काजक प्रयास कए रहल छथि। एकबेर हुनकासँ भेंट तँ कए लितिअनि। तकरबाद जे उचित बुझाइत से करितहुँ।”

“हमर मोन उचटि गेल अछि। हम एतए नहि रहए चाहैत छी।”

“से किएक?”

“की कहि सकैत छी? हमरा अपनो नहि बुझा रहल अछि जे हमर मोन एना किएक कए रहल अछि। मुदा एतबा तँ निश्चित बुझाइत अछि जे एहिठाम नहि रहि सकब।”

“अच्छा जे करब। मुदा एकबेर बाबूसँ भेंट तँ कए लिअनु।”

हम अचलाक बात टारि नहि सकलहुँ। हुनका संगे हुनकर पितासँ भेंट करए हुनकर दोकानेपर पहुँचि गेलहुँ। ओ भोरे घरसँ जाइत छलाह। भोजनो बाहरे करैत छलाह। दस बजे रातिक बादे डेरा वापस होइत छलाह। एहि बीचमे डेराक सभटा अचलेपर रहैत छलनि। हुनकर मदतिक लेल नौकर-चाकर लागल रहैत छलनि। कालेज जेबाक समयमे ओ घरमे ताला ठोकि दैत छलीह। एकटा कोठरीमे नौकर-चाकरसभ रहैत छल। ओएहसभ मकानक रखबारिओ करैत छल।

अचला संगे हमरा दोकानपर अबैत देखि भुवनक कान ठाढ़ भेलनि। तरह-तरहक प्रश्न भुवनक मोनमे उठि रहल छलनि।

“की बात छैक? भोरे-भोर ई दुनूगोटे किएक आबि रहल अछि?”

“अचला चिंतित बुझा रहल अछि। एकरा किछु परेसानी तँ नहि भेलैक?”

हम भुवनक दोकानपर पहुँचैत छी। भुवन तुरंत एक गिलास गरम-गरम दूध हमरा दुनूगोटेक हाथमे पकड़ा दैत छथि। लगेमे ठाढ़ नौकरकेँ कहैत छथिन-

“जल्दीसँ दू प्लेट गरम-गरम जिलेबी आ सिंघारा लाबै।”

हम दूधसँ भरल गिलासकेँ देखैत रहि जाइत छी। अचला हमरा दिस तकैत रहि जाइत छथि।”

“पीबैत किएक नहि छी?”

“रातिएसँ मोन ओकिआ रहल अछि? किछु खेबाक मोन नहि भए रहल अछि।”

“भूखले रहलासँ तँ आओर खराब होएत।”

हुनकर आग्रह बढ़िते जाइत अछि। हारि कए हम दूध पीबि लैत छी। ताबे जलखैक प्लेट सेहो आबि जाइत अछि। हम आ अचला संगे-संगे जलखै करैत छी। जलखै केलाक बाद हमर मोन आश्वस्त होइत अछि।

“अहाँ किछु दिन एहीठाम रहि जाउ। हम अहाँक हेतु काज ताकि रहल छी। कोलकाता सहरमे जे टिकि जाइत अछि तकर भाग्योदय अबस्स होइत छैक। तेँ हमर आग्रह अछि जे अहाँ अगुताइ नहि। धैर्य राखी। सभकिछु ठीके रहतैक।” -अचला बजलीह।

हम हुनका किछु आश्वासन नहि दए पाबि रहल छी। चुप रहि जाइत छी। ताबे हुनकर केओ जानकार आबि जाइत छनि। ओ हुनका संगे गप्प करए लगैत छथि।

हम अचलाक बात मानि कए घुरि गेलहुँ। हमरा मोनमे रहए जे किछु काज भेटि जाएत तँ अपन फराक व्यवस्था कए लेब। तकर बाद हमरा ककरोसँ की लेना-देना? केओ किछु खाओ,कहुना रहओ।

प्रात भेने अचला हमरा अपन पिता लग लए गेलथि। ओहि समय भुवन अपन काजपर जेबाक हेतु तैयार भए रहल छलाह। हमरासभकेँ देखि ठमकि गेलाह।

“की बात?”

“वसंत अपने ओहिठामक लोक छथि। किछु काज ताकि रहल छथि। गामपर हालति ठीक नहि छनि। हिनका किछु मदति कए दिअनु।”

“आइ दुपहरिआमे हमर कार्यालय पठा दहुन।”

“ठीक छैक।

हम अचलाक संग दुपहिरआमे बतिआइते रही कि भुवनक फोन आबि गेल।

“हम वसंतक हेतु काज ताकि देलिअनि अछि। ओ सोझे गोदाम पहुँचि जाथि।”

अचला तुरंत हमरा लग पहुँचि गेलीह। ओहि समय हम पूजा कए उठले रही। मोन शांत छल। ओ बहुत प्रसन्न रहथि।

“की बात छैक? आइ भोरे भोर... ”

“अहाँकेँ काज भेटि गेल अछि।”

“कोन काज छैक?”

“से सभ तँ ओतए गेलाक बादे पता लागत।”

“कतए जेबाक छैक?”

“कलकत्ता टीसनसँ कनीके फटकी गोदामपर।”

“करवन जेबाक छैक?”

“जलखै कए लिअ। तकर बाद चलि जाएब।

“ठीक छैक।”

हम जलखै करैत छी। चाह पीबैत छी। ताबते भुवनक फेर फोन आबि जाइत छनि। अचला फोन उठबैत छथि।

“वसंत कतए छथि?”

“ओ तँ काजपर जेबाक हेतु तैयार छथि।”

“अखन नहि, दू बजे जाए कहिअहुन।”

“ओहि समय हमहूँ ओतए रहब।”

“ठीक छैक।”

हम जलखै कए चाह पीबि जेबाक प्रतीक्षा कए रहल छलहुँ कि अचला फोनपर भेल बात हमरा कहलनि। हम एहि बातसँ आश्वस्त भेलहुँ। भने कनी समय भेटि गेल। ताबे आराम कए लैत छी। राति भरि जगले रहि गेल रही।

“ताबे हम कनी आराम कए लिअ?”

“किएक ने? हमहूँ तैयार होइत छी।”

“कतहु जेबाक अछि की?”

मुदा अचला बिना किछु बजने ओहिठामसँ चलि गेलीह।

हम दू बजेक लगपासमे गोदामपर पहुँचलहुँ। ताबे भुवन ओहिठामसँ चलि गेल रहथि। मुदा हमरा ओहिठामक अधिकारीसँ भेंट भेल। ओ हमरा काजपर राखि लेलनि। की काज करबाक अछि,कतए करबाक अछि से सभ किछु नहि कहलनि? बस एतबे बजलाह-

“अहाँ कोनो बातक चिंता जुनि करी। अहाँक पगार आइसँ चालू भए गेल। आगू जेना जे करबाक हेतैक से अहाँकेँ जानकारी भए जाएत।”

7

हमर गोदाम आएब-जाएब होइत रहल। एक दिन बितल,दू दिन बितल,तीन दिन बितल मुदा काजक कोनो अता-पता नहि। जखन कखनहु किछु पुछबाक प्रयास करितिऐक तँ ओ टारि दैत । हमरा कतहु केओ नहि देखाइत छल। कोनो काजो होइत नहि देखाइत छल। भोरे जाउ आ साँझ धरि बिना काज केने डेरा वापस आबि जाउ। ककरो कहिऔक,की कहिऔक,किछु बुझेबे नहि करए। ओमहर डेरापर अचलाकेँ तेसरे ताम-झाम बुझाए। ओकर अपने दुनिआ छल। कखनहु किछु तँ कखनहु किछु। हम एहिसभसँ तंग भए गेलहुँ। भेल जे एहि लफड़ासभसँ घसकी। कहीं किछु अनट भए गेल तँ के बँचाओत?

हम एही चिंतासभमे रही। दिनभरि चैन नहि रहि सकलहुँ। कहुना कए दिन बितल। साँझमे अचला हमर ध्यान आकर्षित करबाक बहुत प्रयास केलथि। जखन गप्प-सप्पमे हमर रुचि नहि देखलथि तँ बाहर घुमेबाक प्रस्ताव सेहो केलथि। मुदा हम तँ जेना बौक भए गेल रही।

“बात की छैक? अहाँ एना किएक मौन भए गेल छी?”

“हम एकर उत्तर की दिअ? हम स्वयं सेहो नहि बूझि रहल छी। मुदा ई बात तय बुझा रहल अछि जे हम एहिठाम नहि रहि सकब। हमर मोन व्याकुल लागि रहल अछि। जेना नियति हमरा कतहु आर बजा रहल अछि।”

“की अंट-संट बकि रहल छी? अहाँ गरीब आदमी छी। गामसँ नौकरी करए आएल छी। परिवार अहाँसँ आशा लगओने अछि, बाट ताकि रहल अछि जे अहाँ किछु करब, टाका कमाएब आ ओकरोसभकेँ किछु उसास हेतैक।”

“अहाँ तँ तेना बाजि रहल छी जेना हम स्वयं अपन रस्ता छेकने ठाढ़ छी।”

“अहाँ तँ तमसा गेलहुँ। हमर कहबाक उद्देश्य एतबे छल जे अहाँ किछुदिन हमरासभ लग रहि जाउ । तकर बादो यदि कोनो समाधान नहि होएत तखन जे ठीक बुझाए से करब।”

हम आगू किछु नहि बाजि सकलहुँ । अचला चलि जाइत रहलीह। तकर बाद हम आर परेसान भए गेलहुँ। ओहो तकर बाद नहि अएलीह , भोजनो देबए नहि..। केओ हमरा कोठरीमे भोजन राखि गेल। हम खेबाक प्रयास केलहुँ। कनी-मनी खेबो केलहुँ। तकर बाद सुतबाक हेतु ओछाओन धए लेलहुँ। लाख प्रयास केलहुँ जे सुति रही जाहिसँ काल्हि उठलापर मोन ठीक लागत , मुदा निन्न नहि होअए। राति भरि करोट बदलैत रहि गेलहुँ,अफसोच करैत रहि गेलहुँ जे अचलाक बातपर ध्यान किएक नहि देलिअनि।

“हम यदि ई स्थान छोड़िए देब तँ जाएब कतए?”-बेर-बेर ई प्रश्न मोनमे अबैत रहल । फेर सपनामे भगवतीक कहल बात मोन पड़ल-

“तोरा बहुत किछु करबाक छह?”

आखिर भोर भेल। अन्हरोखे हम ओहिठामसँ बिदा भए गेलहुँ। पता नहि अचला देखलथि कि नहि,मुदा हम हुनका नहि देखलिअनि। सूर्योदय होइत-होइत हम बहुत आगू चलि गेल रही।

अचला सेहो राति भरि जगले रहि गेल रहथि। अपन कोठरीमे छटपट करैत रहथि। हुनकर सभ प्रयास निर्थक साबित भेल रहनि। तथापि,आशा रहनि जे किछु-ने-किछु चमत्कार होएत। मोनमे तरह-तरहक प्रश्न उठैत रहलनि-

“वसंत हमर के अछि?”

“हम ओकरा पाछू किएक पड़ल छी?”

“ओ एहन कठोर किएक अछि?”

“एहिठाम रहि जाइत तँ ओकर भविष्य सुधरि जइतैक।”

“मुदा हम कइए की सकैत छी?”

तरह-तरहक प्रश्न-प्रतिप्रश्न हुनकर मोनमे उठैत रहलनि। होनि जे तनावसँ माथ फाटि जाएत। ओछाओनपर गेलाक बाद तँ स्थिति आर भयाओन भए जाइत छलनि। जखन अन्हरोखे ओ हमरा घरसँ बाहर निकलैत देखलथि तँ छटपटा गेलथि। अपना भरि बहुत प्रयास केलनि जे हाक देथि,हमरा रोकि लेथि। मुदा से सभ किछु नहि भेल। मुँहसँ अबाज नहि निकलि सकलनि। हम आगू बढ़ैत गेलहुँ आ थोड़बे कालमे अदृश्य भए गेलहुँ।

8

हम पैरे-पैरे हावड़ा टीसन पहुँचलहुँ। ओहिठाम दिल्लीक ट्रेन लागल रहैक। बिना टिकटेकेँ ओहिमे अनारक्षित डिब्बामे चढ़ि गेलहुँ। ओहि डिब्बामे पैर रखबाक जगह नहि छल। किछु यात्रीसभ जेना-तेना अपन सीट पहिनहिसँ छेकि लेने रहथि। किछुगोटे अपन बाकसेपर बैसि गेलथि। हमहूँ गर ताकि कए नीचाँमे गमछापर बैसि गेलहुँ। टिकट नहि रहबाक कारणेँ डर तँ होइते छल। मुदा राति भरि ओहि डिब्बामे केओ नहि आएल।

ट्रेनमे एक मिसिआ जगह खाली नहि छल। शायिकाक बीचमे खाली स्थानसभपर सेहो यात्रीसभ बैसल रहए। शौचालय जेबाक मार्ग अवरुद्ध छल। सौंसे लोकसभ भरल छल। बीच-बीचमे ओकरसभक सामान राखल छल। शौचालय पर्यंतमे लोक बैसल छल। ट्रेन आगू बढ़ैत रहल। थोड़े कालक बाद किछु फौजीसभ ओहि डिब्बामे चढ़ल। डिब्बाक गेटपर बैसल किछुलोक गेट नहि खोलि रहल छलैक। एकटा

जबान खिड़की बाटे जेना-तेना ट्रेनमे पैसल । गेटपर बैसल ओहियात्रीसभ दिस बंदूक तानि देलक।

“हटैत छह कि...?”

डरे सभ सहटि गेल। तुरंत गेट खोलल गेल। धरा-धर आठ-दसटा फौजी डिब्बामे पैसि गेल। डिब्बा पहिनेसँ खचाकच भरल छल। फौजीसभक आगमनक बाद जे दुर्दशा भेल तकर वर्णन करब मोसकिल। फौजीसभ लाठी बले अपन जगह बनबए लागल। हम तँ उठि कए ठाढ़ भए गेलहुँ। मुदा जइतहुँ कतए?

ओहनोमे ट्रेन आगू बढ़ैत रहल। थोड़े कालक बाद एकटा यात्री चिचिआ उठल-

“बरबाद भए गेलहुँ। जेबी काटि लेलक। टिकटो नहि बाँचल। आब कोना की करब?”

ओकर कानब सुनि कए दोसर यात्रीसभकेँ ओकरापर सहानुभूति भेलैक। लोकसभ ओकरा किछुटाका देलकैक जाहिसँ ओ कनी आश्वस्त भेल।

ट्रेन किछुए आगू बढ़ल छल कि एकटा यात्री डांर पकड़ने चिचिआ रहल छल – “शौचालयक रस्ता खाली करू। हमरा बहुत जोरसँ लागि गेल अछि।”

केओ टससँ-मस नहि भेल। असलमे कोनो उपायो नहि रहैक। ओ छटपटा रहल छल।

“किछु करैत जाउ, नहि तँ हमरा ठामहि भए जाएत।”

लोकसभ ओकर हालति देखि ठहाका पारि रहल छल,मुदा केओ किछु कए नहि पाबि रहल छल। हारि कए ओ ओतहि चुक्कीमाली भए बैसि गेल। दुर्गंधसँ डिब्बा भरि गेल। सभ अपन-अपन नाक मुनि लेलक। मुदा कतेक काल..?एहि तरहेँ किछु-ने-किछु होइते रहल।

थोड़े कालक बाद टीटीबाबू अएलाह। हुनका देखितहि कैकटा यात्रीसभ घेरि लेलक। किछुगोटे स्लीपर डिब्बामे शायिकाक हेतु हुनका आग्रह कए रहल छल। केओ किछु,केओ किछु कहि रहल छल। टीटीबाबू ओकरासभकेँ कानमे किछु-किछु कहैत छथि। ओसभ धराधर टाका निकालि हुनका थम्हा दैत अछि। यात्रीसभकेँ स्लीपरडिब्बामे खाली शायिकाकक टिकट बना दैत छथि। एहन यात्रीसभ अपन-अपन आरक्षित शायिका दिस बिदा होइत अछि। किछु यात्रीकेँ टिकट रहबे नहि करैक। ओ सभ सेहो टीटीबाबूकेँ गोहार लगबैत अछि। ओ फेर ओकरासभक कानमे किछु कहैत छथि। मुदा ओकरासभक लग यथेष्ट टाका नहि रहैक। टीटीबाबू बड़ीजोरसँ तमसाइत छथि-

“तूँसभ रेलकेँ अपन बपौती बूझि लेने छह। जे से रेलमे बैसि जाएत, टिकटक कोनो चिंता नहि। आगू चेकिंग छैक। जखन जहल जाइत जेबह तखन पता लगतह जे बिना टिकट यात्रा करब केहन होइ छैक।”

“हमसभ गरीब आदमी छी। ओतेक टाका कहाँसँ अनबै? किछु कम कए दिऔक सरकार!”

“तोरासभकेँ रेलमे चढ़बेक नहि चाहैत छलह। रेल सरकारक छैक। जखन चढ़बहक तखन टिकट तँ लेबहि पड़तह।”

“एहि बेर कोनो जोगार कए दिऔक। वापसीमे जरूरसँ टिकट लेबै।”

“बेसी बात नहि बनाबह। जे टिकटक दाम छैक से छैक। कोनो हम थोड़े तय केने छिऐक?”

आखिर ओ यात्रीसभ हुनका कानमे किछु कहैत अछि। ओ सहमतिमे मुरी हिलाबैत छथि। सभसँ टाका ओसूलैत छथि। ककरो टिकट नहि दैत छथि। एकटा यात्री जखन टिकट मांगलकनि तँ चिचिआ उठलाह -“टाका छह नहि आ टिकट चाही पूरा। चुपचाप बैसल रहह।”

तकरबाद टीटीबाबू हमरा दिस मुखापेक्षी भए टिकट मंगैत अछि।

“हमरा टिकट तँ नहि अछि।”

“कतएसँ आबि रहल छह?”

“हावड़ासँ... ।”

“निकालह दू सए... ।”

“हमरा तँ टाका साफे नहि अछि।”

“तखन ट्रेनमे चढ़ि कोना गेलहक?”

हम की उत्तर दितिऐक।

“जल्दी करह। दोसरो यात्रीक टिकट जाँचक छैक।”

“हमरा लग कोनो उपाय नहि छल। ट्रेन लागल रहैक। चढ़ि गेलहुँ। आब अहीं किछु करिऔक।”

हमर बात सुनि कए टीटी बहुत तमसा गेल आ हमरा जबरदस्ती ट्रेनसँ उतारि देलक। आब की करी? किछु फुरेबे नहि करए। ट्रेन प्रयागराज पहुँचि चुकल छल। प्रयागराज टीसनक प्लेटफार्म नंबर छओपर हम ठाढ़ छलहुँ। थोड़बे कालमे ट्रेन खुजि गेल। ओहिठाम किछुगोटे संगम स्नानक हेतु ट्रेनसँ उतरल रहथि। हुनकेसभक संगे जेना-तेना बाहर भए गेलहुँ।

“कतए जेबाक छह?”

“हम तँ कोलकातासँ दिल्ली जाइत रही, मुदा टिकट नहि रहबाक कारणें टीटी हमरा एतहि उतारि देलक। आब फुराइए नहि रहल अछि जे की करू?”

“हमहूँसभ कोलकातेसँ आबि रहल छी। तीर्थयात्रापर निकलल छी। हमरेसभक संगे चलह। हमरासभकेँ किछु मदतिओ भए जाएत आ तोहर किछु समय सेहो कटि जेतह। की पता ओही रस्तामे तोहर भविष्य बनि जाए?

हम स्वीकृतिमे मुड़ी हिला देलिऐक। ओकरासभक संगे-संगे हमहूँ संगम दिस बिदा भेलहुँ।

9

तीर्थयात्रीक सभक संगे हम संगम दिस बिदा भेलहुँ। एकटा यात्रीक मोबाइलमे रामायण फिल्मक गाना बाजि रहल छल-

हे राम तुम्हारी रामायण तबतक होगी संपूर्ण नहीं.....।

हमहूँ ओहि गीतक आनन्द लए रहल छलहुँ। गीत सुनैत-सुनैत हमर आँखिसँ नोर खसि रहल छल। सीतामाताक यातनापूर्ण जीवनक कल्पनासँ रोमांचित भए जाइत छलहुँ। भाग्य एकरे कहैत छैक। एतेक संपन्न परिवारमे बिआहक बादो सीतामाताकेँ कतेक कष्ट भेलनि?नानाप्रकारक अपमान सहए पड़लनि। समाजक तिरस्कारक सामना करए पड़लनि। कहि नहि ओहि समयक सामाजिक परिस्थिति केहन रहैक,मुदा सीतामाताक संगे भेलनि तँ बहुत अन्याय। धन्य कही बाल्मीकि मुनिकेँ जे माताकेँ अपन आश्रममे आश्रय देलनि,हुनकर संतानसभक ससम्मान पालन-पोषण केलनि आ अंततोगत्वा, हुनकासभकेँ अपन पिता धरि पहुँचाबएमे सफल रहलथि। मुदा सीतामाताकेँ न्याय कहाँ भेटि सकलनि? ओ तँ तखनहु ओहिना अपमानित रहि गेलीह। हारि कए पृथ्वीक कोरामे चलि गेलीह। तेँ अपन समाजमे कहल जाइत अछि-

“सीता जन्म बिओगे गेल, दुख छोड़ि सुख कहिओ नहि भेल।”

हम इएहसभ सोचैत रही। ताबे पैरे- पैरे सभगोटे आनन्द भवन लग पहुँचि रहल छल। एहि बीचमे ओकर मोबाइलक गाना कैकबेर बदलि चुकल छलैक। आब कोनो बंगाली गीत बाजि रहल छल जकर अर्थ हम नहि बूझि पाबि रहल छलिऐक। मुदा गीत बहुत भावपूर्ण रहैक। थोड़े कालक बाद मैथिली गीत बजबए लागल। बुझेबे नहि

करए जे ई आदमी आखिर अछि कतए के?तरह-तरहक गीत बजा रहल अछि कि अपने बाजल जा रहल छैक ?

ओकर तरह-तरहक गीतसभ सुनि कए हमहूँ आकर्षित भेलहुँ। ओ सभ आपसमे करवनहु मैथिली तँ करवनहु बंगलीमे गप्प करए लगैत छल । किछु बुझेबे नहि करए जे आखिर ई सभ मैथिल अछि कि बंगाली,कि मिजहर?

आखिर हम पुछलिऐक-

“तूँ के छह आ कतए रहैत छह?”

“हमर नाम अछि बिलट । हम मूलतः मधुबनी जिलाक रहनिहार छी । हमरा संगे चलि रहल सभगोटे सेहो मैथिले छथि। हमसभ कहि नहि कहिआसँ कोलकातामे रहि रहल छी। ककरो पिता तँ ककरो पितामह गाम-घर छोड़ि कए एतए जीविकाक हेतु आएल हेतिन। कालक्रमे सभगोटे एतहि बसि गेल छथि। बंगाली बाजब सिखि लेने छथि जाहिसँ कोलकाताक जिनगीमे रमि सकथि। मुदा रहि-रहि कए अपन माटि-पानि जोर पकड़िते छनि । अखनहि अपन भाषाक प्रति अनुराग छनिहे । तेँ देखने हेबैक जे ई सभ बेसीकाल मैथिली बजबाक प्रयास करैत छथि। ई बात अलग जे मैथिली बजिते-बजिते बंगाली धए लैत छथि। माहौलक प्रभाव तँ भेनहि छैक ने।”

“ई सभ कोलकातामे की करैत छथि? केमहर रहैत छथि।”

“ई सभ भुवन बाबूक कृपासँ कोलकातामे टिकल छथि नहि तँ कहिआ ने उजड़ि गेल रहितथि।”

“से की?”

“पहिले भेंटमे की-की कहू?”

“जे कहि सकह से कहैत चलह। करबेक की छह? रस्ताँ कटिए रहल अछि।”

“सही कहलहुँ। कोलकातामे भुवन बाबू एकरासभकेँ काज धरा देलनि। किछुकेँ तँ अपने दोकानसभमे किछुकेँ अपन जान-पहिचानक ओहिठाम। मुदा...”

“मुदा की?”

“एकबेर ओ बेस मोसकिलमे पड़ि गेलाह। से की?”

“एकटा मैथिल नवयुवक बंगाली छौंड़ीकेँ लए गाम चलि गेलैक। तकर बाद तँ बहुत झंझटि भेल। भुवन बाबूक नाम सेहो केसमे दए देने रहनि। बहुत मोसकिलसँ मामिला सम्हरलैक।”

“केना की भेलैक?”

“न्यायालयमे ओ छौंड़ी -छौंड़ा एक भए गेलैक। मिआ बीबी राजी तँ कि करिहैं काजी।”

“सही कहलह...। तूँ अखन कतए काज करैत छह?”

“भुवन बाबूक चुरा-दहीक दोकानपर।”

“कोलकातामे चुरा-दहीक दोकान चलैत छैक?”

“बहुत चलैत छैक। कतए-कतएसँ लोकसभ एहिठाम चुरा-दही खेबाक हेतु अबैत अछि।”

“से कोना?”

“एहि दोकानक कतरनी चुरा आ दही बहुत प्रसिद्ध अछि। दही तँ हाथसँ छुटिते नहि अछि। ऊपरसँ शुद्ध खोआक पेरा। मुँहमे देबैक कि गलि जाइत अछि। कहि नहि ओ पेरा कोना बनाओल जाइत अछि?”

“तखन तूँ दोकान छोड़ि कए हिनकासभक संगे कोना आबि सकलहक?”

“अचलाक बात हुनकर पिताकेँ मानए पड़लनि।”

“से की?”

“हुनकर कैकटा परिचितसभ एहि तीर्थयात्रामे सामिल छनि। हमरा दुनूगोटेक गप्प चलिए रहल छल कि ताबतेमे ओहि झुंडक मुखिआ बिलटपर चिकरलैक-

“रे! तोरा कनीको होस नहि छौक? बुढ़िआ एतेक पछुआ गेलैक आ तोरा पतो नहि लगलौक?”

ओ पाछू तकैत अछि। बुढ़िआ तँ सड़कक कातमे बैसि गेल छलि। आखिर ओ चिचिआएल -

“ठाढ़ होइ जाउ। बूढ़ी कोनो परेसानीमे बुझाइत छथि।”

ओकर अबाज सुनि कए सभ ठाढ़ भए गेल। ओ सभ बुढ़िआकेँ इसारासँ आगू बढ़बाक हेतु प्रेरित करैक,मुदा ओ ठामहि बैसले रहि गेलि। ओकरा चलले नहि होइक। ठेहुनमे दर्द कए रहल छलैक। आखिर बुढ़िआ लग ओ सभ वापस जाइत अछि। ओ सभ थोड़ेकाल ओतहि सुस्ताएल। चाह पीलक। किछुगोटेक इच्छा रहैक जे आनन्द भवन देखी। मुदा ओ खुजल नहि रहैक।

“पहिने संगम स्नान कए लैत जाइ। तकर बाद सहर घुमल जेतैक।”

“ठीके कहि रहल छहक।”

सभगोटे संगम दिस बिदा भेल। हमहूँ ओकरासभक संगे-संगे चलि रहल छलहुँ। थोड़ेकालक बाद हमसभ संगम क्षेत्र पहुँचलहुँ। ओहिठाम जबरदस्त ढलान छलैक। हमसभ ओहिपर आगू बढ़ि रहल छलहुँ। पाछूसँ एकटा ट्रैक्टर आबि रहल छल। सामनेसँ हमसभ एकाएक ट्रैक्टरक सामने आबि गेलहुँ। रच्छ भेल जे ट्रैक्टर एकाएक ब्रेक लए लेलक, नहि तँ एकाधगोटे तँ निश्चय पिचा जाइत।

हमसभ ढलानसँ नीचाँ उतरैत छी। दहिना कात पड़ल हनुमान मंदिरमे घंटीक मधुरध्वनि सुना रहल अछि। भक्तलोकनि हनुमान

चालीसाक सस्वर पाठ कए रहल छथि। बीच-बीचमे “हनुमानजीक जय!”क नारा सेहो लगा रहल छल। संगम क्षेत्र खाली पड़ल छल। किछु तीर्थयात्रीसभ आगू-पाछू देखाइत छलाह। काते-काते खाली डिब्बासभ बिका रहल छल ,जाहिमे लोकसभ गंगाजल भरि सकैत छलाह। हमसभ आगू बढ़ैत गेलहुँ। पंडासभक हल्ला सुना रहल छल। सभ अपना दिस आकर्षित करबाक प्रयास कए रहल छल। नाविकसभ सेहो अपन-अपन ग्राहककेँ पटेबाक हेतु व्याकुल छल। आखिर हमरा संगे चलि रहल तीर्थयात्रीसभ एकटा नाओ ठीक केलनि। ओहिपर किछुगोटे पहिनहिसँ सबार रहथि। हमहूँसभ ओहिपर जा कए बैसि गेलहुँ।

नाओ आगू बढ़ल।

10

नाओपरसँ संगमक चारूदिसक विहंगम दृश्य देखा रहल छल। गांगाक पानि आ जमुनाक पानिक अंतर साफे बुझा रहल छल। संगमस्थल लग विशेष पूल बनाओल गेल छल जाहिसँ तीर्थयात्रीलोकनि सुरक्षित संगममे डूब दए सकथि। चारूकात नाविकसभ अपन-अपन यात्रीसभकेँ घेरने रहैत छल जाहिसँ कोनो दुर्घटना नहि होअए। ओहीठाम पंडासब सेहो अपन कबाइत करैत रहैत छल। एतेक दान दिऔक। फल-फूलक फराकसँ खर्चा गछिऔक। साल भरिक ब्राह्मण भोजनक एबजमे टाका गछि लिऔक। संगमे नहि किछु अनने छी तँ कोनो बात नहि। उधारी सेहो चलतैक। पंडाजी अहाँक गाम पहुँचि जेताह। ओतहु हिसाब-किताब फरिछा लेताह। मुदा तीर्थमे पुण्य लुटबासँ बाम नहि जाउ। एहन मौका कहि नहि फेर कहिआ भेटत?

संगमक ऊपर परबासभ उड़ि रहल छल। तीर्थयात्रीलोकनि द्वारा नदीमे फेकल गेल अन्नसभकेँ खेबाक हेतु तत्पर छल। सामने अक्षयवटक गाछ देखा रहल अछि। एकर महिमा अपरंपार अछि। कहल जाइत अछि जे एहिसँ कुदि कए हजारोलोक नदीमे डुबि कए मरि जाइत छलाह जाहिसँ हुनका सद्यः मुक्ति भेटितनि। वाह रे लोकसभ! कहाँ दनि ओकरासभकेँ देखादेखी वानरसभ सेहो ओहि गाछपरसँ कुदि-कुदि अपन प्राणक त्याग कए दैत छल। ककरा मुक्ति भेटलैक आ ककरा स्वर्गसे तँ केओ नहि जनलक,मुदा ओ स्थान मनुक्ख आ वानरक हड्डीसँ भरल रहैत छलैक।

हमरासभक नाओपर लोक भरल छल। लोकसभ बेराबेरी स्नान करितए,जेना-तेना अपन वस्त्र बदलितए,दान दक्षिणा करितए,चानन-ठोप लगबितए आ तकरबाद आश्वस्त भए नाओक कोनटापर बैसि जाइत। एहि तरहेँ बेराबेरी लोकसभ संगमस्नानक पुण्य लुटि रहल छल आ पंडासभ ओकरासभ धन लुटबामे मस्त छल। एतबहिमे नदीमे बड़ीजोरक हिलकोर उठलैक। नाओ ऊपर नीचाँ करए लगलैक। लगपासमे चलि रहल नाओसभ संतुलन सेहो गड़बड़ा रहल छलैक। नाविकसभ सतर्क भेल। यात्रीसभ सेहो नाओपर बैसबाक उपक्रम करए लगलाह। चारूकात धरफरीक माहौल छल। नाविक नाओकेँ आगू कए संतुलित करबाक प्रयास केलक। एकाएक हुनका स्नान कए रहल यात्रीसभपर गेलनि। ओ सभ तँ छुटि रहल छथि। आब की होएत? ओ नाओकेँ वापस करबाक प्रयास करैत अछि। ताबतेमे लगलैक जेना चारूकात अन्हड़ उठि गेलैक। नाओक संतुलन साफे गड़बड़ा गेलैक। ओहिमे पानि भरि रहल छल। लगपासक कैकटा नाओ पहिनहि डुबि चुकल छल। ईहो नाओ आब डुबहिबाला छल। नाविक यात्रीसभकेँ सावधान केलक। जान बँचबए हेतु यात्रीसभ नदीमे कुदि गेल। किछुगोटे हेलबाक प्रयास सेहो केलक। मुदा थोड़बे कालमे के कतए गेल तकर कोनो हिसाब नहि रहल।

नाओकेँ डुबैत देखि चारूकातसँ बचाओदलक लोकसभ सक्रिय भेल। मुदा मौसम ततेक खराब भए गेल छल जे ओसभ किछु नहि कए पाबि रहल छल। हमरा लागल जेना दसहाथ पानिक तरमे केओ भरिपाँज पकड़ि कए घिचने जा रहल अछि। मुँह लग हाथ राखि देने अछि जाहिसँ पानि भितर नहि जाइ। हमरा कनी-मनी हेलब अबैत छल। अपना भरि हाथ-पैर डोला रहल छलहुँ। ओ व्यक्ति हमरा सदति धेने रहल। जेना-तेना हम सए हाथ फटकी गांगाक कातमे पहुँचि सकलहुँ । देहमे कोनो वस्त्र नहि छल । सामनेसँ एकगोटे अपन अंगपोछा फेकलक। ओहि अंगपोछासँ देह झाँपि लैत छी । माथमे चक्कर दए रहल छल। चारूकात हाहाकार मचि रहल छल। पंडासभ भागि गेल छल। दोकानसभ भम्ह पड़ि रहल छल। हम आश्चर्यचकित रही जे एहन हालतिमे केना बँचि गेलहुँ।

थोड़ेकालक बाद ध्यान आएल तँ देखैत छी बिलट सामने हाकरोस कए रहल अछि।

“तूँ कतए रही?”

“हम तँ एतहि छुटि गेल रही। नाओ आगू बढ़ि गेलैक। हम चिचिआइत रहि गेलहुँ। केओ ध्यान नहि देलक।”

“तोरा जिअब लिखल रहौक। आर लोकसभ?”

“ककरो कोनो पता नहि अछि।”

11

स्थानीय प्रशासनक लोकसभ दिन-राति एक कए नदीमे डुबल लोकसभकेँ छानि- छानि बाहर करओलक। तखनहु कहि नहि कतेक आदमी डुबले रहि गेल। एकपाँतिसँ लासक पथार लागि गेल।

“ओ सभ पुण्यात्मा रहथि। हुनकासभकेँ सद्यः मुक्ति भेलनि। एहन भाग्य बिरलेक होइत छैक।”-पंडासभकेँ बजैत सुनिऐक। भाग्य

भेलनि कि दुर्भाग्य से के कहत? मुदा जान तँ चलिए गेलनि। ईश्वरक देल एहन अद्भुत जीवनक आकस्मिक आ दुखद अंत भए गेल। ओहिमे स्त्रीगण आ बच्चासभ बेसी रहथि। मुदा ककरो दोष कहल जाए? केओ थोड़े सोचने छल जे एना हेतैक। एहिठाम तँ नित्यप्रति हजारो लोक अबिते रहैत अछि। संगाम स्नान अवाध गतिसँ चलिते रहैत अछि। मुदा आइ ई दुर्घटना होएबाकक रहैक,से भेलैक। ओना मौसम पहिनेसँ गड़बड़ रहैक। मेघ लागल रहैक। हबो बहैत रहैक। मुदा ई सभ तँ होइते रहैत छैक। ताहि लेल संगमस्नान थोड़े रोकि देल जाएत? बातो सही छैक। एहिठाम तँ लोक मुक्तिक कामनासँ अबिते अछि। जीवन-मरणक चक्रक बीचमे संगम स्नान आ एहिठामक तरह-तरहक धार्मिक अनुष्ठानसभ तँ चलिते रहल अछि। एहि प्रकारक धार्मिक भाव अनंतकालसँ लोकमे विद्यमान रहल अछि आ रहबे करत।

एहि घटनाक समाचार कोलकाता धरि पहुँचल। भुवन अपन घरक ओसारापर चाह पीबि रहल छलाह कि अखबार खसल। भोरमे चाह आ अखबारक उत्सुकता रहिते अछि। अखबारक पन्ना खोलितहि प्रयागमे संगमपर घटल दुर्घटनाक समाचार प्रमुखतासँ छपल छल। समाचार पढ़ि ओ परेसान भए गेलथि। ओ अचलाकेँ हाक दैत छथि-

“अचला! अचला!”

मुदा किछु जबाब नहि भेटैत छनि। अचला ओहि समय दूध आनए नीचाँ चलि गेल रहथि। अचला दूध लए घरक सीढ़ीपर चढ़िए रहल छलि कि हुनकर अबाज सुनलकनि।

“आबि गेलहुँ।”

अचला जल्दीसँ घरमे प्रवेश करैत छथि। हुनका देखितहि पुछैत छनि-

“की भेलैक?”

“जुलुम भए गेलैक।”

“से की?”

अखबार देखही ने।

से कहि ओ अखबारक पन्ना अचला दिस बढ़ा दैत छथि। प्रयागराजमे संगममे घटल दुर्घटनाक दुखद समाचार सुनि ओ व्याकुल भए जाइत छथि। कोलकातासँ तीर्थयात्रापर निकलल हुनकर परिचित लोकसभक ई हाल भए जेतनि तकर के अनुमान लगा सकैत छल?ओ कैकबेर अखबार उल्टा-पुल्टा कए देखैत छथि। मुदा ओहिमे बिलटक बारेमे कोनो जानकारी नहि छल। आर यात्रीसभक परिवारक लोकसभकेँ एहि दुर्घटनाक जनतब भए गेल रहैक। ओ सभ बेराबेरी भुवनकेँ फोन करैत छलनि। किछुगोटे प्रयागराजक हेतु बिदा भए गेल छल। किछुगोटे टिकटक ओरिआनमे लागल छल।

“अखन ओहिठाम बहुत परेसानी चलि रहल अछि। भए सकैत अछि जे साँझ धरि किछु आओर समाचार आबए। अपना भरि भुवन ओकरासभकेँ बुझेबाक प्रयास केलनि। आइ भुवन चुरा-दहीक दोकान नहि खुजल। हुनकर आनो कारबारसभ बंदे जकाँ रहल।

12

संगम तीरपर बहुत भयाओन दृश्य छल। कतेको लाससँ ओ स्थान पाटल छल । लग-पासमे ठाढ़ हुनकर सभक संबंधीलोकनि चिकरि-भोकरि रहल छलाह,छाती पिटि रहल छलाह । तरह-तरहसँ अपन दुखक अभिव्यक्ति कए रहल छलाह। हम आ बिलट बड़ीकाल धरि ओहिठाम अबाक ठाढ़ रहि गेलहुँ । बिलट लाससभमे अपन परिचित लोककेँ तकाबक प्रयास करैत रहल । मुदा केओ नहि भेटलैक। हम दुनूगोटे भूखल-पिआसल छटपटा रहल छलहुँ। मौसम अखनहु ठीक नहि छलैक। हमसभ ओहिठाम कतेक काल रहितहुँ?

आखिर ओहिठामसँ दुनूगोटे बिदा भेलहुँ। संगमपर बनल पुलपर चढ़ि आगू बढ़ैत रहलहुँ। चलैत-चलैत आब पुलो समाप्त भए रहल छल। आब केमहर? मोनमे ई सबाल उठल। कोनो निश्चित गंतव्य तँ छल नहि। तखन चलिते रहब उचित। मुदा तकरो तँ कोनो दिशा होएबाक चाही ने?

बड़ीकाल धरि अछता-पछता कए पुलसँ खहरि गेलहुँ। ओहिठाम ढलानसँ नीचाँ उतरलहुँ। बामाकात झूसी दिस जेबाक रस्ता छलैक। लग-पासमे धर्मशालासभ छलैक। मुदा कतहु जेबाक मोन नहि होअए। मोनकेँ एकांत चाही। भोजनो चाही। मुदा समाधान? किछु फुरा नहि रहल छल। हम आ बिलट बढ़ैत गेलहुँ। तीन-चारि माइल पैरे चललाक बाद एकटा छोट-छीन मकान देखाएल। मकान एकदम खाली छल। ओहिमे एकटा खाट,किछु कुर्सी,किछु थारी,लोटा,बाटी सेहो भनसा घरमे राखल छल। हमरासभकेँ ओहि घरकेँ देखि बहुत उसास भेल। हमसभ घरमे प्रवेश करैत छी। पाछूदिस चापाकल रहैक। ओहिमेसँ भरि डोल पानि भरैत अछि। दुनूगोटे भरि छाक पानि पीबैत छी। भूख जोर मारि रहल छल। बिलट सेहो भूख सँ बेकल छल।

मौका देखि कए हम दुनूगोटे स्नानो कए लेलहुँ। आब किछु जलखै तँ चाही। घरमे चारूदिस ताकए लगलहुँ। भनसाघरमे एकटा बाकस देखाएल। ओकरा खोलैत छी। बाकसमे झोरामे मिहिका चूरा राखल छल। एकटा दोसर झोरामे गुड़ सेहो देखाएल। हमसभ अखरे चुरा-गुंड़ फाकए लगैत छी। लागल जेना अमृत खा रहल छी। सही कहल जाइत अछि जे स्वाद भूखेमे होइत अछि। यदि भूख लागल अछि तखन केहनो भोजन स्वादिष्ट बुझाइत छैक। यदि भूख नहि अछि तखन नीकसँ-नीक भोजन बेकार लगैत रहैत अछि। हमसभ यथासाध्य चूरा-गुड़ फँकलहुँ,पानि पीलहुँ आ पटिआ ओछा सुति रहलहुँ।

हम निभेर सुतल छलहूँ। एकाएक बिलट बहुत तेझ उकासी केलक। ओहिसँ हमर निन्न टुटि गेल। दूपहर राति छल। चारूकात अन्हार गुज-गुज। बहुत डर लागि रहल छल। बिलट बाहर ओसारापर ठाढ़ छल। हम ओकरा देखि नहि पाबि रहल छी। अखनहि तँ ओ उकासी करैत सुनाएल छल। ई कतए चलि गेल?-हम मोने-मोन सोचैत छी। ओकरा तकैत हम बाहर ओसारा दिस बढ़ैत छी। बिलटकेँ चुपचाप ठाढ़ देखैत छी। हम ओकरा टोकैत छी, किछु-किछु पुछैत छी। मुदा ओ किछु नहि बजैत अछि , ठामहि रहि जाइत अछि। ओकर ई दशा देखि डरसँ रोइआ ठाढ़ भए जाइत अछि। हम ओकरा दिस बेर-बेर मुखापेक्षी होइत छी। ओहो किछु बाजबाक प्रयास करैत अछि। मुदा बाजल नहि होइत छैक। हम बहुत चिंतिति भए जाइत छी। बुझेबे नहि करए जे एकरा की भए गेलैक? एना बौक केना भए गेल?

जखन बहुत बेर बिलट!बिलट! चिचिएलिऐक तँ ओ ऊपर दिस इसारा करैत अछि। हमरा तैओ किछु बुझेबे नहि करए। “एतेक जल्दी एकरा की भए गेलैक? कहीं संगमबाला घटनाक कुप्रभाव तँ नहि छैक?”

ताबतेमे ओ चार दिस इसरा केलक। हम ऊपर दिस देखैत छी। चारक कोरोमे एकटा बेस पैघ विषधर लपटाएल देखाएल। ओकरा देखिते हमरो सीटीपीटी गुम पड़ि गेल। आब की करी? किछु बाजबाक प्रयास केलहुँ तँ बिलट इसारासँ रोकलक। विषधर बड़ीकाल धरि ओतहि छल। अन्हारोमे चमकि रहल छलैक। ओकरा देखि कए बिलटकेँ चकबिदोर लागि गेल रहैक। बिलट बहुत डरा गेल छल। हमरो हालति कोनो बहुत नीक नहि छल। तथापि, अपना भरि संयत रहलहुँ। हमसभ आब की करी?बाहर मौसम खराब छल। पानि झिहिर-झिहिर बरसि रहल छल। हबा से जोरसँ बहि रहल छल। दूर-दूर धरि कतहु केओ नहि देखा रहल छल। कोनो रस्ता नहि बुझा रहल छल। हमसभ

हनुमानजीकेँ स्मरण करैत ठामहि रहि गेलहुँ। औ बाबू! तकर बाद तँ चमत्कार भए गेल। ओ विषधर देखैते-देखैते कतहु सहटि गेल। हम दुनूगोटे बेर-बेर चार दिस देखैत छी। विषधर कतहु नहि देखाइत अछि। एतबहिमे परिचारक पहुँचल।

“अहाँसभ के छी? एहिठाम कोना पहुँचलहु?” -परिचारक बाजल।

बिलट किछु नहि बाजल।

“अपनेसभ बहुत परेसान लागि रहल छी। बात की छैक?”

“हम दुनूगोटे संगम स्नान करए आएल रही। हमरा संगे किछु आओर गोटे रहथि। मुदा संगममे दुर्घटनाक सिकार भए गेलथि। तकर बाद हमसभ परेसानीमे एमहर-ओमहर बौआइत रहलहुँ। चलैत-चलैत एहिठाम पहुँचलहुँ। हमरासभकेँ एहि स्थानक बारेमे कोनो जानकारी नहि छल। बौआइत-ढहनाइत हमसभ एतए पहुँचि गेलहुँ। यदि हमरासभकेँ किछु गलती भेल तँ माफ करू।”

“गलतीक कोनो बात नहि छैक। ई तँ आश्रम छैक। एहिठाम सभक स्वागत होइत अछि। अहाँसभ कथुक चिंता नहि करू। हमरा संगे चलू।”

हम आ बिलट परिचारकक संगे बिदा भेलहुँ। आश्रमक रचना गजब छल। बाहरसँ देखलापर किछु विशेष नहि बुझाइत। सड़कसँ गुजरैत एकटा द्वारि देखाइत। बाहरसँ किछु आओर नहि देखाइत। ओहि द्वारिसँ जौँ जौँ भितर जाइत अछि नव-नव रस्ता निकलैत चलि जाइत अछि। यदि सही रस्ता नहि बुझल अछि तखन जिलेबी जकाँ घुमिते रहि सकैत छी। यदि गलत रस्तापर चलि गेलहुँ तँ वापस होएबामे घंटो लागि जाइत। कैकबेर वृत्ताकार सड़कपर घुमैत रहू। तखन जा कए निकलबाक कोनो जोगार भेटैत। मुख्यद्वारिसँ आबि रहल गाड़ीकेँ आश्रमक रस्तापर जेबाक हेतु निसान बनल छैक। बस

ओकरा धेने चलैत रहू। द्वारिसभकेँ पार करैत रहू। बामा-दहिना नहि जाउ। तखन सोझे आश्रम लग पहुँचि जाएब। ओहिठामक बनावट तेहन अछि जे लागत जेना पोखरिमे ठाढ़ छी। पानि कतहु नहि देखाएत मुदा सभकिछु जेना पानिमे लटकि रहल अछि। एकटा आभासी दुनिआक अनुभव होइत। मुदा यदि अहाँ तय रस्तापर चलैत रहि जाउ तखन कोनो परेसानी नहि होएत।

ओहिठामक दृश्य बहुत मनोरम छल। चारूकात तरह-तरहक फल-फूलसँ सुसज्जित छल। ओहि मनोहारी दृश्यकेँ देखि हम मंत्रमुग्ध रही। मुदा बिलट परेसान बुझाइत छल। ओकरा संगमक दुर्घटना बेर-बेर मोन पड़ि रहल छलैक। ओकरा संगे आएल तीर्थयात्रीसभ संगममे कतए विलुप्त भए गेलैक,केओ बँचबो केलैक कि सभ डुबि गेल ,ताहि बातसभक चिंता लागल रहैत छलैक। बातो उचित छलैक। हमरा तँ ओ सभ संयोगसँ टीसनपर भेंटि गेल रहए। मुदा बिलटक तँ ओ सभ पुरान परिचित लोक छलैक। मुदा ओ कइए की सकैत छल?

ओसारापर हमरासभकेँ बैसा देल गेल आ परिचारक भितर चलि गेल। ओतए कतहु केओ नहि देखाइत छल। हमसभ चुपचाप बैसल रहलहुँ। प्रतीक्षा करैत रहि गेलहुँ।

"देखाचाही आगू की होइत अछि?"-मोने-मोन सोचैत रहि गेलहुँ।

13

"वसंत!"

"की हाल-चाल?"

मोबाइल फोनमे अपन नाम सुनि आश्चर्यमे पड़ि गेलहुँ।

"अहाँ के छी? हमर नाम कोना पता लागल?"

“तोरा बारेमे हमरा बहुत किछु पता चलि गेल अछि। तोरा संगे बिलटके सेहो नीकसँ जानि गेल छी। मुदा ई एतेक परेसान किएक अछि?”

“कोना ने परेसान रहत? एकर संगीसभ संगममे विलुप्त भए गेलैक। ने एकरा संगमे किछु छैक,ने हमरा किछु अछि। हमसभ भूखल-प्यासल एहिठाम धरि पहुँचि गेल रही। एकांत पाबि हमसभ कनी निचैन भेल रही। किछु भोजनो भेटि गेल रहए। हमसभ आगू किछु सोचितहुँ ताहिसँ पहिने कहि नहि कहाँसँ ओ ओ साँप प्रकट भए गेल। तखनसँ हमसभ डराएल छी। ओ तँ परिचारिक आबि गेल जे कनी उसास भेल।

“आब तोरासभकेँ परेसान रहबाक काज नहि अछि।”

“मुदा अहाँ छी के? एना गुप्तरुपसँ किएक छी?सामने किएक नहि अबैत छी?”

“ई स्थान एकटा संतक छलनि। ओ आब एहि दुनिआमे नहि छथि। मृत्युसँ पूर्व ओ एहि स्थानकेँ मानव कल्याण हेतु दए गेलथि। हमरासभकेँ हुनकर संकल्पकेँ साकार करबाक अछि।वर्तमानमे समाजक हाल बेहाल भेल अछि। ओकरा सही करबाक अछि।”

“समाजकेँ की भेलैक अछि? केहन बढ़िआँ तँ चलि रहल अछि।”

“इएह तँ गड़बड़ी अछि। देहमे बिमारी रहैत अछि तँ ओकर लोक इलाज करबा लैत अछि। मुदा जखन पते नहि चलतैक जे बिमार छी आ भितरे-भितर फोकला भए जाएत तँ बचाओ की हेतैक? ओएह हाल हमरासभक अछि।”

“बातकेँ जिलेबी जकाँ घुमाउ नहि। हमरा ओतेक माथा नहि अछि। अहाँ की कहए चाहैत छी से फरिछा कए कहू।”

“ई दुनिआ आश्चर्यसँ भरल अछि। कोनो वस्तुक अंते नहि अछि। तखन घमंड कथीक? मुदा मनुक्खकेँ किछु आओर होइक कि नहि,घमंड सभसँ पहिने भए जाइत छैक। इएह प्रभुक माया छनि। घमंडेक कारण मानवताक कैकबेर बहुत ह्रास होइत अछि,बहुत अनट काज लोकसभ कए लैत अछि। काम,क्रोध,लोभ ई तीनू नरकक द्वारि अछि। मनुक्ख एहीसभमे ओझराएल रहि जाइत अछि। सौंसे दुनिआमे लोकसभ तरह-तरहक पूजा-पाठ करिते अछि। तखनहु एतेक अनाचार,अन्याय किएक अछि? तकर मूल कारण अछि जे लोक धर्मक मूल तत्वकेँ नहु बूझि पबैत अछि। व्यर्थक आडंवरमे लागल रहैत अछि। टोप-टहंकारमे समय बरबाद करैत रहैत अछि। जीवनमे हम जतेक छोट बनि कए रही,जतेक देखाबा कम करी,जतेक दोसरसँ अपेक्षा नहि राखी ततेक सुखी आ संतुष्ट रहि सकैत छी। संसारमे शांति होअए,सभ सुखपूर्वक जीबए एहि लेल जरूरी अछि मानवमात्रमे मानवताक विकास। मनुक्ख सही मानेमे मनुक्ख बनि सकए से जरूरी अछि। हमसभ एही प्रयासमे लागल छी।

प्रयागराजमे माघमेलामे सभसाल हजारो संत-महात्मा उपस्थित रहैत छथि। तरह-तरहक उपदेश दैत छथि। लोकसभ हुनकासभकेँ सुनितो छथि। तथापि समाजमे एतेक बैमानी, एतेक अन्याय किएक अछि? किएक लोक एतेक धर्म-कर्म करितहुँ व्यवहारमे घोर स्वार्थी बनल रहि जाइत अछि? किएक छोट-छोट बात लेल सहोदरो भाइमे विवाद बढ़िते जा रहल अछि। परिवारमे बूढ़क स्थिति दुखद भेल जा रहल अछि। चारूकात हिंसा बढ़ि रहल अछि। लोक कोनो तरहेँ अकूत धन जमा कए लेबए चाहैत अछि। मुदा ई नहि बूझि पाबि रहल अछि जे एहि धनसँ होएत की? धनोक शोभा नीके लोकमे रहैत अछि। ओएह ओकर सदुपयोग कए सकैत छथि। एहिसभ बातकेँ ध्यानमे रखैत आश्रमक स्थापना कएल गेल। एकर मूल उद्येश्य लोकमे मानवीयगुणक संचार करब अछि।

मानलहुँ जे अभाव,अशांति आओर संघर्षसँ भरल एहि दुनिआमे ई छोटसन प्रयास मात्र अछि। मुदा सही दिशामे कएल गेल कनीकोटा प्रगति कालक्रममे बटबृच्छ जकाँ विशाल रूप धरबे करत। तखनहि लोक सही मानेमे सुखी रहि सकत। भजन-कीर्तन ,पूजा-पाठ तँ नीक बात अछि,मुदा धर्मक नामपर जे आडंवर होइत अछि,छल-प्रपंच होइत अछि से उचित नहि कहल जा सकैत अछि। एहि बातक ध्यान करैत सही मानेमे व्यक्तित्वक निर्माणमे आश्रम योगदान करए,सएह एकर मूल लक्ष्य अछि ।”

“हम तँ बहुत गरीब आदमी छी। गाम छोड़ि कोलकाता गेल रही जे कोनो काज पकड़ि लेब जाहिसँ गुजर भए सकत। गामपर माए एकसरि हमर बाट ताकि रहल होएत। कहि नहि ओ केना अछि?”

“तूँ परेसान नहि रहह। थोड़ेकालमे तोरा एकटा युवक भेटथुन। ओ तोहर रहबाक व्यवस्था सेहो कए देथुन। तकर बाद तूँ निचैन भए सोचि लिअह जे तोरा की करबाक छह। यदि हमरासभक संगे काज करबह तँ ठीक। यदि तूँ से नहि चाहबह तँ कोनो बात नहि।”

तकर बाद मोबाइल फोन बंद भए गेल। थोड़ेकालक बाद हमरा लग एकटा युवक आएल। ओ हमरा दुनूगोटेकेँ एकटा कोठरीमे लए गेल। ओहि कोठरीमे सभटा सुविधा छल। खूब नीक ओछाओन , टेबुल-कुर्सी ,कोठरीसँ सटले शौचालय। हमसभ भरिपेट भोजन केलहुँ। तकरबाद चैनसँ सुति रहलहुँ। चारिबजेक लगभग एकाएक मोबाइल फोन बाजल-

“बहुत आराम केलह। आब तूँसभ उठि जाह।”

हमसभ उठि जाइत छी। थोड़ेकालमे आश्वस्त भए जाइत छी। तकर बाद कुर्सीपर बैसले छलहुँ कि मोबाइल फोनमे फेर ओएह अबाज अबैत अछि-

“तोहरसभक की निर्णय भेलह?”

“हमरासभक कोनो ठाम नहि अछि जतए जा कए सुखसँ रहि सकी। गामपर बृद्ध माए एसगरि रहि रहल अछि। ओकर दुर्दशा देखिए कए हम ओहिठामसँ भागल रही। सोचने रही जे कोलकातामे किछु काज पकड़ि लेब जाहिसँ अपनो गुजर होएत आ माएकेँ सेहो मदति कए सकबैक। पता नहि, आब ओ की हालमे अछि? रहल बिलटक बात से तँ ओ अपने कहि सकैत अछि। हमरा ओकरासँ कोनो पुरान दोस्ती नहि अछि। संयोगसँ टीसनपर भेंट भए गेल रहए। तकरबादसँ हमसभ संगे छी।”

“तूँ अपन बात कहह ने? ओकरा जे विचार हेतैक से करत। कोलकाता वापसो जा कए की करत? ओकरा छैहे के? पेटे ने पोसि रहल अछि। से तँ कतहु पोसि लेत। अपन पेट तँ कुकुरो भरि लैत अछि।”

“हम तत्काल किछु नहि सोचि पाबि रहल छी। हम माए लेल बहुत चिंतित छी। ओकर किछु व्यवस्था करब जरूरी अछि। रहल अहाँसभक संगे काज करबाक बात, से हमरा किछु समय दिअ, जाहिसँ हम अपन मोन बना सकी।”

“कोनो बात नहि। तूँ समय लएह। जाधरि तूँ किछु निर्णय नहि करैत छह, ताधरि तूँसभ ओही कोठरीमे रहबह। ओतए सभटा ओरिआन कए देल जाएत।”

“ठीक छैक।”

14

हम रातिमे कैकबेर उठि कए बैसि जाइ। हमरा एना उठैत देखि बिलट सेहो जागि गेल।

“की बात छैक? बहुत परेसानीमे बुझाइत छी?”

“ईहो पुछबाक बात छैक? कतए सँ कतए पहुँचि गेलहुँ?सोचलाहा किछु नहि होइत छैक। समय बलवान होइत अछि। समयक प्रकोपसँ के बाँचि सकल अछि? भगवान रने-वने बौआइति रहलाह। सीताक अपहरण भए गेलनि। की की ने भेलनि,की की ने भोगलथि। महाभारतक खिस्सासभ तँ सुननहि हेबह। पाण्डवसभ नीक लोक छलाह,न्याय चाहैत छलाह। मुदा भेटलनि? कोनो गति बाँकी रहलनि? हम तूँ तँ मामुली आदमी छी।”

“आइ अहाँ बहुत ज्ञानक बात कए रहल छी।”

“से सभ की रहतैक? एमहर दोसरे तरहक घटनासभ घटित भेल जा रहल अछि। जे सभ कहिओ नहि सोचलहुँ से सभ प्रकट भए गेल अछि।”

“एहिमे चिंताक की बात छैक? ओ तँ कहबे केलाह अछि जे विचारि लिअ। यदि मोन मानैत अछि तँ ठीक नहि तँ साफे मना कए दिअनु।”

“बात एतेक आसान नहि बुझाइत अछि। ईहो नहि बुझा रहल अछि जे छथि के? सामने देखितिअनि तँ किछु अनुमान लगा सकैत छलहुँ। मुदा ओ तँ परोक्षमे रहि सभटा संदेश दए रहल छथि। कहीं बिगड़ि गेलाह तखन?”

“एतेक सोचलासँ की फएदा? जखन उखरिमे मुँह देलहुँ तखन मुसरक कोन डर?”

“तोरा हिसाबे की करबाक चाही?”

“हमरा तँ ईहो प्रस्ताव नीके बुझाइत अछि।”

“तूँ तँ बहुत बुधिआर बुझाइत छह।”

भोर भेने स्नान-ध्यान केलहुँ। चाह पीलहुँ। थोड़े कालक बाद जलखै सेहो भेलैक। से सभ कए हम दुनूगोटे बैसले छलहुँ कि श्वेतानन्दक फोन आएल -

“ई कलियुग छैक। नीक काज केनिहारकेँ बहुत कष्ट छैक। कुकर्मीसभक चलि पड़ल छैक। जतहि देखू ओएहसभ प्रतिष्ठित भए रहल अछि। समाजक मार्गदर्शक ओहने लोकसभ बनि गेल अछि। परिणाम सामने अछि। सभटा उल्टा-पुल्टा भए रहल अछि। हालति ई भए गेल अछि जे नीक लोकसभ डरे ओछाओन धए लेने छथि। केओ सही बात बजनाहर नहि भेटत। गामसँ सहर एके बसात बहि रहल अछि। चोर-उचक्कासभ इनाम लए रहल अछि आ विद्वानसभ बेचारे मुँह ताकि रहल छथि। बाह रे समाज!”

“से तँ बुझलिऐक, मुदा एकर प्रतिकार?”

“प्रतिकार करए की भगवान अएताह? हमरे-तोरे ने किछु करए पड़त। हमसभ एही काजमे लागि गेल छी। अपन जान हाथमे लए कए आगू बढ़ि चुकल छी। यदि तोरा साहस होअ आ एहि पुण्यकाजमे सहभागी होमए चाहह तँ आबि जाह। कुदि पड़ह एहि संग्राममे । ई स्वर्णिम अवसर थिक। मरबाक तँ सभके छैहे। जे एहि संसारमे जन्म लेलक अछि से एक-ने-एक दिन जेबे करत। किछु नीक कए लेबह तँ आत्मसंतोष रहतह। हेतह जे जीवन सार्थक बितओलहुँ। आगू तूँ जानह।”

“अहीं कहू जे हमसभ की करी? हमसभ तँ ओहिना अनाथ छी। हमरासभकेँ की अछि जे लुटा जाएत? जानो बँचाएब से मोसकिल अछि। तखन तँ नीक काजमे यदि जानो चलि जाइए तँ संतोष होएत।”

“तखन...?”

“तखन की। जे अहाँ कहब से हमसभ करबाक हेतु तैयार छी।”

“जे हम की कहबह? मुँहा-मुँही तकलासँ ई काज होमएबाला नहि थिक। तोरा अगुआ बनए पड़तह। तोरामे ओ क्षमता भगवान देने

छथुन। तेँ आगू आबह आ जन कल्याणक एहि शुभ काजक नेतृत्व ग्रहण करह।”

“से सभ तँ ठीक अछि, मुदा एतेक टा काजक हेतु हमरा लग अछि की? ने हम ततेक पढ़ल छी,ने हमरा लग कोनो धन-संपत्ति अछि। गामपर एकटा वयोवृद्ध माए से हाकरोस कए रहल अछि।

“फेर ओएह बात। जखन भारत माता हाकरोस कए रहल छथि, हजारो लाखों हुनकर संतान भूखल, नाङट व्याकुल भेल घुमि रहल अछि, निर्दोषलोकसभ नित्यप्रति अन्यायक सिकार भए रहल अछि ततए हमर-तोहर माए कोना अपवाद भए सकैत छथि? तूँ ई नहि सोचह जे एहि यज्ञमे तँ एसगर छह। सहरसँ गाम धरि लाखों लोक एहि भावनाक समर्थक अछि। बस ओकरासभकेँ कुशल नेतृत्व चाही, मार्गदर्शक चाही।”

“हम अपन संपूर्ण शक्तिसँ एहि काजक हेतु अपनाकेँ समर्पित करैत छी।”

हम एतेक बजनहि छलहुँ कि बिलट कुदि कए आगू आबि गेल।

“हमहूँ अहाँक संगे छी। आब कतहु वापस नहि जाएब। जाधरि लक्ष्य नहि प्राप्त कए लेब हम अहींक संग रहब, जिअब कि मरब, सभ स्वीकार अछि।”

बिलटक बात सुनि हमर उत्साह आओर बढ़ि जाइत अछि। मुदा मोनमे अखनहु किछु द्वंद लगैत अछि। मोबाइल फोनमे आबि रहल अबाज किनकर छनि? हुनका साक्षात देखबाक,भेंट करबाक स्वाभाविक इच्छा अछि।

“अहाँसँ गप्प केलाक बाद हमर मोन आइ बहुत हल्लुक लागि रहल अछि। मुदा ई तँ कहू जे अहाँ के छी? अहाँ नुकाएल किएक रहैत छी? सामने किएक नहि आबि रहल छी?

“फेर ओएह बातसभ?”

“आब कतेक सामने आएब? हमरा देखबाक,भेंट करबाक लालसा छोड़ह। जहिआ समाजमे पसरल अन्हरिआ हटि जाएत,हम स्वतः तोरा देखा जेबह। देखि नहि रहल छहक जे चारूकात की हाल अछि?समाजमे केहन अनर्थ भए रहल अछि?चारूकात पसरल अन्याय,अनीतिक सामना करैत-करैत की दशा भेल अछि से नहि देखि रहल छह? सत्य आ न्यायकेँ बैमानसभ झाँपि देने अछि। जेना अमावस्याक अन्हरिआ होइक। कतहु किछु नहि देखा रहल अछि। तथापि सभ घरे-घर आँखि मुनने सुतल अछि। होइत छैक जे ओकर कोठा एहिना सुरक्षित रहि जेतैक। नहि रहतैक। सभ घोर दुर्दशामे पड़ल अछि आ पड़ले रहत।

भ्रष्टाचार देशकेँ खेने जा रहल अछि। छोटसँ पैघ सभ अपन स्वार्थमे आन्हर भेल अछि। एहनमे देश कोना बाँचत? कोना बाँचत गरीबलोकसभ? इसकूलमे शिक्षक पढ़बैत नहि छैक,ओकरा चाही ट्युशन जाहिसँ ऊपरी आमदनी हेतैक, अस्पतालमे डाक्टर काज नहि करैत छैक,ओकरा चाही प्राइभेट प्रैक्टिस। दबाइ पर्यन्त नकली बिका रहल अछि। दूधक बदलामे लोक जहर कीनि रहल अछि। आखिर पाइ कमाइए लेब तँ की होएत? टकासभ धएले रहि जाएत। तेँ जरूरी अछि जे देशसँ बैमानी हटए। मुदा से होएत कोना? कहबाक हेतु देशमे जनतंत्र अछि। मुदा यत्र-तत्र-सर्वत्र टाकावलासभक चलती अछि। नेतागिरी अकूत धन अर्जित करबाक कारखाना बनि गेल अछि। सोचल जा सकैत अछि जे एहन परिस्थितिमे देश कोना बाँचत?

सभ एक-दोसर दिस ताकि रहल अछि। सरकार की की करत? हमर-अहाँक चरित्र ने ने बदलि देत?समाजमे इज्जति होइत छैक धनीक लोकक। गेलैक ओ जमाना जखन नीक लोक ताकल जाइक। आब तँ बिआहो काल देखल जाइत छैक जे वरक ऊपरी आमदनी कतेक छनि?ओना नीक-अधलाह सभ समयमे रहलैक अछि। से यदि

नहि रहितैक तँ लोकसभ राम-रावण युद्धक वृतान्त किएक सुनितए? कृष्ण-कंसक खिस्सा अखनहु गाम-गरमे किएक सुनल जाइत? मुदा एतबा आवश्यक अछि जे नीक लोकक पहिचान होइक,ओकर आदर होइक तखनहि समाजक हित होएत। यदि गुणी,चरित्रवान लोकसभ समाजक नेतृत्व करताह तखनहि सामान्य लोकसभक जीवन सुखी होएत,नहि तँ बलगर,उदंडलोकसभ सभटा संपदा लूझि लेत आ हमसभ मुँहे तकैत रहि जाएब।

मुदा तूँ घबड़ाह नहि,अगुताह नहि। जे काज हाथमे लेलह अछि ताहिमे लागि जाह। किछु मासक बाद माघमेला लागत। देखिअहक की हाल ओतए रहैत छैक? बहुरुपिआसभ ताल करैत रहैत छैक। ओतहिसँ काज श्रीगणेश करह।”

हम आगू किछु नहि बाजि सकलहुँ। चुप रहि गेलहुँ।

“आबो किएक ने बजैत छह? किछु तँ निर्णय करहि पड़तह,नहि तँ बात कोना आगू बढ़तैक?”

“अहाँक लेल हम सदिखन तैयार छी। बिलट सेहो सहमति देबे केलक अछि।”

“हमरा लेल नहि, एहि देशक हेतु, एहि समाजक हेतु, जकर नून हमसभ खेने छी तकरा लेल। जकरा सुरक्षित रहलेसँ हमसभ सुरक्षित रहि सकैत छी।”

15

हमसभ सोचने रही जे माघमेलाक समयमे काजक विस्तार देल जाएत। देखिते-देखिते ओहो समय आबिए गेल।

माघमेलामे टेंटक पाँति लागल छल। तरह-तरहक संतसभ अपन-अपन पहिचानकेँ उजागर करैत दिन-राति धार्मिक अनुष्ठानमे लागल छलाह। भजन-कीर्तन चलैत रहैत छल। कतहु नागा बाबासभ

नाचि रहल छथि,कतहु महिला भक्तिनसभ समूहमे भजन गाबि रहल छथि। मिथिलाक पहिचान माछपंडाक लगपासमे हजारो मैथिलसभ अपन-अपन डेरामे विराजमान छथि। एहिना ठाम-ठामक लोकसभ अपन-अपन चिन्हित स्थानपर टेंट खसा कए कल्पवास कए रहल छथि। सौंसे मेला क्षेत्रमे बिजली,पानि,शौचालयक व्यवस्था कएल गेल अछि। मासभरि रहनिहार कल्पवासीलोकनिक अतिरिक्त नित्यप्रति लाखों लोक अबैत-जाइत रहैत छथि। प्रमुख स्नानक दिनमे तँ ई संख्या अकल्पनीय भए जाइत अछि। लोकसभक मिस पड़ैत रहैत अछि। संगममे पहिने कोन अखाड़ाक लोक स्नान करताह तकरो नियम बनल छैक। यदि तकर अनुपालनमे कोनो व्यवधान केओ केलक तखन ओकर भगवाने मालिक। तलवार लेने महात्मासभ आक्रमण कए दैत छथि। ढोल मजीरा,हुहु बाजा शंखनाद सभ होइत रहैत अछि। लगिते नहि अछि जे ई कोनो धार्मिक अनुष्ठानक अंग होइक। अपितु लागत जेना कोनो शत्रु देशपर आक्रमण करबाक हेतु सैनिकसभ कदमताल कए रहल अछि।

एहने भीड़मे बदमास,उचक्का,समाजविरोधी तत्वसभ सेहो अपन काज सुतारएमे लागल रहैत अछि। ओतेक लोकमे के ककरा चिन्हत? प्रशासन तँ अपने बेचैन रहैत अछि। फेर ओहूमे तँ सभ तरहक लोक पैसल अछि। ककरो माथपर तँ किछु लिखल नहि छैक। इएह कारण अछि जे सभ तरहक प्रयासक अछैत दुष्टसभ समाजपर हाबी अछि। धर्मक नामपर तरह-तरहक पापक आचरण भए रहल अछि। कोनो हद रहिए नहि गेल अछि। सभ अपन जान बँचबएमे लागल अछि। अपन घर भरएमे लागल अछि। ई नहि सोचाइत छैक जे जखन दुष्टलोकसभक चारूकात राज भए जेतैक तँ नीक लोक कतेक दिन बाँचल रहि सकत?

हमसभ माघमेलामे भए रहल भजन-कीर्तनक आनन्द लैत रही कि बड़ीजोर हल्ला सुनाएल। हम आ बिलट ओमहरे बढ़लहुँ। हल्ला बढ़िते जा रहल छल। हम कैकगोटेसँ पुछलिऐक-

“बात की अछि? हल्ला किएक भए रहल अछि?”

मुदा केओ निजगुत बात नहि कहलक। हमसभ ओहि टेंट लग पहुँचि गेलहुँ। देखैत छी जे पुलिस किछुगोटेकेँ पकड़ने जा रहल अछि। ओकरासभक पाछू-पाछू ओकरसभक किछु सामानसभ सेहो लेने जा रहल अछि।

किछु बुझेबे नहि करए जे तीर्थस्थानमे ई सभ किएक भए रहल अछि। जकरे पुछिऐक,बस एतबे कहितए-

“छापा पड़ि गेलैक अछि।”

किछुगोटे अपन-अपन सामान लए कए भागिओ रहल छल।

एक पाँतिसँ तीनटा टेंटमे ई सभ साधूक बगएमे रहि रहल छल। एकटा टेंटमे तस्कारीक सामानसभ भरल छल। दोसर टेंटमे तरह-तरहक हथिआरसभ राखल छल। तेसर टेंटमे साधूक भेषमे बदमाससभक बासा छल। तीनूटेंटकेँ चारूकातसँ सीसीटीभीसँ जोड़ि देल गेल छल। बदमासभक सरगना फटकिएसँ ओहिठामक गतिविधिपर नजरि रखैत छल। छापा पड़ितहि बदमाससभ टेंटक भितर बनल गुप्त रस्तासँ विलुप्त भए गेल। तथापि छापा मारि रहल अधिकारीलोकनिकेँ किछु महत्वपूर्ण कागजात हाथ लगलनि। किछु मूल्यवान वस्तुसभ सेहो पकड़ाएल।

ओहि माहौलमे हम मूर्तिवत ठाढ़े रहि गेलहुँ। अधिकारीसभक गाड़ीसभ चलि गेलैक। ओ टेंटसभ खाली भए गेलैक। हम कनी हल्लुक अनुभव कए रहल छलहुँ। भेल जे आब आगू बढ़ी। मुदा बिलट कतहु देखा नहि रहल छल। चारूकात ताकि लेलहुँ। ओकर कतहु पता नहि

छल। आब की कएल जाए? अखनहि ई परेसानी भए गेल? कहि नहि आगू की की होएत?

माघमेलामे बिलटपर भुवनक नजरि पड़लैक। ओ तुरंत अपन आदमीकेँ इसारा केलक। ओ सभ इएह-ले ओएह-ले बिलटकेँ उठा-पुठा कए गाड़ीमे बैसओलक आ ओकरा भुवनकेँ सामने आनलक । ओहिठामक माहौल देखि बिलटक हालति तँ बहुत खराब भए गेलैक।

ओकरा देखितहि भुवन चिचिआए लागल -

“तोरा तीर्थयात्रापर पठओने रहिऔक। तूँ मौका देखितहि कात भए गेलैं। संगे आएल यात्रीसभक सेहो कोनो सुधि नहि लेलैं।”

“हम किछु करबाक स्थितिमे नहि रहि गेल रही। जान बँचेबाक हेतु जे भेटल तिनकर संग भए गेलहुँ।”

“मानि लेलहुँ तोहर बात। मुदा बादोमे तँ तूँ हमरा फोन कए सकैत छलैं। अपन स्थिति आ परिस्थितिक बारेमे बता सकैत छलैं। परंतु तूँ तँ गुम्मी लादि देलैं। एहि बीच कोलकातासँ कैक तोर आदमीसभ आएल गेल। मुदा तोहर कोनो पता नहि चलल। चलबो कोना करितए? तूँ तँ आब दोसरे धंधामे लागि गेल छैं?”

“हम कोनो धंधामे नहि लागल छी। हम तँ अपन जान बँचा रहल छी।”

“हमरा मूर्ख बनेबाक प्रयास नहि करै। हमरासभ किछु पता अछि। तोहर एक-एक सेकेण्डक हमरा जनतब अछि। अच्छा ई बता जे तोरा वसंत कोना भेंट गेलौ? की तूँ दुनूगोटे पहिनहि सिखा-बुद्धी केने छलै?”

“सभ किछु अकस्मात भेलैक सरकार! हम तँ अपने छटपटाइत छलहुँ जे केना अहाँ धरि पहुँची?”

“बात नहि बनाबै। आइ-काल्हि सभठाम फोन रहैत छैक। तूँ हमरा फोन तँ कइए सकैत छलैं।”

“आब जे गल्ती भेल से माफ करू। आगू जेना अहाँ कहबैक सएह करब।”

“मुदा वसंत कतए रहि गेल।”

“ओ तँ हमरा संगे माघमेलामे आएल छल। ओही बीचमे छापा पड़ि गेलैक। तकर बाद कहि नहि ओ केमहर चलि गेल?”

हम घंटो माघमेलामे बौआइति रहि गेलहुँ , मुदा बिलट नहि भेटल। कहबाक लेल ओहिठाम पुलिसक ओतेक ओरिआन रहैक,रहि-रहि कए तरह-तरहक घोषणा होइते रहैक ,मुदा हम छटपटा कए रहि गेलहुँ जे बिलटक बारेमे ओ सभ किछु मदति करए से केओ ध्यान नहि देलक। आखिर हम थाकि कए डेरा दिस वापस बिदा भेलहुँ।

स्नान केलाक बात तीर्थयात्रीसभ वापस अपन-अपन ठेकानपर जा रहल छल। पुलिससभ सेहो सुस्ता रहल छल। छापादलक ट्रकसभ सेहो मेलास्थलसँ प्रस्थान कए चुकल छल। मुदा हम ओहिना असगरे परेसान,थाकल-ठेहिआएल आगू बढ़ल जा रहल छलहुँ। मेला क्षेत्रसँ जेना-तेना निकलि पूलपर चढ़लहुँ। उल्टा रस्ता पकड़ा गेल छल। जेना-तेना साँझ धरि अपन डेरा वापस अएलहुँ।

16

भुवन अपन ठेकानापर तामसे आगि भेल छल। बड़का अधिकारीसभ कल जोड़ने ठाढ़ छलाह।

“तोरासभकेँ मासे-मास लिफाफा एही लेल पहुँचाओल जाइत अछि? गद्दारीक दंड तँ तोरासभकेँ भेटबे करतह। तोरा की बुझाइत छह जे हमरासँ बाँचि जेबह? असंभव। सभक वीडिओ बनल छह। सभटा सबूत हमरा लगमे अछि। तूँसभ गेल घर छह। नौकरी तँ जेबे करतह,जानो जेतह। गद्दारीक दंड भेटबे करतह।”

उच्च अधिकारी सभ डरे नढ़िआ बनल छथि। हाथ-पैर जोरि रहल छथि।

“रे बइमानसभ! तूँसभ खाइ छैं हमर आ गबै छै अनकर। हमसभ कोनो आइसँ माघमेलामे नहि आबि रहल छी। सालक-साल बीति गेल। कहिओ कोनो परेसानी भेल? नहि भेल? कारण ओहि समयक अधिकारीसभ टाका लैत छलै तँ काजो करैक। वचनक पक्का रहैक। यदि माल भेटि गेलैक तँ की मजाल जे केओ ओकरासभकेँ टससँ-मस कए लिअए। एकटा तूँसभ छह? लोभे पतंग भेल रहैत छह। तोरासभकेँ जे चाही से खोलि कए बाज। मुदा काजमे अड़ंगा नहि लगा। ओना हमर आदमीसभ सदिखन तैयार रहैत अछि। तकरे परिणाम अछि जे छापावलाकेँ किछु नहि भेटलैक।”

“आब जे भेल से भेल। एक मौका देल जाए। आगू कोनो सिकाइति नहि होएत।”

“मुदा एहन घटना भेलैक कोना?”

“नव अधिकारी आबि गेलैक अछि। कहैत छैक जे नियम, कानूनक पक्का छैक।”

“ओकरा अपना संगे आनब तोहरसभक काज छह। जे चाही से ओकरा दहक, मुदा हमर काज वाधित नहि होएबाकक चाही। आगूसँ यदि से सभ भेल तँ भोगैत जेबह।”

भुवनक बात सुनि सभ सहमतिमे माथा झुका लेलक।

17

जेना-तेना हम अपन बासापर वापस पहुँचि जाइत छी। डेरा आबि कए किछुकाल तँ लागल जेना सुन्न भए गेल छी। हम बहुत थाकि

गेल छी। चुपचाप कुर्सीपर बैसि गेलहुँ। मोनमे बेर-बेर इएह प्रश्न अबैत रहल जे आखिर एना किएक भेल,कोना भेल? बिलटकेँ बँचाएब हमर कर्तव्य छल। ओ हमरा संगे छल। मुदा ओ तँ देखिते-देखिते बिला गेल। कतए गेल,की भेलैक किछु नहि बूझि सकलहुँ। संगमे बिलटकेँ रहलासँ मोनमे उसास रहैत छल। आपसमे गप्प-सप्प कए सकैत छलहुँ। सुख-दुख बाँटि लैत छलहुँ।

थोड़ेकालक बाद चाह बनबैत छी , जलखैक ओरिआन करैत छी। चाह-जलखै केलाक बाद सोच-विचारमे पड़ि जाइत छी। गामसँ सहर धरि तरह-तरहक समस्यासभ विकराल रुप धेने अछि। नीक आ अधलाहक तेना ने मिजहर भए गेल अछि जे पहिचान करब मोसकिल अछि। पुस्त-पुस्तसँ एकहि माटि-पानिमे जीबि रहल लोकसभ केना एक-दोसरक प्राण संकटमे केने रहैत छथि। जकर हालति खराब भेल ओकरापर सभ गिद्ध जकाँ मरड़ाए लगैत अछि। तेहन-तेहन व्योंत करत जाहिसँ ओकर घर-घराड़ी पर्यन्त बेचबा देत किंवा हथिआ लेत। जीविका हेतु गामसँ भागि कए सहर जाउ तँ ओतहु तरह-तरहक समस्या रहिते अछि। सहरमे समाज नहि छैक,लगो-पासमे रहनिहारकेँ केओ नहि जनैत छैक। तकर दुष्परिणाम होइत अछि जे ककरो कोनो कुकर्म करबामे लाज-धाक नहि होइत छैक। जकरा जे मोन होइत अछि से करैत अछि। केओ देखनाहर नहि। पुलिस आ सरकारक बले कतेक कएल जा सकैत अछि? फेर ओहूमे तँ समाजेक लोक सामिल रहैत अछि?

लोक जखन सभकिछुसँ थाकि जाइत अछि,कतहु केओ मदति केनिहार नहि देखाइत छैक तँ भगवानक शरणमे जाइत अछि। मुदा ओतहु एक सँ एक ढोंगी लोक अपन-अपन जोगारमे लागल रहैत अछि। कोनो उपायसँ लोकक जेबी ढिल करबाक फिराकमे रहैत अछि। परेसान लोककेँ तंत्र-मंत्रक चक्रव्यूहमे फँसा कए सभकिछु नष्ट कए दैत अछि। कानूनक रखबारसभ सेहो बलगरेक संग भए जाइत

छथि । कारण हुनका ओहिसँ फएदा हेतनि। जेबी भरतनि। तरह-तरहक पद भेटतनि । गरीब,लाचार आदमी की दए सकतनि? ओ तँ स्वयं विपत्तिग्रस्त रहैत अछि। मदतिक हेतु कानूननक रक्षककसभक ओहिठाम चक्कर लगबैत अछि। मुदा हाथमे अबैत छैक फोकला।

हम इएहसभ बैसल-बैसल सोचि रहल छलहुँ कि मोबाइल फोन बाजल -

“वसंत!तूँ एतेक परेसान नहि रहह।”

“परेसान कोना नहि रहू? गेलहुँ माघमेला जे मोन लागत,किछु जानकारीओ भेटत। मुदा ओहिठाम तेसरे बातसभ भए गेल। असलमे बिलट लए कए बहुत चिंतामे पड़ि गेल छी।”

“ओकर चिंता करब व्यर्थ अछि । ओ भुवन लग पहुँचि गेल अछि। ओ ओकरे आदमी छल आ मौका पबिते ओहिठाम पहुँचि गेल। एहिमे परेसान होएबाक कोनो बात नहि छैक।”

“मुदा हम एसगर की कए सकब? कतए-कतए जाएब?हमरा लगमे अछि की?”

“तूँ तँ एकहि साँसमे सभकिछु बाजि गेलह। जिनगी एतेक आसान नहि होइत छैक जे भोरे उठलहुँ आ साँझ धरि सभ समस्याक समाधान भए जाएत।”

“तखन अहीं कहू जे हम की करी?”

“सभसँ जरूरी अछि जे तूँ धैर्य राखह । हड़बड़ नहि करह । जखन जतबा जरूरी हेतैक तोरा से जनतब भए जेतह। सालक-सालसँ जे समस्यासभ जमा भेल अछि से एके दिनमे कोना ठीक भए जाएत? एहिमे समय तँ लगबे करतैक। हमरसभक उद्देश्य मात्र समस्याकेँ उजागर करब नहि थिक। अपितु हमसभ ओकर समाधानक प्रयास सेहो करब जाहिसँ समाजमे लोक सुखी जीवन जीबि सकथि।”

18

कैकबेर आदमीपर मोन हाबी भए जाइत छैक । कैकबेर मोनपर लोक स्वयं सेहो हाबी भए जाइत अछि। कैकबेर परिस्थितिए एहन भए जाइत अछि जे मनुक्ख किछु सँ किछु कए लैत अछि। जे कखनहु नहि सोचने होएत सएह भए जाइत अछि । जीवन पूर्वनिर्धारित सूत्रक अनुसार नहि चलैत अछि। से सभ सोचि-सोचि लोक बाजि उठैत अछि-भावी प्रबल। इएह ने थिक जीवन । सएह भेलैक भुवनोक संगे। ओना ओ जखन जीबिकाक प्रयासमे कोलकाता आएल रहए तखन की रहए? एकटा मामुली आदमी छल । किछु ओछाओन,किछु वस्त्र, आ एकाधटा छिपली-बाटी । किछु-किछु करैत रहल। एकटा बात ओकरा संगे छलैक। ओ कखनहु हारि मानि कए बैसि नहि गेल। हमर बाबू जकाँ परेसानीसँ निराश नहि भेल,कतबो किछु भेलैक गाम नहि लौटि गेल। गाम जेबो करैत कथीपर?ओतहु तँ ओएह हाल रहैक । बेसक ओहिठामक लोक अपन रहैक,मुदा व्यवहारमे तँ नर्कोसँ आलय छल। यदि कबगर नहि छी तँ ओएह हाल होएत जेना बेंगकेँ साँप कए दैत अछि।

भुवनक कोलकातामे जखन संघर्षक समय चलिए रहल छलैक तखने एकदिन शिप्रा भेटि गेलखिन। ओ आ शिप्रा एक-दोसरकेँ देखिते रहि गेल रहथि । असलमे शिप्रा भुवनक दोकानपर किछु सामान कीनबाक हेतु आएल रहथि । सामान तँ नहिए भेटलनि,मुदा किछु आओर भेटि गेलनि । ओ प्रथम भेंट दुनूक जीवनक स्मरणीय क्षण साबित भेल। तकर बाद तँ ओ सभ एक-दोसरसँ भेंट करबाक कोनो-ने-कोनो जोगार ताकिए लेथि। बात बढ़िते गेल। शिप्रा अपन माता-पिताक एकमात्र संतान रहथि। हुनका लोकनिक सेवाक भारो हुनके पर रहनि। तेँ जल्दी बिआह करबाक स्थितिमे ओ नहि रहथि। मुदा भुवन हुनकर सभटा बात मानबाक हेतु तत्पर रहथि। कैकदिन हुनका

लोकनिकेँ बिआहक प्रश्नपर चर्चो होइत रहलनि । केओ मना नहि करथि। बस समयक प्रतीक्षा रहनि।”

क्रमशः बात गुलगुलेलैक । शिप्राक माता-पिताकेँ सेहो पता लगलैक। ओ सभ ओना शिप्राक बिआहक हेतु किछु नहि कए रहल छल। ओकरे माध्यमसँ दुनूगोटेक समय कटि रहल छलैक। शिप्राक अपनो जिनगी छैक,ओकरो किछु भविष्य होइक,से सोचबाक परिस्थिति ओकरासभक नहि रहैक । एहन परिस्थितिमे जीबि रहल शिप्राक समय सालक-साल बितैत रहल। संयोगसँ भुवनक संग ओकर मधुरता बढ़िते गेलैक आ आब ओ सभ किछु कए लेबाक हेतु तैयार छलि। ओना शिप्राक माता-पिता साइत एहि प्रस्तावकेँ सहर्ष मानि लितैक,मुदा जखन ओकरासभकेँ पता लगलैक जे भुवन बंगाली नहि अछि,मिथिलाक अछि तखन ओ सभ दुखी भए गेल,एक हिसाबे बिआहक एहि प्रस्तावकेँ खारिज कए देलक। मुदा साफे मना कए देबाक स्थितिमे नहि रहबाक कारण किछु नहि बजलैक।

पहिल पत्नीक देहान्तक बाद भुवन बहुत दुखी रहथि। घरमे से अव्यवस्था रहिते छल। अचलाकेँ से उचित माहौल नहि भेटैत छलनि। तेँ ओ शिप्रा दिस आकर्षित होइत चलि गेलथि। शिप्रा हुनकर हृदयक शून्यताकेँ भरबामे सफल भेलथि। भुवन हुनका संगे बिआह हेतु तैयार भए गेलथि । एकदिन साँझमे शिप्रा निआरिएक भुवनक दोकानपर पहुँचलि। ओ मोनमे सोचि कए आएल छलि जे आइ एहिपार नहि तँ ओहिपार कइए कए रहब। भेबो केलैक सएह । भुवन दोकान बंद केलथि आ शिप्रा संगे काली मंदिर बिदा भए गेलथि । ओतहि सिंदुरदानक विध कएल गेलैक । भुवनक प्रसन्नताक तँ अंते नहि छलनि। पंडासभ सेहो बहुत प्रसन्न रहए। भुवन अपन जेबीमे हाथ देलक आ जतेक टाका रहैक सभ पंडाकेँ पकड़ा देलक।

बिआहक बाद दुनूगोटे भुवनक डेरापर पहुँचल। ओ सभ भरि राति आपसमे गप्प-सप्प करिते रहि गेल। शिप्रा बादमे अपन-माता-

पिताकेँ सेहो ओतहि आनि लेलक। ओहोसभ प्रसन्न रहए जे चलू कहुना शिप्राक घर बसि गेलैक। बंगाली नहि छैक तँ कोनो बात नहि,बंगाली बाजि तँ लैते छैक। शिप्रा सेहो अपन गृहस्थी मजगूत करबामे लागि गेलथि। संगे मैथिली नीकसँ बाजए लगलीह। हुनकासँ गप्प केलाक बाद बुझेबे नहि करैत जे ओ मैथिल नहि छथि। एहि तरहेँ हुनका परिवारमे मैथिली आ बंगालीक अपूर्व संगम भए गेल छल।

समय बितैत गेल। भुवनक कारोबार बढ़ैत गेलनि। ओ की करथि,केना एतेक टाका कमा लेथि से सभ शिप्राकेँ किछु नहि बूझल रहैक। मुदा ओ एहि बातसँ प्रसन्न तँ रहबे करथि। शुरुमे दुनूगोटेक समय बहुत नीकसँ बीति रहल छल।

19

कालक्रमे शिप्राक माता-पिताक देहावसान भए गेलनि। भुवनक कारोबार बढ़िते गेलनि। हुनका घरमे रहबाक अवसर कमे होइत छलनि। शिप्रा बेसी काल असगरि रहैत छलीह। संतान से नहि होइत छलनि। एमहर आबि कए स्वास्थ्य से गड़बड़ होइत रहलनि। छोट-छोट बातसभ बिसराए लगलनि। क्रमशः ई समस्या बढ़िते गेलनि।

शिप्राक बिमारी शारीरिक कम आ मानसिक बेसी छलनि। ओ देखबामे तँ एकदम ठीक लागथि। मुदा मोनसँ प्रसन्न नहि रहथि। असलमे भुवनक क्रिया-कलाप लए कए ओ बहुत चिंतित रहैत छलीह। जखन कखनहु ओ भुवनकेँ बुझेबाक प्रयास करथि ओ हँसि कए टारि देथि। बहुत भेल तँ कहितथि-

"अहाँ अनेरे परेसान नहि रहू। ई जीवन छैक। सभकिछु नहि भेटैत छैक। किछु प्राप्त करबाक हेतु किछु छोड़ए पड़ैत छैक।

शिप्राक मोन एहि स्थितिकेँ स्वीकार नहि करैत छलैक। मुदा ओ घरसँ फराको नहि भए सकैत छलीह। अचलाक चिंता से छलनि। एही अन्तर्विरोधक कारण हुनकर मानसिक स्थिति गड़बड़ाइत चलि गेलनि। स्मृति क्षय सेहो होमए लगलनि। रहि-रहि कए बात बिसरा जानि। लोककेँ नाम बिसरा जानि। सामनेमे ठाढ़ परिचितो लोककेँ नहि चिन्हथि। एक दिनतँ ओ भुवनोकेँ नहि चिन्हि सकलीह। भुवनक माथा ठनकलनि। ओ शिप्राकेँ मनोवैज्ञानिक लग लए जाए चाहैत रहथि। मुदा शिप्रा साफे मना कए देलखीन।

"हम तँ केहन बढ़िआँ छी। अहाँ हमरा जबरदस्ती पागल घोषित करबामे लागल छी।"

आखिर भुवन चुप भए गेलथि।

एकदिन अहल भोरे शिप्रा घरसँ बिदा भेलीह। भुवन ओहिदिन घर नहि आएल रहथि आ अचला सुतले छलीह। नौकर-चाकरसभकेँ भेलैक जे प्रातः भ्रमणपर जा रहल छथि। तेँ ओहोसभ बेसी ध्यान नहि देलक। शिप्रा आगू बढ़ैत गेलीह आ कोलकाताक व्यस्त सड़कपर बौआइत-बऔाइत कहि नहि कतए पहुँचि गेलीह?

सड़कपर अबैत-जाइत लोकसभ हुनका नाम-पता पुछनि। मुदा ओ किछु नहि कहि पाबथि। जेना सभकिछु बिसरि गेल होथि। सड़कपर चलैत-चलैत ओ कोनो मंदिर लग पहुँचि गेलीह। ओतए अष्टजाम भए रहल छल। ओहि भीड़मे ओहो सामिल भए गेलीह। हुनका कीर्तन करैत देखि केओ नहि बूझि सकैत छल जे ओ अस्वस्थ छथि। बड़ीकाल धरि ओ कीर्तन करैत रहि गेलीह। दस बजेक पासमे कीर्तन समाप्त भेल। लोकसभ प्रसाद ग्रहण कए अपन-अपन घर वापस भए गेल। मुदा शिप्रा ओतहि रहथि। संयोगसँ बिलट ओहिबाटे जा रहल छल। ओकरा इच्छा भेलैक जे प्रसाद लेने जाइ। प्रसाद लेबए ओ भितर अबैत अछि। ओहिठाम शिप्राकेँ बैसल देखि ओ चौकल।

“अहाँ एहिठाम?”

शिप्रा किछु नहि बजलीह। बिलट तुरंत भुवनकेँ फोन करए लगैत अछि। मौका देखि शिप्रा ओहिठामसँ घसकि जाइत छथि। तकर बाद बिलट लाख प्रयास केलक हुनका नहि ताकि सकल। थोड़बे कालक बाद भुवन सेहो ओहिठाम अएलाह। मुदा ओहो किछु नहि कए सकलाह। बिलट संगे ओ स्वयं सौंसे बौआइति रहलाह। मुदा शिप्रा नहि भेटलखिन। आखिर ओ सभ वापस भए गेलथि। मुदा भुवन बहुत परेसान रहथि। रहि-रहि कए बिलटपर तमसाथि।

“तोरा अकिलसँ काज करबाक छलौक।”

तरह-तरहक बातसभ ओ बिलटकेँ कहैत रहलखिन। बिलट की बजितए? ओ नहि सोचि सकल जे तुरंतेमे शिप्रा एना बिला जेतीह।

शिप्रा ओहिठामसँ भागल-भागल हावड़ा टीसनपर पहुँचलीह। ओहिठाम एकटा ट्रेनमे बैसि गेलीह। ट्रेनक ओ डिब्बा खालिए छल। थोड़बे कालक बाद टीटी आएल। टीटी संगे ओ नीकसँ बतिआइत छथि।

“हमरा टिकट तँ नहि अछि। अचानक ट्रेनमे बैसि गेल रही।

“कतए जेबैक?”

“प्रयागराज।”

“कोनो बात नहि। हम अहाँकेँ टिकट बना दैत छी।” ओ टाका निकालि कए टीटीकेँ दैत छथि। टीटी प्रयागराजक टिकट बना दैत छनि। टीटी आगू बढ़ि जाइत अछि। शिप्रा अपन शायिकापर जा कए पड़ि जाइत छथि।

शिप्रा ट्रेनमे चैनसँ सुतल रहलीह। प्रयागराज अबैत-अबैत भोर भए गेल छल। ओतए टीटी हुनका ट्रेनसँ उतारि देलकनि। ओ प्लेटफार्मसँ बाहरो भए गेलीह। तकर बाद हुनका फुरेबे नहि करनि जे की करी? केमहर जाइ?

ओमहर भुवन डेरा पहुँचि बहुत परेसान रहथि। रहि-रहि कए बिलटपर तामस होनि। मुदा एतबा बुझा गेलनि जे शिप्राक मानसिक स्थिति ठीक नहि छनि ,ओ जीबित छथि आ अपना वशमे नहि छथि। तरह-तरहक बातसभ हुनका मोनमे आबि रहल छलनि । आखिर शिप्राक ई हालति भेलनि कोना? हम हुनकापर उचित ध्यान देने रहितिअनि तखन ई एना नहि होइतथि । धन कमेबाक निसाँमे हम सभकिछु गमा लेलहुँ । एहि तरहक प्रश्नसभ हुनकर मोनमे अबैत रहलनि। मुदा आब ओ कइए की सकैत छलाह? हुनका परेसान देखि हुनकर संगीसभ सेहो बहुत दुखी रहथि । अपना भरि हुनका बुझबथिन। मुदा कहला-सुनलासँ भितरिआ कष्ट थोड़बे मेटा जाइत छैक? भुवन राति भरि छटपटाइत रहि गेलाह।

20

प्रयागराज पहुँचि शिप्रा कैकदिन धरि सिभिल लाइन्स चौराहाक लगपासमे देखाइत रहलीह । जेबो कतए करितथि,ककरा लग जइतथि?अपन मोनो वशमे नहि रहनि। कखनहु किछु,कखनहु किछु बजैत रहथि। ककरो अपन परिचयो नहि दए पाबथि। स्वास्थ्य से दिन-प्रतिदिन खराब भेल जानि। कहिओ काल लगेमे हनुमान मंदिर लग चलि जइतथि। मंगल दिन तँ ओतए भक्तलोकनिक भीड़ रहिते छल। अबैत-जाइत लोकसभ हुनको किछु-किछु दए दैत छलनि।

की भाग्यक विडंबना छल? सभ तरहेँ संपन्न परिवार रहितहुँ शिप्रा एहि हालमे जीबि रहल छलीह। एकरा की कहबैक? भाग्येक दोष ने? असलमे जीवनक रहस्य बूझनाइ बहुत मोसकिल अछि। के कखन कतए पहुँचि जाएत तकर कोनो ठेकान नहि । लोक सोचैत अछि किछु,होइत छैक किछु। इएह थिक समयक प्रभाव जाहिसँ केओ

बाँचि नहि सकल अछि। शिप्रा एहिना बौआइत अपन समय बिता रहल छलीह। एकदिन पुलिसक ध्यान हुनकापर गेलैक। ओ बेसुध सड़कक कातमे पड़ल छलीह। बोखारसँ देह जरि रहल छलनि। पुलिसक जीप हुनका लग ठाढ़ भेल। ओ सभ हुनका किछु-किछु पुछलकनि। मुदा शिप्रा किछु निजगुत उत्तर नहि दए सकलथि। आखिर ओ सभ हुनका उठा-पुठा कए मनोरोगी अस्पतालमे भर्ती करा देलक। एहि तरहेँ शिप्रा प्रयागराजक मनोरोगी अस्पतालमे पहुँचि गेलीह।

लोक प्रयाग अबैत अछु संगमस्नान करए ,पुण्य प्राप्त करए। मुदा सभहक भाग्यमे से होइ तखन ने? कम सँ कम शिप्राक लेल तँ प्रयाग विचित्रे भेषमे उपस्थित छलैक। मनोरोगी अस्पतालमे कखनहु काल हुनकर स्मृति वापस आबि जाइत छलनि। लोकोसभक चर्च करितथि। मुदा तखनहु अपन असली पता देबएसँ बँचितथि।

“आखिर ई चाहैत की अछि?”

“की कहल जाए? एहि दुनिआमे मनुक्खक मोनक कोन ठेकान?के की सोचैत अछि,ककर मोनमे की छैक,के कखन की रूप धए लेत तकर कोन ठेकान?”

“मुदा एकर तँ बहुत विचित्र बिमारी छैक। कखनहु तेहन संच-मंच रहत जेना किछु भेले नहि छैक। कखनहु एकदम दोसरे रूप दए लैत अछि।”

“एकरा कोनो बातक मोनमे बहुत कष्ट छैक।”

“सेहो बजतैक तखन ने?”

“ताही लेल ने हमसभ एहिठाम छी। यदि ई अपन बात कहबाक स्थितिमे रहैत तखन एहिठाम राखले किएक जाइत?”

डाक्टरसभ आपसमे गप्प करैत छल। शिप्रा ओकरसभक बात सुनबो करथि आ नहिओ सुनथि। मुदा कोनो प्रतिक्रिया नहि देथि।

एहि तरहें शिप्राक समय मनोरोगी अस्पतालमे बीति रहल छलनि। गाहे-बगाहे ओ ठीको भए जाइत छलीह । मुदा केओ ओहिठामसँ लए गेनिहार नहि रहबाक कारणेँ ओतहि पड़ल रहि जाथि। कहिओ काल रातिमे ओ किछु-किछु लिखैत रहैत छलीह। डाक्टरसभकेँ सेहो ई बात पता लगलैक। मुदा ओ सभ सेहो आब तंग भए चुकल छल,थाकि गेल छल। तेँ शिप्राकेँ अपने हालपर छोड़ि देने छलनि। करबो की करैत ? अस्पतालक अपन सीमान होइत छैक।

एकदिन दूपहर रातिमे शिप्रा अस्पताल छोड़ि कए बिदा भए गेलीह।। लगपासमे केओ नहि छल । चौकीदारसभ सेहो सुति गेल छल। भोरे जखन डाक्टरसभ अएलाह तँ शिप्रा कतहु नहि भेटलखिन।

21

अचला शुरुएसँ कोलकातामे रहैत छलीह । हुनका घरपर बंगाली आ मैथिली दुनू भाषा बाजल जाइत छल। कखन के बंगाली शुरु कए देत आ कखन मैथिली बाजए लागत तकर कोनो ठेकान नहि। मैथिली आ बंगालीक मिजहर सेहो होइते रहैत छल । हुनकर घरमे नौकर-चाकर लागले रहैत छल । जहिआसँ अचलाक माएक देहावसान भेलनि,अचला पूर्णतः ओकरे सभपर निर्भर भए गेलीह। मातृहीन संतानमे किछु-ने-किछु भावनात्मक समस्या भइए जाइत अछि। असलमे कतबो केओ प्रयास करए मुदा ओ माएक स्थान नहि लए सकैत अछि। नेना जखन कखनहु कष्टमे होइत अछि तँ माए लग जाए चाहैत अछि । ओकरा ओतए जइतहि अपूर्व शांति भेटैत छैक,मोनमे संतोष होइत छैक,सुरक्षाभाव तँ होइते छैक। मुदा यदि माए नहि रहल,तँ नेना हेहरु भइए जाइत अछि। आब ई ओकर

स्वभाव आ भाग्यपर निर्भर करैत अछि जे ओ आगू कोन रुखि लैत अछि।

अचला कालेजसँ बीए नीक नंबरसँ पास केलीह। भुवन एहि बातसँ बहुत प्रसन्न रहथि। ओहिदिन जखन कालेजसँ परीक्षाफलक जानकारी लए ओ घर वापस भेलीह तँ भुवन हुनकर बहुत प्रशंसा केलखिन। सत्यनारायण भगवानक पूजा भेल। नौकर-चाकरसभ भरिपेट मधुर खाइत गेल। सभ आनंदमे रहए।

"आगू की कएल जाए?"- भुवन अचलासँ पुछलखिन।

"हमरा तँ किछु नहि फुरा रहल अछि।"

"तत्काल एमएमे नाम लिखा लएह। आगू देखल जेतैक।"

"मुदा हमरा एहिसभमे मोन नहि लगैत अछि।"

"तखन...?"

"सेहो नहि बुझा रहल अछि।

भुवन नहि बूझि सकलाह जे अचलाकेँ कोना मनाओल जाए? ने हुनका लगमे ओतेक बेसी समय रहनि। ओ अपन कारबारमे व्यस्त भए गेलाह। अचला अपना हिसाबे समय बितबैत रहलीह।

अचलाक मोन कोलकातामे नहि लागि रहल छलनि। कथीपर लगितनि? पिता छलखीन भुवन मुदा नामेके। ओ तँ दिन-राति अपन घनचक्करमे लागल रहथि। अचला असगरि ओतेकटा घरमे रहि गेलथि। ओना नौकर-चाकरसभ लगले रहए। घरमे सुख-सुविधाक अंबार छल। मुदा ओहिठाम असलीए वस्तु नहि छल। परिवारे नहि छल। अपनत्वक नितांत अभाव छल। सभ एकटा यांत्रिक जीवन जीबि रहल छल। तथापि भुवन अचलाकेँ कतहु अन्यत्र जेबाक अनुमति नहि देथि। एहन घर कैकदिन चलैत ?

बीचमे हमरा संगे अचलाकेँ मोन लागि रहल छलैक। मुदा हम तँ स्वयं छटपटमे रही। हमरा कोलकातासँ चलि अएलाक बादो ओ हमरासँ यदा-कदा संपर्क बनओने रहलीह । हमरासभक गप्प-सप्प होइत रहल। जखन हुनका बिलटक माध्यमसँ हमर कुशल समाचार भेटल रहनि तँ ओ बहुत प्रसन्न भेल रहथि।

एकदिन अचानक अचलाक फोन आएल । ओ आश्रम अएबाक जिद कए देलनि । हम ने मना कए सकलिअनि ने कोनो आश्वासने देलिअनि। केना-ने-केना ई बात श्वेतानन्द धरि पहुँचलनि। शिप्राकेँ सेहो सएह इच्छा रहनि। अचलाक नामेसँ ओ प्रसन्न भए जाइत छलीह। ओ अचलाकेँ आश्रममे रहबाक आमंत्रणे ने देलनि,अपितु तकर सहर्ष जोगारो केलनि । अपन आदमीकेँ कोलकाता पठा अचलाकेँ बजा लेलनि। ओहिठाम लोकसभमे ई प्रचार करबा देलनि जे अचलाक अपहरण भए गेल अछि जाहिसँ भुवन अचलाक पछोड़ नहि करथि। अचला घरमे सभकेँ कहलखिन जे ओ सीनेमा देखए जाइत छथि । कालेजक संगीसभ ओतहि भेटितनि आ सभगोटे संगे सीनेमाक आनन्द लेतीह। ओ अपन घरसँ थोड़बे फटकी गेल रहथि कि कारसँ केओ उतरल। ओ अचलाकेँ कारमे बैसा लेलक आ अपना संगे लेने चलि गेल । जखन बहुत राति धरि अचला घर वापस नहि अएलीह तँ हुनकर नौकर-चाकरसभ भुवनकेँ फोन केलक-

“बात की छैक? तूँसभ एतेक परेसान किएक छैं?”

“अचला...?”

“अचलाकेँ की भेलैक? साफ-साफ किएक नहि बजैत छैं।”

“अचला सीनेमा गेल छलीह, मुदा अखन धरि वापस नहि अएलीह अछि, ने हुनकर फोन लागि रहल छनि।”

ओहि समय भुवन कोलकातासँ फटकी अपन काजमे लागल छलाह। चाहिओ कए तुरंत घर वापस नहि आबि सकैत छलाह।

नौकर-चाकरक भरोसे किछु होएब संभव नहि छल। की करथि,की नहि करथि एही गुनधुनमे रहथि कि हुनका कोनो अज्ञात नंबरसँ फोन अएलनि। फोनमे अचलाक नाम सुनि कए ओ बहुत परेसान भए गेलथि। आगू किछु गप्प होएबासँ पहिनहि फोन कटि गेल। भुवनकेँ बुझेबे नहि करनि जे बात की अछि? एतबा तँ अनुमान भए गेलनि जे किछु गड़बड़ भए गेल अछि। भुवन इएहसभ सोचैत रहथि कि कोनो दोसर नंबरसँ फेर फोन आएल-

"बूझि गेलहक ने। अचला हमरा लग अछि। कोनो चिंताक बात नहि अछि।"

"मुदा तूँ के छह? की चाहैत छह?"

तकर बाद ओ किछु नहि बाजल। फोन कटि गेल।

22

भुवन जकरा-तकरा फोन करैत रहलाह। मुदा ककरो लगमे निजगुत जानकारी नहि रहैक। केओ किछु,केओ किछु अनुमान लगबैत रहल। सभ अपना-अपना हिसाबे परामर्श सेहो दैत रहलनि।

"हे! ओकरासभसँ मुँह नहि लगाएब। ओ सभ बहुत खतरनाक लोक होइत छैक। फलना बाबूक संगे एहिना भेल रहनि। टको गेलनि आ बेटाक जानो नहि बँचलनि।"

"से केना?"

"ओसभ पहिने कहि देने रहनि जे यदि पुलिसकेँ सूचना देबहक तँ बेटा नहि बँचतह। मुदा ओ सभ टका देबाक बहन्ने पुलिस बजा लेलथि।"

"तकर बाद...?"

“तकर बाद की होइतैक? गोलीक अबाज भेलैक आ हुनकर बेटाक जान चलि गेलनि। पुलिस देखिते रहि गेल।”

केओ कहतनि-

“हमरा तँ एहिमे अचलेक हाथ लागि रहल अछि। ओ अपन दोस्तक संगे कतहु चलि गेल होएत आ नाम ककरो लगा देलक।”

“की बात करैत छी? अचला एहन नहि कए सकैत अछि।”

“ई कलियुग छैक। केओ ककरो नहि। सभ काम आ लोभमे आन्हर भए गेल अछि।”

ई बातसभ सुनि-सुनि भुवन बहुत परेसान भए गेल रहथि। ओ तुरंत अपन डेरा दिस बिदा भए गेलाह। कहबी छैक जे जखन समय खराब होइत छैक तँ सभ किछु उल्टे होमए लगैत अछि। सएह भुवनो संगे भए रहल छलनि। हुनकर कार थोड़बे आगू बढ़ल छल कि पूलक रेलिंगसँ टकड़ा गेल। रच्छ रहैक जे कार हावड़ा पूलक अंत कए रहल छल नहि तँ कार गंगेमे खसैत। कारक पाछूसँ एकटा टेम्पु आबि रहल छल। ओहो कारसँ टकराएल। आगू एकटा दोकानसँ टकराएल। दोकान बंद छल। तेँ केओ हताहत नहि भेल। मुदा कारक अगिला भाग बहुत क्षतिग्रस्त भए गेल छल। भुवनक दहिना टांगमे चोट लागल छलनि। ओ चलि नहि पाबि रहल छलाह। लगपासमे जमा भेल लोकसभ मोसकिलसँ हुनका कारसँ बाहर केलक। ताबतेमे एकटा छौंड़ा हुनकर मोबाइल लेने दौड़ल। दोकान लग खसल छल। ओतए ठाढ़ केओ व्यक्ति ओहि मोबाइलसँ ककरो-ककरो फोन करैत छथि। फोनसभक घंटी बजैत रहि जाइत अछि,मुदा केओ उठबैत नहि अछि। संयोगसँ फोन हमरा लागि जाइत अछि। अचानक भुवनक मोबाइलसँ फोन अबैत देखि हम आश्चर्यचकित छी। ओहि समयमे हम अपन कोठरीमे रही। तखने श्वेतानंदक फोन आएल- -

“तोरा बूझल छह?”

“की?”

“ओ आबि रहल अछि।”

“के?”

“भुवनक बेटी अचला?”

“ऐँ! से केना भेलैक?”

“तेँ ने कहने रहियह जे धैर्य राखल करह। मुदा तूँ तँ तुरंतेमे अगुता जाइत छह।”

“लगैत अछि कोनो अज्ञात नंबरसँ फोन आबि रहल अछि।”

“उठाबह। की पता के अछि?”

हम ओ फोन सुनैत छी। ओमहरसँ अबाज आबि रहल अछि-

“भुवनक कारक दुर्घटना भए गेलनि अछि। हुनको चोट लगलनि अछि। कारक तँ दुर्गति भए चुकल अछि। हुनकर फोन कतहु नीचाँमे खसल छलैक। ओहीसँ संपर्क कए रहल छी जाहिसँ एहि दुर्घटनाक समाचार हुनकर परिवारक लोककेँ भेटि जानि।”

“मुदा हमरा से सभ कहलासँ की होएत? हम तँ बहुत फटकी रहैत छी।”

“मुदा अहाँ हुनका जनैत छिअनि ने?”

“जनैत तँ छिअनि जरूर।”

“तखन एतबा तँ कइए सकैत छी जे ई समाचार हुनकर परिवारक लोककेँ पहुँचा दिअनि। हम आनो नंबरसभपर संपर्क करबाक प्रयास केलहुँ मुदा किछु भेल नहि।”

अचानक ओकर अबाज आएब बंद भए जाइत अछि। फोन बंद नहि भेल छल,बीच-बीचमे हल्ला सुनाइत रहैत छल। ओहीबीच फेर श्वेतानंदक फोन आएल-

“तूँ एहि लफड़ासभमे नहि पड़ह।”

फोन भुवनक हाथमे पहुँचि गेल छल। मुदा ओ गप्प करबाक स्थितिमे नहि छलाह। भुवनकेँ एम्बुलेंससँ अस्पताल बिदा कएल गेल। संगमे पुलिस चलि रहल छल।

ओ सभ भुवनक फोन अपन कबजामे लए लैत अछि। ओ सभ फेरसँ हमर नंबर लगेबाक प्रयास करैत अछि। मुदा हम फोन नहि उठबैत छी। हम एहि मामिलासँ फराके रहबाक प्रयास करैत छी। रहि-रहि कए फोनक घंटी बजिते जा रहल अछि। हमर चिंता बढ़िते जा रहल अछि।

23

भुवन अस्पतालसँ छुटिते माथपर पट्टी बन्हने घर बिदा होइत छथि। हुनकर आगमन देखि फटकिएसँ नौकर-चाकरसभ स्वागत हेतु ठाढ़ अछि। सभ बेचैन अछि,परेसान अछि,अचलाक कुशल-समाचार जानबाक हेतु व्यग्र अछि। भुवनक कार लगीच आबि गेल छनि। ओ कारसँ बाहर होइत छथि।

“ई की? हिनकर माथपर पट्टी?”

“से तोरा नहि बूझल छह?”

“नहि, हमरा के कहत?”

“ओ तँ भाग्येसँ बँचि गेलाह। यदि कार कनिको आओर पहिने दुर्घटनाग्रस्त भेल रहैत तँ ओ पुलक रेलिंगसँ टकरा कए गंगामे डुबि गेल रहितथि।”

“सएह कहू। ईहोसभ अखनहि होएबाक छलैक। एक दिस अचला दुखद परिस्थितिमे पड़ल अछि आ दोसर दिस ईहो संकटमे पड़ि गेलाह।”

“चलू जान तँ बाँचि गेलनि ने।”

“मुदा अचलाक की समाचार अछि?”

“हमसभ की जाने गेलिऐक?”

लोकसभ आपसमे गप्प कए रहल छल। भुवन बाबू कारसँ उतरि सोझे कोठरीमे चलि गेलाह। ककरोसँ किछु नहि पुछलखिन,ने केओ हुनका किछु कहि सकलनि। केबार बंद कए लैत छथि। कुर्सीपर बैसि जाइत छथि। ओतए बैसले-बैसल अचलाक बारेमे सोचि रहल छथि। लगैत छनि जेना सभकिछु काल्हिए घटित भेल अछि। हुनका ओ दिन मोन पड़ि रहल छनि जखन ओ अपन पहिल पत्नीक संगे अनाथालय गेल रहथि। ओहिसँ पूर्व कैकसाल धरि संतानक प्रतीक्षा करैत रहि गेल रहथि। कतए-कतए ने गेलाह,ककरा-ककरा ने कबुला केलाह,मुदा साफल नहि भेलनि। एकदिन भोरे चाह पीबैत काल दुनू बेकती निर्णय केलनि-

“कोनो जरूरी छैक जे अपने पेटसँ जनमत तखनहि संतानक सुख भेटत? हमसभ अनाथालय चली। ओतहि एकटा बच्चाकेँ गोद लए ली।”

“बात तँ सही कहि रहल छी। हमसभ अनेरे अपसिआँत छी।”

तकरबादे ओ सभ अनाथालयमे एकटा कन्याकेँ गोद लेने रहथि। ओकर नाम अचला रखने रहथि। हुनकासभकेँ बुझाइन जेना ओ सहीमे ईश्वरक विशिष्ट रचना अछि। जेहने सुंदरि तेहने संस्कारी। अचलाकेँ घर आबि गेलाक बाद तँ हुनकरसभक आनन्दक अंते नहि छल। ओकर एक-एकटा इच्छाक पूर्ति कए आनन्दित होइत रहलाह। अचला बढ़ैत रहलीह। इसकूल,कालेजमे सभदिन औअलि अबैत रहलीह। बीचेमे एकदिन अचानक हुनकर माए बहुत जोर दुखित पड़लखिन। भुवन देखिते रहि गेलाह। डाक्टर,बैदसभ फेल भए गेलाह आ ओ चलि जाइत रहि गेलीह। तकर बादो भुवन धैर्य धेने रहलथि।

अचलाकेँ बढ़ैत देखि हुनका अपूर्व संतुष्टि होइत छलनि। मुदा आइ जेना सभकिछु खतम भए गेल रहनि। किछु फुरेबे नहि करनि जे की करी ककरा कहिऐक,कोन उपाय कएल जाए जाहिसँ अचला वापस आबि जाथि।

भुवन कखन कुर्सीपरसँ उठि पलंगपर पड़ि गेलाह से सोह नहि रहलनि। अचलाक माए,अचला आ हुनकासभक संग बिताओल समयक स्मृतिमे आँखिसँ नोर अविरल खसैत रहलनि। नोरसँ गेरुआ भिजि गेल। ओ बेसुध पड़ल छलाह। हुनका लगैत छलनि जे सभटा धन व्यर्थ भए गेल। शुरुमे ओ बहुत गरीबीमे समय बितओने रहथि। कोलकाता सहरमे बहुत अपमानित भेल रहथि। ककर-ककर ने बात सुनने रहथि। आनक बात तँ छोड़ू,अपनो समाजक लोक देखिते रस्ता बदलि लैत छलनि। एहिसभ बातक मोनपर बहुत प्रतिक्रिया भेलनि। ओ धन कमेबाक हेतु दिन-राति एक कए देलनि। ताहि हेति उचित-अनुचितक विचार नहि कएलनि। सालक-साल एहि तरहक प्रयासक अनुकूल परिणाम भेटलनि। ओ प्रचुर धन कमेलाह,सहर-सहरमे जमीन-मकान कीनि लेलाह,कतेको तरहक व्यवसाय करैत रहलाह। जहिना-जहिना ओ धनक पाछू भागैत रहलाह,तहिना-तहिना परिवारसँ कटैत गेलाह। अचला नितान्त असगरि भए गेलथि। भुवन हुनका समयक बदलामे टाकासँ भरि देने रहथि,कतेको नौकर-चाकर लगा देने रहथि। मुदा अचलाक मोन कहिओ सुखी नहि रहलनि। थोड़ेक दिन हमरा संगे अपन सुख-दुख बतिआ लैत छलीह। मुदा हम तँ अपने भसिआएल नाओ छलहुँ जकर कोनो दशा-दिशा नहि छल। हम हुनका की सुख दए सकितहुँ?

भुवनक ध्यान अचानक केबार लग ककरो आगमनसँ टुटलनि। ओ ओछाओनपरसँ उठैत छथि।

“की बात?”

“नीचाँ केओ आएल छथि। अहाँसँ भेंट करए चाहैत छथि।”

“ठीक छैक। तूँ आगू बढ़ह। हम अंगा पहिरि कए आबि रहल छी।”

24

भुवन छटपटा कए रहि गेलाह मुदा हुनका अचलाक बारेमे किछु जानकारी नहि भेटलनि। हुनका होनि जेना पुलिस उचित ध्यान नहि दए रहल अछि। की पता पुलिस ओकरासभ सँ मिलि गेल होअए? कहीं अचला स्वयं तँ ई काज नहि केलक अछि? यदि से बात होइक तँ एहिसँ पैघ अन्याय किछु नहि भए सकैत अछि। एहि तरहेँ तरह-तरहक बातसभ भुवनक मोनमे अबैत रहैत छलनि।

भुवन दनानपर पहुँचैत छथि। ओहि ठाम केओ नहि छल। नीचाँमे एकटा चिठ्ठी खसल छल। भुवन चिठ्ठी उठा लैत छथि। हुनका चिठ्ठी खोलबामे डर भए रहल छनि। पता नहि एहिमे की लिखल अछि? एक मोन होनि जे चिठ्ठीकेँ जेबीमे राखि ली। बादमे पढ़ब। फेर होनि जे कहीं जरूरी जानकारी ने होइक। विलंब करब ठीक नहि भए सकैत अछि। अस्तु मोनकेँ सक्कत कए ओ पढ़ए लगैत छथि।

“अचला जतए कतहु अछि सुरक्षित अछि। तूँ ओकरा बारेमे बेसी चिंता नहि करह। व्यर्थ पुलिसक चक्करमे नहि पड़ह। ओकरासभ बुते किछु नहि होएत। अपितु परेसानी बढ़िए सकैत अछि।”

भुवन चिठ्ठी पढ़ि गुम पड़ि गेलाह। ककरोसँ किछु नहि बजलाह आ चुपचाप वापस अपन कोठरीमे जा कए पड़ि रहलाह। एहि तरहेँ एक दिन बितल,दू दिन बितल,तीन दिन बितल मुदा अचलाक बारेमे किछु जानकारी नहि भेटलनि ,ने हुनकर मनोदशामे कोनो परिवर्तन भेलनि। चारूकात पसरल हुनकर कारबारसभ ठप भए गेलनि। नौकर-चाकरसभ परेसान भए गेल । बहुत मोसकिलसँ किछु खाथि। बेसीकाल पड़ले रहथि। एहि तरहेँ जखन सात दिन बीति गेल तखन

लगपासक लोकसभकेँ बहुत चिंता भेलनि । ओ सभ तरह-तरहसँ भुवनकेँ बुझेबाक प्रयास करए लगलाह।

केओ किछु-केओ किछु कहैत रहलनि।

“अचलाकेँ केओ किछु नहि बिगाड़ि सकैत अछि।”

“हमरा रातिमे स्वप्न आएल छल । जेना भगवती स्वयं कहि रहल होथि-अचला अपने मोनसँ भागल अछि।”

“अचलाक अपहरण भइए नहि सकैत अछि।”

“यदि से भेल रहैत तखन अहाँकेँ फोन अबैत, ओसभ किछु सर्त कहैत। एना गबधी थोड़बे लाधि दैत?”

“से जे बात होइक मुदा हमरा तँ अचला चाही । खालीबात बनओलासँ किछु होमएबाला नहि अछि।”

“ताहू लेल जरूरी अछि जे पहिने अहाँ आश्वस्त होइ। मोनकेँ शांत करी। चिंता छोड़ी।”

“चिंता केओ जानि कए करैत छैक? परिस्थितिए एहन भए जाइत अछि जे केहनो आदमी लाचार भए जाइत अछि।”

“मुदा कएल की जाए?”

“हमरा हिसाबे तँ पुलिसकेँ सूचित कए देल जाए।”

“यदि किछु उल्टा-पुल्टा भए गेल तखन?”

“अहुना तँ किछु समाधान नहिए भए रहल अछि।”

“बात तँ सही कहि रहल छह।”

“आओर कइए की सकैत छी?”

इएहसभ गप्प-सप्प भए रहल छल कि भुवनक फोनक घंटी बाजल।

ई तँ अचलाक फोन लागि रहल अछि। ओ धराक दए फोन उठबैत अछि।

“हम अचला बाजि रहल छी।”

“बाजह। की समाचार अछि? तूँ कतए छह?”

“हम जतए कतहु छी एकदम ठीक छी। अहाँ चिंता नहि करू।”

एतबे गप्प भेलाक बाद फोन कटि गेल। भुवन अचलाक फोनसँ कनी आश्वस्त जरूर भेलाह। मुदा हुनका ई नहि बुझा रहल छलनि जे आखिर बात की अछि? ई अपहरण थिक वा स्वयं ओकरे द्वारा प्रायोजित नाटक?

भुवनकेँ अचलाक चिंता तँ रहबे करनि,मुदा आब घरो बैसब संभव नहि रहनि। चारूकातसँ काजक दबाब बढ़ि रहल छल। फोनपर-फोन अबैत रहैत छल। भुवन ओहुना पुलिससभसँ हटले रहैत छलाह। मोनमे तरह-तरहक आशङ्का रहिते छलनि । हुनका भेलनि जे अचलाक जीवनपर कोनो संकट नहि अछि। तेँ पुलिस धरि बात लए जाएब ठीक नहि होएत। कहीं उल्टे ने पड़ि जाए। आखिर ओ अछता-पछता कए अपन काजपर वापस चलि गेलाह आ फेरसँ अपन कारोबारमे लागि गेलाह।

घरसँ जाइत काल भुवनक मोनमे बहुत असमंजस रहनि।

“आखिर ओ एतेक तरहक धुरफिंदीमे किएक लागल अछि? ककरा लेल लागल अछि? ओ अकूत धन जमा कए तँ लेलक मुदा तकर होएत की? के भोगत? ओ तँ अपने तरह-तरहक बिमारीक सिकार भए चुकल अछि। उच्च रक्तचाप आ सुगरक कारण ओकर किडनी सेहो गड़बड़ भेल जा रहल छैक। दिन-राति ओ अपनाकेँ ठकैत रहैत अछि। लोक ओकरा जे बुझौक,मुदा ओ अपने दृष्टिमे दोषी अछि।

धनकमेबाक लिप्सामे कतेको निर्दोष व्यक्तिक जीवन ओ तबाह कए चुकल अछि।”

कतेको तरहक भयाओन दृश्यसभ ओकर मोनमे अबैत रहैत छैक। एहन हालतिमे ओकरा शांति हेतैक कहाँसँ? ओ सुखी कोना रहि सकत? ऊपरसँ ओकर एकमात्र आशाक केन्द्र अचला सेहो आब ओकरा संगे नहि रहि गेल छलैक? ओ केहन परिस्थितिमे जीबि रहल छल? मुदा ताहि हेतु केओ आओर जिम्मेबार नहि छल। ओ स्वयं अपन बुनल मकड़जालमे फँसि चुकल छल। आब ओ चाहिओ कए ओहिसँ बाहर नहि आबि सकैत छल। अपराधक दुनिआ होइते छैक तेहने।

25

कोलकातासँ प्रयागराज लग अवस्थित आश्रमक यात्राक क्रममे अचलाकेँ कोनो कष्ट नहि भेलनि। क्रमशः कोलकाता स्थित अपन घरक बंद वातावरणसँ निकलि हुनका नीक लागए लगलनि। यात्रामे हुनकर सहयात्री सुख सुविधाक पूरा ध्यान रखलकनि। कोलकातासँ आश्रम धरिक यात्रा समाप्त भए रहल छल। अचला ओकरा संगे आश्रमक प्रमुखद्वारिसँ प्रवेश कइए रहल छलथि कि हम हम हुनका देखलिअनि । ओ हमर नाम लए जोरसँ चिकरलीह। तखन हम रस्ताक कातमे गाछ तर विश्राम कए रहल छलहुँ। असलमे हम माएक बारेमे सोचि रहल छलहुँ। कैकदिन पहिने ओकरा सपनामे देखने रही। ओ अस्वस्थ लागि रहल छलि। तेँ हमर चिंतित होएब स्वाभाविक छल। हम ओही सोच-विचारमे रही कि अचला हमरा देखि सोर पारने रहथि। अचलाक अबाज हमरा धरि पहुँचल,हम ओकरा सुनबो केलहुँ। हम हुनकर अबाज सुनितहि घुमलहुँ। जाबे हम साकंछ होइतहु ताबे ओ कारसँ आगू बढ़ि गेलथि। अचलासँ भेंट नहि भए

सकल,गप्प-सप्पक तँ कथे कोन? हम थोड़ेकाल ओतए प्रतीक्षा करैत रहि गेलहुँ। भेल जे साइत ओ वापस आबथि। मुदा से सभ किछु नहि भेल। आखिर हम अपन डेरा वापस आबि गेलहुँ। डेरा पहुँचिओ कए अचलाक बारेमे सोचैत रहि गेलहुँ।

कारपर जाइत अचला ओहि रस्तासभकेँ देखैत रहथि । दुनूकात लागल फूलसभक आनन्द लए रहल छलीह। थोड़बे कालमे अचलाक कार आश्रमक ठीक सामने ठाढ़ भेल। अचलाक स्वागत हेतु किछुगोटे पहिनेसँ ओतए उपस्थित रहथि । अचलाक संगे आएल सहयात्री ओतहिसँ वापस भए गेल। अचला कारसँ उतरले छलीह कि मोबाइल फोन बाजल -

“आउ! आउ!अहाँक स्वागत अछि।”

अबाज सुनि कए अचला छगुन्तामे रहथि । हुनकर मोनक असमंजस ओ बूझि गेलथि।

“अहाँ परेसान नहि रहू। हम अहाँकेँ देखि रहल छी।”

“मुदा हम तँ किछु नहि देखि रहल छी।”

“कोनो बात नहि। क्रमशः सभकिछु स्पष्ट भए जाएत।”

हुनका ओ सभ एकटा सुसज्जित घरक आगूमे पहुँचा देलकनि। ओहिठामसँ एकटा परिचारिका हुनका कोठरीक भितर लेने गेलनि। बाहर ठाढ़ आदमीसभ ओतहिसँ घुरि गेल।

26

आश्रम पहुँचितहि अचलाक मोन हरिआ गेलनि। ओ अतिशय आनन्दमे रहथि। सभसँ प्रसन्नताक बात भेल जे ओ आश्रममे अएलाक कनीके कालक बाद परिचारिका संगे जहाँ आगू बढ़ैत छथि तँ अपन

माएकेँ देखैत छथि। एहिसँ पैघ आश्चर्य हुनका लेल आर की भए सकैत छल? माएकेँ देखिते अचला दौड़लीह। हुनकर गलासँ लटकि गेलीह। हुनका लेल ओ क्षण अवर्णनीय छल । जे कहिओ नहि सोचने हेतीह,जकर कोनो अनुमान नहि छलनि,से सभ देखि रहल छथि।

अचला चिचिआ उठलीह-

“माए! माए!”

शिप्रा सेहो आनन्दसँ अश्रुपात कए रहल छलीह। चारूकात जेना आनन्दक वर्षा भए रहल छल। सभकेँ उमीदसँ बेसी भेटि गेल छलैक। सभ मोने-मोन ईश्वरकेँ धन्यवाद दए रहल छलथि।

“आखिर एहनो समय देखबामे आएल।”-सभ एतबे सोचि रहल छलथि।

अचला आ शिप्रा घंटो गप्प करैत रहि गेलीह। आर कथुक सोह नहि रहि गेलनि।

“तूँ एतए कोना आबि गेलही?”-अचला शिप्रासँ पुछलखिन।

“की कहयौ? हमरा अपनहु नहि मोन अछि जे केना-की भेलैक? मुदा जखन हम एतए अएलहुँ तँ जेना हमर सभ दुख हरा गेल। मोनमे शांतिक अनुभव भेल । तकर बाद तँ लागल जेना पहिलुका दुनिआमे पहुँचि गेल छी। तूँ बहुत मोन पड़ि रहल छलैं। आब तँ तोरोसँ भेंट भए गेल। जे कहिओ उमीद नहि छल से संभव भए गेल। आब की चाही। हम बहुत प्रसन्न छी।”

शिप्रा मुँहे ई बातसभ सुनि अचलाक आनन्दक सीमा नहि छलनि। बड़ीकाल धरि एहि दृश्यक आनन्द लैत रहलीह। समय कोना बीति गेल,से पता नहि चलल। साँझक समय भए गेल छल। आश्रममे भगवानक आरती भए रहल छलनि। सभगोटे ओहिमे सामिल भए रहल छलीह । चारूकातक वातावरण भक्तिमय छल । सभभक्तगण आरतीक आनन्द उठओलथि । भजन-कीर्तन केलथि। प्रसाद ग्रहण

केलथि आ एकस्वरसँ बाजि उठलथि- -“आनन्दकंद भगवानक जय!” तकर बाद सभ अपन-अपन डेरा दिस बिदा भए गेलथि।

आरतीक बाद हम अपन डेरा पहुँचिए रहल छलहुँ कि बिलट देखाएल। हमरा देखि कए ओ बाजि उठल-

“गोर लगैत छी।”

“नीके रहह? तूँ फेर एमहर?

“की कहैत छी? भुवनक समय खराब छनि। हम अपना भरि बहुत प्रयास केलहुँ जे हुनकर संग दिअनि। कारण ओ तँ हमरा शुरुएसँ पालन केने छथि। एक हिसाबे हमर जिनगीकेँ ओएह रक्षा केलनि। मुदा करी की? हमहूँ विवश भए गेलहुँ।”

“से की?

“हुनकर माथे जेना गड़बड़ा गेल छनि। सदिखन उल्टा-पुल्टा बात करैत रहैत छथि। घरमे संपत्ति भरल छनि, मुदा एकटा लोक संगे नहि छनि। अखनहु गलत-सलत काजमे लागल रहैत छथि। शिप्रा अस्वस्थ भए कोलकाता छोड़ि कहि ने कोना ने कोना प्रयागमे बौआइत रहथि। संयोगसँ हमरा देखा गेलथि। ओहि समय हम भुवनक काजे प्रयाग आएल रही। हम शिप्राकेँ बुझेबाक बहुत प्रयास केलहुँ। मुदा ओ किन्नहु भुवनसँ गप्प करबाक हेतु तैयार नहि भेलथि, ने ओ वापस कोलकाता जाए चाहथि। एहि हालतिमे की करितहुँ? हुनका असगरे छोड़ि देब ठीक नहि बुझाएल। हुनका लेने-लेने आश्रम पहुँचलहुँ। हम तहिआसँ एतहि छी।”

“अच्छा ई कहह जे जखन भुवनक संगे केओ अपन नहि छनि तखन ओतेकटा मकानक देख-रेख के कए रहल अछि? हुनकर धनके भोगि रहल छनि?

“जाए दिअ। ईहो कहएबाला बात छैक। हुनकर घर तँ गुंडासभक अड्डा भए गेल अछि। भुवन तँ आब नाममात्रक मालिक

छथि। हुनकर किछु नहि चलैत छनि। जे ओ सभ चाहैत अछि सएह होइत अछि।”

“आखिर ओ सभ अछि के? भुवन ओकरासभक जालमे फसि केना गेलाह?”

“लोभवश।”

“से की?

“होनि जे कतेक कमा ली कतेक ने। टाका छोड़ि किछु सुझबे नहि करनि। परिणाम भेल जे ओ दिन-प्रतिदिन बरबाद होइत गेलाह। अन्याय, कुकर्म करबासँ हिनका कनीको संकोच नहि रहि गेलनि। एक हिसाबे हिनकर आत्मा मरि गेलनि।”

“ई तँ हद भए गेल।”

“तेँ ने शिप्राक ई हाल भेल। अचला सेहो ओहिठामसँ हटि गेलथि।”

“मुदा तूँ हुनकर संग किएक छोड़ि देलहुन?”

“देखिऔक। हम तँ भुवन चूरा-दहीक दोकान चलाबी। संगम स्नान करए हुनकासभक संगे आएल रही। तकर बाद जे दुर्घटना भेल से अहाँक जनतबमे अछिए। हम तँ अहाँक संगे रही। फेर केना ने केना हुनका पता चलि गेलनि। हमरापर ततेक दबाब बनेलनि जे की कहू? हुनका संगे वापस होमए पड़ल। हम कोलकाता वापस गेलहुँ। मुदा ताधरि हमर दही-चूराक दोकान उजड़ि चुकल छल।”

“से की?”

“की की कहू? कहीं हमहूँ ने फँसि जाइ। डर होइत अछि।”

“एहिठाम आर के अछि? हमरासँ तोरा कथीक डर?”

“से की कहबैक? देबालोकेँ कान होइत छैक । ओहोसभ व्योंतमे लागले रहैत अछि। आखिर अपन रक्षा तँ जानबरो चाहैत अछि आ करितो अछि।”

“साफ-साफ बात किएक ने करैत छह। ई स्थान तँ पूर्ण सुरक्षित अछि।”

“ई तँ अहाँ सोचि रहल छी ने? मुदा से बात छैक नहि।”

“माने?”

“एतहु ओकर जासूससभ काजमे लागल रहैत छैक। आश्रमक सभ बात ओकरासभक जनतबमे रहैत छैक।”

“कोना?”

“की की कहू?”

“कहबह नहि तँ बुझबैक कोना?”

“आब तँ अहींक संगे छी। बेरा-बेरी सभ बात कहब। सभ बात अहाँ बूझब। से हमरो हितमे अछि। सभक हितमे छैक।”

“हम जखन वापस कोलकातामे अपन चुरा-दहीक दोकानपर गेलहुँ तँ ओहिठामक हालतिए बदलि गेल छल।ओहिठाम तरह-तरहक निसाँसभ बिका रहल छल। राति भरि गुंडासभक आवागमन होइत रहैत छल। बाहर चुरा-दही राखल रहैत छल जरूर।”

“तखन?”

“ओ सभ चाहलक जे हमहूँ ओहीमे रमि जाइ। मुदा हमर मोन नहि मानलक। मौका देखितहि प्रयाग आबि गेलहुँ।”

“मुदा भुवन किछु मदति नहि केलकह?”

“फेर ओएह बात?”

“ओ तँ ओकरसभक कठपुतली बनि कए रहि गेल छथि -जिंदा लास।”

“राम! राम! की बात करैत छह?”

“सही कहि रहल छी।”

आश्रमक सुरम्य वातावरणमे सभ आनंदित छल। लगबे नहि करैक जे शिप्रा एतेक बिमार छलीह,अपन सुधि-बुधि बिसरि कोलकाताक अपन घरसँ हरा गेल छलीह। बिलट ओहिठाम रहि रहल लोकसभक जलखै,भोजनक ओरिआन करैत छल। आब ओकरा कोलकाताक चुरा-दही दोकान छुटि जेबाक कोनो कष्ट नहि रहैक। ओ पूर्णतः एहिठामक काजमे रमि गेल छल।

अचला आ शिप्रा आश्रममे स्वस्थ छथि। ककरो कोनो दुख नहि छनि। ओहिदिन साँझमे सभगोटे बैसल चाह पीबि रहल छलथि। सभगोटे आपसमे गप्प-सप्प सेहो करथि। ओही समयमे अचला बाजि उठलि-

“धन्यकेँ श्वेतानन्द जे हमसभ आइ जीबित छी।”

“अहाँ कोलकाता वापस किएक नहि जाइत छी।”

“कोलकाता ककरा लग जाएब?”

“से किएक?”

“हमरासभक सभ भार भुवने उठओने छलाह। आब ओ स्वयं लाचार छथि। स्वास्थो ठीक नहि छनि। संगति तँ खराब भइए गेल छनि। तखन ओ हमरासभक की मदति करताह?”

“मुदा हमरासभकेँ ई बातसभ अहाँ कहिओ नहि कहलहुँ।”

“की की कहितहुँ? जे कहि सकैत छी से कहि रहल छी। ओ आदमी मनुक्ख नहि रहि गेल अछि।” ...एतबा बजिते-बजिते ओ

जोर-जोरसँ कानए लगलीह। हुनका एना कनैत देखि सभगोटे परेसान भए गेल।

“बेकारे हिनका बितल बातसभ मोन पारि रहल छहुन। जे बीति गेल से बात गेल...।”

ओही समयमे श्वेतानन्दक मोबाइल फोन बाजल -

“फेर अहाँ ओही बातसभमे पड़ि गेलहुँ। आबो बिसरु ओसभ। जीवन बहुत छोट अछि। जे समय बाँचल अछि तकर सही उपयोग कए लिअ।”

मोबाइल फोनसँ हुनकर अबाज सुनितहि सभ शांत भए गेल। माहौल फेरसँ सुधरए लागल। सभ भजन-कीर्तनमे लागि गेलथि।

अचलाक संगे संग सभगोटे तय कए लेने रहथि जे ओ सभ आब कतहु नहि जेतीह,एहीठाम रहतीह आ बाँचल जिनगीक रचनात्मक उपयोग कए जन-जनमे नित्य नूतन जीवनक सृजन करबामे एक-दोसरकेँ सहयोग करतीह।

27

जखन लोकक समय अनुकूल रहैत छैक सभ ओकर आगू-पाछू करैत रहैत अछि। कारण सभकेँ चाही सुख,धन ,मान-सम्मान। यदि से सभ नहि भेटतैक,उल्टे तरह-तरहक परेसानी होमए लगतैक तखन केओ एहन लोकक संगे किएक रहत? अपन जान बँचा कए भागि नहि जाएत? ओएह हाल भेलनि भुवनकेँ। अपन एकोगोटे हुनका संगे नहि रहलनि। जकरासभक संगे मिलि कए ओ धुरफिंदी करैत छलाह सेहोसभ मौका देखि अपन रुखि बदलि लेलक। ओ सभ एहि जोगारमे छल जे कहुना भुवनक सभटा संपत्ति हथिआ ली। ताहि लेल ओ सभ हुनका गोलिआ लेने छलहे। दुर्भाग्यवश हुनकर स्वास्थ्य सेहो धोखा दए रहल छलनि। मनुक्खक देह कोनो लोहाक बनल तँ छैक

नहि। एकरा बहुत संयमसँ चलेबाक रहैत छैक तखनहि दीर्घायु भए सकैत छी। यदि दिन-राति कुमार्गमे रहब,कुपथ्य करैत रहब तखन देह कैक दिन ठहरत? हहरि जाएत। सएह हालमे भुवन पहुँचि गेल रहथि। आब हुनका जरूरी रहनि लोकक। मुदा कतहु केओ नहि देखानि। स्त्री,संतान,मित्रसभ संग छोड़ि देने रहनि। ठीके कहल गेल छैक-

यान्ति न्यायप्रवृत्तस्य तिर्यंचों अपि सहायताम्।

अपन्थानं तु गच्छन्तं सोदरोपि विमुञ्चति।।

ओहिदिन भुवन अपन कोलकाता स्थित घरमे पड़ल रहथि। मोन बहुत उदास रहनि। होनि जे केओ अपन आदमी लगमे रहैत। किछु गप्प-सप्प करितहुँ। मुदा से तँ संभव नहि अछि। लगमे मोबाइल फोन रहनि। फोन उठाबैत छथि आ शिप्राक नंबर लगा दैत छथि। घंटी बजैत रहि जाइत अछि मुदा ओमहरसँ कोनो उत्तर नहि भेटैत छनि,फोन कटि जाइत छनि। भेलनि जे शिप्रा टारि देलनि,गप्प नहि करए चाहैत छथि। मुदा से बात नहि रहैक। असलमे आश्रमसँ ओ सभगोटे नित्य लगपासक गामसभ चलि जाइत छलीह। ओहिठामक समाजसँ संवाद करैत जाइत छलीह। दिनभरि ई कार्यक्रमसभ चलिते रहैत छल। साँझमे ओ सभ थाकल-ठेहिआएलि अपन डेरापर वापस आबि जाइत छलीह। संगमे केओ मोबाइल फोन नहि लए जाइत छल जाहिसँ बीचमे कोनो व्यवधान नहि होनि। शिप्रा जखन साँझमे डेरा वापस अएलीह तँ भुवनक मिसकाल देखलथि। एकमोन होनि जे अन्ठा दी।

“एतेक दिनक बाद मोन पड़लनि अछि। हमसभ जीबिओ रहल छी कि नहि तकर कहिओ कोनो सुधि नहि लेलनि। आब की?”

फेर भेलनि जे गप्प कइए ली। की पता किछु विशेष बात कहबाक होनि। ओना हुनका बारेमे तरह-तरहक बातसभ तँ सुनबामे

अबिते रहैत छलनि । भए सकैत अछि जे गप्प कए लेलासँ किछु स्पष्टता होअए। बूझएमे आबए जे बात की अछि?

शिप्रा भुवनकेँ फोन करैत छथि।

“की बात?”

“बहुत दिन भए गेल छल, सोचलहुँ जे गप्प करी। मोन नीक नहि लागि रहल छल।”

“बहुत दिनपर मोन पड़लहुँ।”

“आब जे बीति गेल तकर की चर्चा करैत छी।”

“एहनो कहीं भेलैक अछि । जे लोक सभबात बिसरि जाए। चाहिओ कए से नहि कए सकैत छैक। मनुक्खक मोन कोनो मसीन नहि अछि जे ओकरा सुविधानुसार जखन चाही बंद कए दी वा खोलि ली।”

“हमर मोन ठीक नहि रहैत अछि । हम चाहैत छी जे सभटा कागज-पत्तर सरिआ जाइ। तेँ फोन केने रही।”

“हमरासभकेँ अहाँक कागज-पत्तर नहि चाही।”

“मुदा अचलाक बारेमे तँ सोचिऔक।”

“आब ओ कोनो दूधपीबा बच्चा नहि अछि । ओ अपन रस्ता स्वयं ताकि लेत।”

तकर बाद फोन कटि गेल। भुवन आर निराशामे डुबि गेलाह। कतहु कोन उमीद नहि बुझानि। ओमहर हुनकर लंपट दोस्तसभ सक्रिय भए गेल छल। हुनकर स्थिति आ परिस्थितिक फएदा उठा लेबए चाहैत छल । ओ सभ भुवनक फोन सुनैत रहैत छल । हुनकर शिप्रा संग फोनपर भेल लघुसंवादकेँ सुनलाक बाद ओकरसभक कान ठाड़ भेलैक। नहि तँ ओ सभ तँ निश्चिन्ते छल। सोचए जे किछुए दिनक बात छैक। ई मरत आ एकर सभटा संपत्ति हमसभ हथिआ लेब। आब

जखनसँ ई फोन सुनलक ओकरा सभकेँ तरह-तरहक शङ्का होमए लगलैक।

“मुदा कएल की जाए?”

“भुवनकेँ जल्दीसँ बिदा कए देल जाए?”

“ओ तँ अपने जा रहल अछि। मुदा ओकर परिवार?”

“ओकरे सभकेँ साफ कए देल जाए।”

“जे करबाक होअए से मुदा जल्दी करू। समय ठीक नहि बुझा रहल अछि।”

एहि तरहक गप्प-सप्प ओ बदमाससभ आपसमे करैत छल।

भुवन फोन अएलाक बाद शिप्रा परेसान भए गेलथि। ओ फोनपर भुवनसँ नीकसँ बात नहि कए सकलथि तकरो दुख होनि।

“आखिर ओ अपन लोक छथि। एतेक दिनपर फोन केने रहथि। कष्टमे रहथि। हुनकर बातकेँ नीकसँ सुनबाक छल।”

एहि तरहक विचार हुनकर माथमे राति भरि घुमैत रहि गेलनि। ओ सुति नहि सकलीह। भोरे जखन उठलथि तखनहु मोनमे ओएह बातसभ घुमैत रहनि। ओतबेमे संयोगसँ अचला चाह लेने आबि गेलीह। शिप्रा आ अचला संगे-संगे चाह पीबैत छथि। शिप्रा फोनपर भुवनसँ भेल बातक चर्चा अचलासँ करैत छथि। मुदा ओ टकसँ उत्तर दैत छथि-

“हमरा नहि चाही एहन धन।”

शिप्रा हुनकर मुँह देखैत रहि गेलीह।

अचला कोनो पाथरक बनल नहि छलथि। ओ भुवनक हालतिसँ दुखी रहथि। मुदा करतथि की? जेहन परिस्थितिसँ ओ आ शिप्रा गुजरल रहथि तकर बिसरबो आसान बात नहि छल। सालक-साल समय बीतैत रहल,मुदा भुवनकेँ हिनका लोकनिक कोनो परबाहि

नहि रहलनि। हुनकर जे मजबूरी रहल हेतनि मुदा ओ सभ तँ बहुत परेसानीमे समय बितओलक। से बात कोनो भुवनसँ नुकाएल नहि रहनि। फेर ओ सभ आश्रममे एकटा सुव्यवस्थित जीवन जीबि रहल छलीह। नित्य गंगामे स्नान,भजन कीर्तन आ मानव कल्याण हेतु निरंतर कएल जा रहल प्रयास हुनका सभक मोनकेँ तेना ने मोहित कए लेने रहनि जे आब ओहिसँ बाहर किछु सोचबो संभव नहि छल।

28

ओहिदिन अचला आ हमरा संगे जेबाक रहए। हमसभ आश्रमसँ पाँचकोस फटकी आयोजित कार्यकर्ता सम्मेलनमे सामिल होमए जाइत रही। हम अपना भरि अचलाकेँ मना करबाक प्रयास केलिऐक।

“ओ स्थान ग्रामीण क्षेत्रमे पड़ैत छैक। सुविधाक नामपर किछु नहि छैक ओतए। यदि मोनो खराब भेल तँ कोनो डाक्टर नहि भेटत। कोनो दबाइक दोकान नहि छैक। मनोरंजनक कोनो साधन नहि छैक। तेहन स्थानपर सात दिन रहब आ कार्यकर्तासभक संगे समय बिताएब कठिन भए सकैत अछि।

“मुदा ओहिठाम एतेक लोक कोना रहैत अछि? गाममे आर लोकसभ तँ होएबे करत। हमहूँ तहिना रहब। आखिर अहूँ तँ रहबे करब की नहि?”

आब हुनका की कहितिअनि?

“हम तँ जेना-तेना चलि जाएब। उजरी बस भोरे चलैत छैक से पकड़ि लेब। यात्रीसँ ठसाठस भरल रहैत अछि। ओहिमे मोसकिलसँ जगह भेटैत छैक। यदि ओ बस छुटि गेल तखन पैरे जाउ।”

“मुदा अहाँ तँ आब स्कूटरो चला लैत छी।”

“नवसिखुआ छी। असगरमे तँ कोनो बात नहि। मुदा यदि अहाँ संगे कोनो दुर्घटना भए गेल तँ अनेरे कलंक लागि जाएत।”

“एतेक केओ सोचए?”

“तखन अहीं कहू जे की कएल जाए?”

“हमरा विचारसँ तँ स्कूटरेसँ चलैत चली।”

“ठीक छैक। तखन तैयार भए जाउ। भोरे-भोर निकलि जाएब जाहिसँ समयपर हमसभ ओहिठाम पहुँचि सकी।”

अचलाक लेल एहिसँ प्रसन्नताक बात की भए सकैत छल?

अचला आ हम भोरे स्कूटरसँ बिदा भेलहुँ। आश्रमसँ पाँच कोस फटकी छल ओ गाम। धारक काते-काते हमर स्कूटर पूर्णगतिसँ चलि रहल छल। हमरा पाछू अचला बैसलि छलीह। हमरा लेल आ हुनको लेल ई एकटा नव अनुभव छल। एना एकांतमे ओहो स्कूटरपर बैसल हम दुनूगोटे अपन-अपन कल्पनाशीलताक पराकाष्ठापर पहुँचि रहल छलहुँ। देह कतहु आ मोन कतहु छल। आगू रस्ता कटल छल तकरो ध्यान नहि रहल। तेजीसँ चलि रहल स्कूटर एकाएक खधिआमे पहुँचि गेल। हम तुरंत ब्रेक लैत छी। स्कूटर धराम दए खसल। हम दुनूगोटे दू दिस खसलहुँ। रच्छ छल जे रस्ता खाली छल,आगू-पाछू केओ नहि छल। खसलाक बादो हमरा लोकनिकेँ मामुली चोट लागल छल। मुदा अचलाक ठेहुन लग खून टपकि रहल छलनि। हुनकर कपड़ा सेहो नीचाँसँ फाटि गेल रहनि। हम उठबाक प्रयास करैत छी। मुदा टांग झखा रहल अछि। ओमहर अचला कुहड़ि रहल छथि। आब की करी? किछु फुरेबे नहि करए। जेना-तेना बहुत मोसकिलसँ उठैत छी। लङड़ाइत आगू बढ़ैत छी। अचलाक हाथ पकड़ि उठाबक प्रयास करैत छी। ओहनो हालतिमे बहुत नीक लागल। कनी काल लेल जेना सभटा कष्ट बिला गेल। एकटा अपूर्व अनुभव होइत अछि। फेर भेल जे एहन विकट समयमे ई सभ सोचब उचित नहि। जल्दीसँ जेबीसँ रुमाल

निकालि हुनकर घावपर बान्हि दैत छी। फेर हुनका आरामसँ दूभिपर बैसबैत छी। बोतलसँ निकालि पानि दैत छिअनि। ओ पानि पीबैत छथि। क्रमशः हुनकर हालतिमे सुधार होमए लगैत छनि। हमरा जानमे-जान अबैत अछि।

अचलाकेँ चोट लागि गेलाक बाद हमसभ आगू नहि बढ़ि सकलहुँ। थोड़ेकाल ओतहि सुस्तेलाक बाद आश्रम वापस बिदा भए गेलहुँ। हमसभ कनीके आगू बढ़ल रही कि कानमे मधुर ध्वनि सुनाएल।

“ई के गाबि रहल छथि? कतएसँ एहन नीक अबाज आबि रहल अछि?” मोनमे ई प्रश्नसभ उठि रहल छल कि अचला कहैत छथि-

“लगैत अछि लगपासमे कतहु संगीत कार्यक्रम भए रहल अछि।”

“हमरो सएह बुझा रहल अछि।”

हमसभ गप्प कइए रहल छलहुँ कि एकटा चरबाह देखाएल। हम ओकरा पुछैत छी-

“ई गीत-नाद कतए भए रहल अछि?”

“कनीके फटकी।” - ओ रस्ता दिस इसारा करैत अछि।

“किएक ने हमसभ थोड़े काल ओहिठाम चली आ संगीतक आनन्द उठाबी?”

“सही कहलहुँ। हमरो सएह इच्छा अछि।”

हमसभ ओमहरे बिदा भए जाइत छी।

कनीके फटकी एकटा पैघ सामिआना लागल छल। ओतए सैकड़ो लोक बैसल संगीतक आनन्द लए रहल छलाह। सभसँ आश्चर्य एहि बातसँ भेल जे गीत गेनिहारि केओ आर नहि शिप्रा छलीह।

आश्रमसँ निकलि आइ ओ सभ एतहि आएल छथि । हुनकासभक संगे ओहिठामसँ किछु आओरगोटे आएल छथि । संगीतक बीच-बीचमे ओ सभ अपन बात सेहो रखैत छथि । आब बुझलिएक जे बात की छैक। अपन बात लोकक बीचमे रखबाक एकटा अभिनव तरीका ओ सभ प्रयोग कए रहल छलीह। संगीत सुनि केहनो लोकक मोन हरिआ जाइत अछि। संगीतो एहन जे शुद्ध हृदयसँ निकलल होइ। शिप्रा हमरा लोकनिकेँ अबैत देखि लैत छथि । ओ इसारासँ हमरोसभकेँ मंचपर बजा रहल छथि । हमसभ हुनकर आग्रहकेँ मानि मंचपर पहुँचि जाइत छी । बेरा-बेरी मंचपर बैसल सभगोटे अपन-अपन गीत सुनबैत छथि। अंतमे अचला विद्यापति गीत गबैत छथि -

"माधव! तूँ जुनि जाह विदेशे...।"

गीत सुनि हमरा अश्रुपात भए रहल अछि। कतेको श्रोतागण मंत्रमुग्ध छथि,वाह!वाह! कए रहल छथि। हमरा नहि बूझल छल जे अचला एतेक उच्चकोटिक कलाकार छथि।

संगीत कार्यक्रम आब समाप्तिपर छल कि हमर फोनक घंटी बाजि उठल।

"..."

"की कहि रहल छी?"

"सही सुनि रहल छी?"

"मुदा ई भेलैक कोना?"

"से अखन की कहल जाए? मुदा निश्चित रूपसँ कोनो प्रकारक षड़यंत्र भेल अछि।

ओहि समय संगीत कार्यक्रम चलिए रहल छल। फोन अएलाक बाद अचानक माहौलमे तनाव बढ़ि जाइत अछि । मंचपर बैसल लोकसभ एक-दोसर दिस ताकि रहल छथि।

“की भेल?” -अचला पुछैत छथि।

“सुनैत छी आश्रममे आगि लागि गेल अछि।”

“से कोना भेल?”

“कहि नहि सकैत छी। ओतए गेलेपर पता लागत।”

गीतनाद बंद भए जाइत अछि। लोकसभ अपन-अपन घर वापस बिदा भए जाइत छथि। हमहूँसभ आश्रम वापस होइत छी।

थोड़े काल आगू बढ़लाक बाद फेर फोन अबैत अछि-

“अहाँसभ बेसी परेसान नहि होउ। आगिपर काबू कए लेल गेल अछि।”

“मुदा आगि लगओलक के?”

“से पता नहि चलि सकलैक अछि, मुदा अनुमानतः एहिमे भुवनेक लोकसभक काज लगैत अछि।”

“बिलटक की हाल छैक?”

“ओ ठीक अछि। ओहि समयमे बिलट मुख्यद्वारिएपर छल। कहि रहल छल जे ओ बदमाससभकेँ चिन्हि गेल छल । पुलिस बिलटकेँ थाना लए गेल छैक। देखा चाही की होइत अछि?”

आगिसँ आश्रममे बेसी क्षति नहि भेल। ओकरा जल्दीए मिझा देल गेल। आश्रमक निर्माण तेहन अछि जे ओकरा बेसी क्षति नहि कएल जा सकल। एहि घटनामे भुवनक संगीसभक हाथ रहैक। पुलिस सेहो एही निर्णयपर पहुँचल छल। मुदा ओ सभ किछु कए नहि सकल।

साँझ धरि बिलट हाथ डोलबैत वापस आबि गेल। शुरुमे पुलिसकेँ ओकरोपर सक रहैक। मुदा से व्यर्थ साबित भेलैक। बिलटकेँ तँ ओ सभ अपना संगे लए जाए चाहैत छल। कारण ओकरा लगमे भुवनक बहुत रास जानकारी रहैक। मुदा से सफल नहि भेलैक। बिलटक जान बाँचि गेलैक। आश्रम सेहो सुरक्षित रहि गेल।

साँझमे श्वेतानन्दक मोबाइल फोन आएल-

“तूँ सभ परेसान नहि होअ। दुष्टसभक अंतिम समय आबि गेल अछि। तेँ ओ सभ एहन काज केलक अछि। हमसभ अपन काजमे लागल रही। ओएह ओकरसभक सही इलाज अछि। सभगोटे आरतीक हेतु प्रार्थनाभवनमे आबि जाह।”

हमसभगोटे तकर बाद प्रार्थनाभवन दिस बिदा भए जाइत छी।

29

जखन मनुक्खक समय खराब होइत छैक तखन सभकिछु विपरीते होइत चलि जाइत अछि। सएह हाल भेल रहनि भुवनकेँ। हुनकर स्वास्थ्य बहुत तेजीसँ खराब होइत गेलनि। लगमे केओ सेवा केनहार नहि रहनि। परिवारक लोकसभ संग छोड़ि देने रहनि। जे सभदिन हुनकासँ फएदा उठबैत रहल आब दाव खेला रहल छल। एहि प्रयासमे छल जे कहुना हुनकर सभकिछु हथिआ ली। एहि परिस्थितिमे हुनकर देह आ मोन दुनू हारि रहल छलनि।

ओहि दिन भुवन घरमे बैसले-बैसल बेहोस भए गेलाह। नौकर-चाकरसभ उठा-पुठा कए अस्पताल पहुँचा देलकनि। डाक्टरसभ जाँच केलाक बाद बहुत चिंतित रहथि। ओ सभ बेर-बेर परिवारक लोककेँ ताकथि। मुदा केओ भेटलनि नहि। हारि कए सिस्टरेकेँ सभटा बात बुझा देलखिन-

“हिनकर दुनू किडनी खराब भए गेल छनि। लिभर सेहो खतमे छनि। सुगर, रक्तचापसभ गड़बड़ाएल छनि। एहन हालतिमे ई अस्पताल आनल गेलाह अछि। हिनकर बेसी दिन बँचबाक हालति नहि छनि। ओना हमसभ भरिसक प्रयास कए रहल छी,अंत-अंत धरि

करिते रहब। मुदा जे वस्तुस्थिति अछि से हिनकर परिवारक लोक धरि पहुँचा देबनि।”

सिस्टर परिवारक लोककेँ तकैत रहि गेलि ,मुदा केओ भेटलैक नहि। ओतए केओ रहबे नहि करैक तँ भेटितैक कतए? आब कएल की जाए? अस्पतालसँ हुनका फेकलो तँ नहि जा सकैत छल। मुदा इलाजो करब मोसकिल छल। ताहि लेल चाहैत छल मोट रकम। एक-दू दिन एहिना ओ अस्पतालमे पड़ल रहि गेलाह। डाक्टरोसभ औपचारिकता करैत रहल । आखिर दोसर दिन दूपहर रातिमे हुनका जबरदस्त हृदयाघात भेलनि आ जाबे केओ बूझितए ताबे ओ एहि दुनिआकेँ छोड़ि चुकल छलाह। सिस्टरसभ जखन हुनका दबाइ देबए चाहलक तँ ओ टस सँ मस नहि भेलाह,मुँह खोलने रहि गेलाह। हुनकर ई हालति देखि सिस्टर डरा गेलि । ओ दौड़ि कए डाक्टरकेँ बजओलक । डाक्टरसभ बहुत प्रयास केलक। हुनकर छातीकेँ जोर-जोरसँ दबा कए सीपीआर देबाक प्रयास कएल गेल। बिजलीक झटका सेहो देल गेल। मुदा हुनकामे सुधार नहि भेलनि। सौंसे देहमे कतहु प्राण नहि रहनि। आखिर ओ सभ हुनका मृत घोषित कए देलनि।

मृत्युक समयमे भुवन लग अपन केओ नहि रहनि। हुनकर लास लेनिहार केओ नहि छल। हुनकर लासकेँ शवगृहमे राखि देल गेल। स्थानीय पुलिसकेँ सेहो सूचना देल गेल जाहिसँ भुवनक परिवारकेँ खबरि भेटि जाइ।

एमहर भुवनक लास अस्पतालक शवगृहमे पड़ल छल ,ओमहर ओकर दुष्ट संगीसभ ओकर संपत्तिसभकेँ हथिआबएमे लागल छल। कैकटा मकान तँ ओ सभ पहिनहि कबजा कए लेने छल। कोलकाताक बीचमे ओकर आवासटा बाँचल छल। आब ओ सभ तकरो कबजा करबामे लागि गेल छल। नोकर-चाकरसभ किछु विरोध केलकैक तँ ओकरासभकेँ मारि-पिटि कए भगा देल गेल। ओ सभ

करबे की करितए?जेना-तेना अचलाक फोन नंबर ओकरासभकेँ भेटलैक। ओहिपर फोन लगओलक-

“के बजैत छी?”

“हम छी भुवन बाबूक भनसिआ पंडित।”

“हँ, कहू की बात?”

“भुवन बाबू नहि रहलाह। हुनकर लास अस्पतालमे पड़ल अछि। केओ देखनाहर नहि अछि।

“हुनकर संगीसभ कतए छनि।”

“घोर अवसरवादीसभ अछि। एहनो हालतिमे ओ सभ हुनकर संपत्तिसभ कबजा करएमे लागल अछि। घरमे सेहो ताला ठोकि देलकनि अछि।”

भुवनक मृत्यु आ ओहिसँ जुड़ल समाचार सुनि अचला बहुत दुखी भए गेलथि। ओ जोर-जोरसँ कानए लगलीह। हुनका कनैत देखि बहुत रास लोकसभ ओतए जमा भए गेलथि। शिप्रा पूजा कए वापस आबि रहल छलीह। हुनका संगे किछु आर लोकसभ रहथि।

अचलाकेँ एना कनैत देखि ओ पुछैत छथि-

“की बात? एना किएक कानि रहल छैं?”

“बाबू नहि रहलाह?”

“से केना बूझलही?”

“केओ फोन केने छलाह।”

शिप्रा ई समाचार सुनितहि अत्यन्त दुखी भए गेलीह। जेना-तेना अचलाकेँ बुझाबक प्रयास करैत रहलीह। मुदा ओ अपनहु बहुत दुखी रहथि। ओ ई बात पहिनहिसँ बुझि रहल छलीह जे भुवनक समय खराब चलि रहल छनि। मुदा एतेक जल्दी चलि जेताह से के सोचि सकैत छल? आब तँ जे होएबाकक छल से भइए गेल। कोलकाताक

स्थिति हुनकासभकेँ बूझले छलनि। ओहिठाम जेबाक ककरो इच्छा नहि भेलैक। सभक विचार भेलैक जे भुवनक अंतिम संस्कार संगमेपर कएल जाए।

भुवनक मृत्युक समाचारसँ आश्रममे मौन पसरि गेल। मृत्यु होइते सएह चीज अछि। केहनो आदमी ने होअए मरलाक बाद ओकरा प्रतिए संवेदना भइए जाइत छैक। हम बिलटक संगे समाचार सुनि शिप्रा लग पहुँचैत छी। अचलो ओतहि छलीह। रहि-रहि कए कानए लगैत छलीह। मुदा एहनो परिस्थितिमे शिप्रा शांत छलीह। कनीको विचलित नहि छलीह। आपसमे विचार-विमर्शक बाद ई निर्णय भेल जे हम आ बिलट कोलकाता जाएब। भुवन बाबूक लास प्रयाग आनल जाएत आ एतहि विधि-विधानक संगे हुनकर अंतिम संस्कार आ श्राद्ध कएल जेतनि।

30

हम आ बिलट ट्रेनसँ कोलकाता बिदा होइत छी। रस्ताभरि बिलट भुवन बाबूक प्रसंगे तरह-तरहक संस्मरणसभ सुनबैत रहल।

"एकटा बात बुझलिऐक...?"

"की?"

"भुवन बाबू सभदिन रहस्ये रहि गेलाह।"

"से की?"

"की की कहू? हम तँ अपने छगुन्तामे रहैत छलहुँ। जखन भुवन चुरा-दही दोकानक पाछू तरह-तरहक गलत लोकसभ जमा होइत छल आ आपसमे झगड़ा करए लगैत छल तँ हम कैक बेर तंग भए जाइ। बुझेबे नहि करए जे की करी? हमर तँ ओ जीबिका छल। बढ़िआँ फएदा भए जाइत छल। ओहि चूरा-दही दोकानक नाम भए गेल रहैक। मैथिलसभ एहिठाम भोजन कए बहुत संतुष्ट होइत छलाह। संगे ओ

स्थान मैथिल लोकनिक हेतु एकटा चौपाड़ि सेहो भए गेल छल। मुदा ककरो किछु पता नहि रहैक जे ठीक ओकरे पाछूमे कोन काज भए रहल अछि?”

“तूँ भुवन बाबूकेँ कहलहुन नहि?”

“कैक बेर कहलिअनि। मुदा ओ टरका देथि। ध्यान नहि देथि। हमहूँ चुप भए जाइ। घरक लोक सेहो हुनकासँ परेसान छल। जकरा-तकरा संगे घर लेने आबथि। घर नहि ओ महाविनाशक अड्डा भए गेल छल। बादमे तँ भुवन बाबूक अनुपस्थितिओमे ओ सभ घर आबि जाइत छल आ कैकदिन धरि पड़ल रहैत छल। एहि बातसँ शिप्रा बहुत परेसान रहल करथि। तकर बाद तँ जे सभ भेलैक से देखबे केलिऐक। विनाश काले विपरीत बुद्धिः...।”

“आब की कएल जाए?”

“आब बँचले की अछि?”

“कोलकाताक अधिकांश संपत्ति हुनका रहितहि ओ सभ हथिआ लेने छल। हुनकर घरेटा बाँचल छल। आब ओहो कहिआ धरि रहत तकर कोन ठेकान?”

“की पता ओ सभ घरो हथिआ लेने होअए?”

“भए सकैत अछि। कारण ओकरासभकेँ नीकसँ बूझल छैक जे शिप्रा वा अचला एतए घुरि कए नहि आओत। तखन संपत्ति के राखत?”

“शिप्रा आ अचला हमरा सभक संगे अबितथि तँ साइत किछुओ बचाओ होइत।”

“शिप्राकेँ आब ओहि वस्तुसभक कोनो मोह नहि छैक। अचलाकेँ तँ शुरुएसँ ओतए मोन नहि लगैत छल। जहिआसँ अहाँ कोलकाता छोड़लहुँ ओ बेचैन रहैत छलीह। ओ सभ आश्रमे आबि कए शांत भेलीह।”

“हम-तूँ कइए की सकैत छी? जे भावी से होएबे करतैक।”

“पहिने एहि काजसँ निपटि ली, फेर देखल जएतैक।”

“सही कहलह।”

एहिना गप्प-सप्प करैत दुनूगोटे ट्रेनमे हमसभ सूति रहलहुँ। जखन निन्न टूटल तँ ट्रेन हावड़ा पहुँचि रहल छल। हम बिलटकेँ उठबैत छी। अपन सामानसभ सरिअबैत छी। बिलट सेहो उठि जाइत अछि। दुनूगोटे ट्रेनसँ उतरि जाइत छी।

हावड़ा टीसनपर ट्रेनसँ उतरि हमसभ चोट्टे अस्पताल पहुँचलहुँ। अस्पतालक गेटेपर चौकीदारसँ शवगृहक जानकारी लेलहुँ। ओहिठामसँ पचास मीटर फटकी दहिना कातमे शवगृह छल। हमसभ ओतए पहुँचैत छी। ओहिठामक कार्यरत कर्मचारीकेँ भुवन बाबूक लासक बारेमे कहैत छिऐक।

ओ चट दए कहलक-

“हुनकर लास तँ भोरे केओ लए गेलथि।”

“के छलाह ओ सभ?”

“से हम नहि कहि सकैत छी। अहाँ डाक्टर साहेबसँ पता कए सकैत छी।”

हमसभ घंटो अस्पतालमे बौआइति रहि गेलहुँ। संबंधित डाक्टरक पता नहि चलल। केओ किछु,केओ किछु कहैत रहि गेल। हारि कए हमसभ निदेशकक कार्यालयमे गेलहुँ। ओहिठाम निदेशकक पीएसँ सभ बात कहलिऐक। ओ सभटा जानकारी लेलक आ कहलक-

“अहाँसभ एतहि बैसू। हम फोनसँ सभबातक जानकारी लैत छी।”

हमसभ पीए साहेब लग बैसल छी। ओ कैकठाम फोन करैत छथि। आखिर हुनका शवगृहक प्रभारीसँ पता लगलनि जे भुवनक

शव हुनकर परिवारेक लोक लए गेलथि। हम अपना भरि हुनका बुझेबाक प्रयास करैत छी।

“हुनकर परिवारे दिससँ हमसभ आएल छी। आओर केओ हुनकर परिवारमे अछिए नहि। हुनकर पत्नी आ बेटी प्रयागराजमे छथि। ओएहसभ हमरासभकेँ पठओने छथि। तखन एना कोना भेल?”

“आब से हमसभ की कहि सकैत छी? अहाँकेँ किछु परेसानी अछि तँ पुलिससँ संपर्क कए सकैत छी।”

ओ इसारासँ पुलिसबूथ देखा देलाह। हमसभ सोच-विचारमे पड़ि जाइत छी। एहनो भए सकैत अछि से नहि सोचने रही।

हम आ बिलट ओहिठामसँ उठि जाइत छी। दुनूगोटे बहुत थाकि गेल रही। कनीके फटकी अस्पतालक जलपानगृह रहैक। ओतए जाइत छी। किछु जलखै करैत छी। चाह पीबैत छी। संगे आपसमे विचार-विमर्शो करैत छी।

हम आ बिलट पुलिस बीट लग जाइत छी। एकटा पुलिस चाह पीबि रहल छल। बीच-बीचमे सिगरेट सेहो धुकि रहल छल। हमसभ अपन बात कहबाक प्रयास करिऐक। ओ किएक सुनत। बंगालीमे जखन कहलिऐक तखने ध्यान देलक। हमरसभक बात सुनि ओ तेना ने मुँह बना लेलक जेना हमहीसभ गलती केने छी। एकटा दोसर पुलिस बेर-बेर बिलटकेँ डिठिआ रहल छल। आखिर हमसभ ओहिठामसँ बिदा होमए चाहलहुँ। मुदा दोसर पुलिस बिलटकेँ इसारासँ रोकि लेलक।

“तोहर की नाम छह?”

“बिलट।”

“तोरा विरुद्ध तँ केओ केस केने छह।”

“कथीक केस?”

“बेसी चलाक नहि बनह। साफ-साफ बाजह जे तूँ एना किएक केलह?”

“लएह। हमसभ अपने परेसानीमे छी। प्रयागराजसँ भुवन बाबूक लास लेबए आएल छी। हुनकर लास भेटि नहि रहल अछि। अहाँसभ मदति की करब जे उल्टे नव-नव झंझटि कए रहल छी।”

“झंझटि हम करैत छी की तूँ सभ से पता लागि जेतह।”

बिलट कतबो प्रयास केलक, पुलिस ओकरा ओहिठामसँ ससरए नहि देलकैक। ओकरा संगे हमहूँ ओतहि बैसल रहि गेलहुँ।

31

अस्पतालक हाजतिमे बंद बिलटक ध्यान बितल बातसभपर चलि गेलैक। जखन ओ नेना छल केना ओ कोलकाताक सड़कपर भोरे-भोर अखबार बेचैत छल। दिनभरि पार्कसभमे चिनिआबदाम बेचैत छल। कखनहु खेलक,कखनहु भूखले रहि गेल। एकदिन एहने हालतिमे भुवनबाबू भेटल रहथिन। ओकरा अपन चुरा-दहीक दोकानपर काज धरा देने रहथिन। तकरबादे ओकर हलाति सुधरल छल। ओ मनुक्खक जिनगी जीबि रहल छल। एहिमे भुवनबाबूक बहुत योगदान छलनि। तेँ कतबो केओ किछु कहनि बिलटक हुनका प्रति सम्मान अंत-अंत धरि बनल रहलनि। मुदा जखन जहाजे डुबि गेल तँ ओकरा छोड़नहि कल्याण छल। भुवन बाबू सेहो ओकरापर बहुत विश्वास करैत छलाह। हुनकर बहुत रास गोपनीय जानकारी बिलट लगमे रहैत छलनि। तेँ बदमाससभ ओकर पाछू पड़ल छल। ओ सभ चाहए जे बिलट ओकरा गुप्त बातसभ कहैत रहैक। जखन से नहि भेलैक,तँ ओकर नाम कोनो-कोनो केससभमे लगा देलक। पुलिस

लगमे ओकर फोटो रहैक। सामनेमे बिलटकेँ देखितहि ओ सभ ओकरा चिन्हि गेल आ पकड़ि लेलक।

हम बहुत प्रयास केलहुँ जे पुलिस बिलटकेँ छोड़ि दैक। मुदा से संभव नहि बुझा रहल छल। की करी किछु बुझा नहि रहल छल। एहन हालतिमे बिलटकेँ छोड़लो नहि जा सकैत छल। ओतए बैसल रहलासँ आगूक काजक कोनो प्रगतिओ नहिए भए रहल छल। हमर मोन आश्रममे टांगल छल। ओ सभ आतुरतासँ हमरसभक प्रतीक्षा कए रहल हेतीह। मुदा हमसभ तँ दोसरे-तेसरे लफड़ासभमे फँसल जा रहल छलहुँ। मुदा हमसभ करबे की करितहुँ? काज आगू बढ़बाक बदलामे ओझराइते चलि गेल। जे सोचलो नहि जा सकैत छल से सभ भेल। शवगृहसँ भुवनक लासे बिला गेल कि केओ लए गेल। कहि नहि कोन केसमे बिलट फँसि गेल कि फँसा देल गेल। बिलटसे हमरा की मदति करैत ,अपनहि परेसानीमे पड़ि गेल अछि।

हम उदास पुलिस चौकीक सामनेमे राखल बेंचपर बैसल रही। इएहसभ सोचैत रही कि पुलिस हमरा लग आएल। कानमे किछु फुसफुसाएल।

“मुदा हमरा लगमे तँ ओतेक टाका नहि अछि। फेर हमरासभकेँ वापसो जेबाक अछि।”

“जे छह से लाबह।”

हम जेबीमे हाथ दैत छी। किछु टाका निकालि पुलिसकेँ पकड़ा दैत छी। ओ दोसर पुलिसकेँ इसारा करैत अछि। बिलटकेँ हाजतिसँ बाहर कए देल जाइत अछि। ओकर जानमे-जान अबैत अछि। हमसभ तुरंत ओहिठामसँ घसकि जाइत छी।

हम आ बिलट पैरे-पैरे अस्पतालसँ बिदा भेलहुँ। कोलाकताक सड़क बिलटक हेतु गाम-घर छल। एतेक परेसानीओमे ओ रहि-रहि कए कुदि उठैत छल। हे आब ई आओत,ओहिठाम ई छैक,कनीके

आगू फलना बाबू रहैत छथि। कनीके कालक बाद भुवन चुरा-दहीक दोकान आबि गेल। ओहिठाम मात्र नामपट्ट लागल छल। आओर किछु नहि बाँचल छल। ओतए पहुँचि बिलट चुपचाप ठाढ़ भए गेल। ओकर हालति देखि हमरा चिंता होमए लागल।

आखिर हम ओकरा टोकलिऐक-

“बिलट! बिलट!”

बिलट कथी लेल किछु बाजत। ओ एकटक चुरा-दहीक दोकानकेँ देखि रहल छल कि ओकर ध्यान पाछू उठि रहल धुआँपर पड़लैक।

“ई धुआँ कतएसँ उठि रहल अछि?”

“ओहिठामसँ लगीचेमे भुवन बाबूक घर छनि। कहीं...?”

हम आ बिलट धुआँ दिस बढ़ैत छी। ओना लगैक जेना थोड़बे दूरपर अछि। मुदा रस्ताक हिसाबे ततबो लग नहि रहैक। हमसभ चलैत-चलैत भुवन बाबूक घर लग पहुँचि जाइत छी। ओहिघरसँ धुआँ उठि रहल छल। लगपासमे लोकसभ जमा भए गेल छल। दमकल सेहो आबि गेल छल। तथापि आगिपर काबू नहि भए रहल छल। हम ई दृश्य देखि चिंतित छी। आखिर ई सभ कोना आ किएक भए रहल अछि? कोलकाता अएलहुँ कोन काजे आ देखि की रहल छी? हमसभ कइए की सकैत छलहुँ?

“भुवन बाबूक घरक ई हाल ...?”

“मुदा आगि लागल कोना...?”

“किछु गड़बड़ तँ अछिए। ओमहर हुनकर देहान्त भेलनि आ एमहर घरमे आगि लागि गेल कि लगा देल गेल?”

लोकसभ इएहसभ आपसमे चर्चा कए रहल छल। हम आ बिलट हुनका लोकनिक बात बहुत ध्यानसँ सुनि रहल छलहुँ। एतबेमे

किछुगोटे कारसँ उतरल,बिलट दिस झपट्टा मारलक आ ओकरा जबरदस्ती कारमे बैसा कए लेने चलि गेल । जाबे हम किछु बुझितहुँ,साकंछ होइतहुँ ताबे खेल खतम छल।

अपना आँखिक सामने बिलटक अपहरण देखि हमरा तँ जेना लकबा मारि देलक। किछु बाजल नहि होअए। चुपचाप ठाढ़ रही। जखन ओ कार बहुत फटकी चलि गेल तँ चिकरए लगलहुँ-

“जुलुम भए गेल। अन्याय भए गेल। बदमाससभ बिलटक अपहरण कए लेलक। दौड़ैत जाउ औ लोकसभ...।”

कथीलेल केओ हमर बातपर ध्यान देत। सभ आओर फटकी होइत गेल। जे जमहरे रहए तेमहरे चलि जाइत रहल। हम असगरे चिचिआइत रहि गेलहुँ। चिकरैत-चिकरैत हमर अबाज बाझि गेल। मुदा ककरो कोनो प्रकारक सहयोग नहि भेटल। बिलट कतए गेल,कहाँ गेल,ओकरा संगे की भए रहल छैक तकर किछु थाह नहि लागि सकल।

32

जखन बिलटकेँ तकबाक सभ प्रयास निष्फल भए गेल,पुलिसो किछु नहि केलक तखन हम हारि कए आश्रम वापसीक तैयारीमे लागि गेलहुँ। टिकट कीनबाक हेतु टिकट खिड़की लग पाँतिमे ठाढ़ रही कि गामसँ माएक फोन आएल।

“गोर लगैत छिऔ। कोना छैं?”

“ओना तँ कोनो दिक्कति नहि अछि मुदा आब असगरि मोन नहि लगैत अछि।”

“से किएक? लगपासक बुढ़िआसभ तँ अबैत हेतौक ने?”

“केओ नहि अबैत छै रे बौआ! एकटा कौआ डाक नहि दैत अछि। सभ आपसमे सिखा-बुद्धि कए लेने छैक। केओ हमर घर दिस नहि टपैत छै।”

“एना किएक भेलौ? पहिने तँ एहन हालति नहि रहैक?”

“की कहिऔ? ओकरासभकेँ होइत छैक जे एना तंग करबैक तँ बुढ़िआ जल्दी मरि जाएत आ ओकर घराड़ी हथिआ लेब।”

“से कतहु भेलैक अछि?”

“आब गाम-घरमे इएहसभ होइत छैक। ककरो केओ नहि छैक।”

“तखन की करी? हम तँ तोरा कैक बेर कहलिऔक जे हमरे संगे रहै मुदा तोरा गामे नीक लागौ।”

“नहि, नहि। आब गाममे नहि रहब। आब जे समय बाँचल अछि से तोरे संगे रहब।”

“एहिसँ नीक की होएत। हमरो सदिखन तोहर चिंता लागल रहैत अछि। हमरे लग आबि जो।”

“आबि कोना जाएब? एहिठाम केओ संग नहि देत। तोरे आबए पड़तह।”

“हमरा तँ किछु समय लागि जाएत।”

“से किएक?”

“भुवन बाबूक मृत्यु भए गेलनि। हुनकर अंतिम संस्कार, श्राद्ध करबाक छैक। ओहीमे ओझराएल छी। ओहिसँ निपटिते हम गाम आबि जाएब।”

“पता नहि ताबे हम बाँचलो रहब की नहि?”

“एना किएक बजैत छैं? अखन तोरा किछु नहि हेतौक।”

“से कोनो हम भगवान छी। दस तरहक बिमारी लागले अछि। बूढ़क देह करवन टगि जाएत तकर कोन ठेकान।” सोचने रही जे अंतमे संगम स्नान कए लेब।”

“चिंता नहि करै। हम जल्दीए गाम अबैत छी।”

माए कानए लागलि। हमरो बहुत कष्ट भेल। मुदा तेहन मकड़जालमे फँसल रही जे ओहिसँ निकलब मोसकिल बुझा रहल छल। हम टिकट लेलहुँ। तकर बाद ओहीठाम प्रतीक्षालयमे स्नान केलहुँ, किछु जलखै केलहुँ। कनी काल अखबार पढ़लहुँ। ताबते ट्रेन आबि गेल। हम जल्दीसँ ट्रेनमे चढ़ि गेलहुँ।

ट्रेनमे आसानीसँ हम अपन शायिका ताकि लेलहुँ। हम अपन शायिकापर बैसि जाइत छी। नीचाँमे अपन सामान राखि दैत छी। डिब्बामे तरह-तरहक यात्रीसभ छलाह। थोड़े काल तँ रमन-चमन होइत रहल। क्रमशः यात्रीलोकनि सुतबाक जोगारमे लागि गेलाह। हमहूँ अपन शायिकापर पड़ि रहलहुँ। मुदा निन्न नहि होअए। रहि-रहि कए माए मोन पड़ि रहल छलि। बातो उचित छल। एहि बएसमे ओ असगरि गाममे रहथि ,सेहो उचित नहि अछि। मुदा कएल की जाए? आश्रमक स्थिति अखन डमाडोल भए गेल अछि। भुवनक मृत्युक बाद अचला आ शिप्रा बहुत परेसानीमे छथि। ओएहसभ तँ ओहिठामक प्राण छथि। सभटा व्यवस्था देखि रहल छथि। सैकड़ो दुखी आत्मासभक कल्याण कए रहल छथि। इएहसभ सोचैत-सोचैत हम रातिभरि जगले रहि गेलहुँ। भोरे ट्रेन प्रयागराज टीसन पहुँचि गेल। प्लेटफार्म संख्या एकपर ट्रेन रुकल। हम ट्रेनसँ उतरि प्लेटफार्मपर पैर रखनहि छलहुँ कि अचलाक फोन आएल..

“कतए छी?”

“प्रयागराज टीसनपर अखनहि पहुँचलहुँ अछि।”

“हमसभ अहींक प्रतीक्षा कए रहल छी।”

“हम से बात बूझि रहल छी।”

“आखिर भेलैक की?”

“किछु निजगुत पता नहि लागि सकल। एतबा तँ तय अछि जे भुवनक अंतिम संस्कार ओ सभ कोलकातामे झटपटमे कए देलकनि। कतए केलकनि, के केलकनि तकर कोनो जनतब नहि भए सकल। किछु प्रयासो करितहुँ ताबे बिलटक अपहरण भए गेल।”

“से कोना?”

“फोनपर कतेक बात कहू। अबैत छी तँ सभटा बात कहब।”

हम जल्दीसँ आश्रम दिस बिदा भए जाइत छी। थोड़बे आगू बढ़ल होएब की अचलाक फेर फोन आएल-

“हमसभ संगमे पहुँचि रहल छी। ओहीठाम बाबूक श्राद्ध कएल जाएत। अहूँ ओतहि आबि जाउ।”

“ठीक छैक।”

हम टीसनसँ सोझे संगमपर पहुँचैत छी। ओहिठाम पहिनेसँ शिप्रा,अचला आ समस्त आश्रमबासी लोकनि उपस्थित रहथि। सभगोटे भुवनकेँ श्रद्धांजलि देलनि। विधि-विधानसँ अचला हुनकर पिंडदान कएलनि। गंगा कातेमे खोपड़ी बना कए हुनकर श्राद्ध कएल गेलनि। ओहि बीच हमसभगटे धर्मशालामे ठहरलहुँ। तेरहम दिन माँछ-भातक विध भेल। तकर बाद हमसभ वापस आश्रम प्रस्थान केलहुँ। एहि बीचमे भुवनक प्रसंगे तरह-तरहक बात होइत रहल। जकरा जे मोन भेलैक,बजैत रहल। मुदा शिप्रा किछु नहि बाजथि। एकदम मौन भए गेलथि। हुनकर मनःस्थिति देखि हमरा कए बेर चिंता होमए लगैत छल। फेर होअए जे तात्कालिक विषाद छनि,समय बितलापर अपने ठीक भए जेतीह। आओर कोनो समाधानो तँ नहि छल। बारहदिन धरि नून बारने रहलीह,भोजनोमे मात्र एकभुक्त सेहो अनोन। तेँ अचलाक हालति तँ बहुत गड़बड़ लगैत छलनि। द्वादशा

रातिमे जखन भोजन केलनि तँ निसाँ जकाँ लागि गेलनि। भोजनक बाद अपन कोठरीमे पड़ि रहलीह। हम हुनका सौंसे तकने फिरी। कतहु नहि देखाथि। बादमे केओ कहलक जे ओ सुति गेल छथि।

भुवनक लास अस्पतालक शवगृहसँ बिलुप्त होएबाकक घटनाक जाँच पुलिस बहुत दिन धरि करैत रहल। अंततोगत्वा ओकरा सही बात पता लगलैक। बात ई भेल रहैक जे भुवन अपन व्यापारक काजसँ बाहर जाइत-अबैत रहैत छल। ओही क्रममे ओ एकबेर मुंबई गेल रहए। ओतए एकटा महिलासँ दोस्ती भए गेलैक। ओ महिला बादमे भुवनक संगे कोलकाता आबि गेलि। भुवन ओकरा मकान कीनि देलथि। सभ तरहक सुविधा देलथि। हुनका लोकनिक आपसी संबंध ततेक गहींर होइत गेल जे बादमे तँ कैकदिन भुवन ओतहि रहि जाथि। शिप्राकेँ कहबा देथि जे ओ काजसँ बाहर छथि। मुदा एकबेर शिप्रा हुनका दुनूगोटेकेँ कोलकाता बजारमे घुमैत देखि लेलथि। तकर बाद जे झंझटि शुरु भेल से बढ़िते गेल। आओर तरहक परेसानीसभ तँ शिप्रा बरदास करैत रहलीह,मुदा एहि घटनाक बाद हुनकर धैर्य टूटि गेलनि ओ बहुत तमसा गेलीह। तकर बाद तँ जे भेल से सभ देखलक। भुवन बरबाद भए गेलाह। किछु नहि बाँचल। पुलिसकेँ ईहो पता लागि गेलैक जे भुवनक लासो ओएह महिला उठा लेने रहैक।ओ अपनाकेँ भुवनक असली उत्तराधिकारी साबित करबामे लागि गेल जाहिसँ ओकर संपत्ति ओकरा भेटि जाए। ताहि लेल ओ बदमाससभकेँ सेहो मदति लेबए चाहलक। मुदा से उल्टे पड़लैक। बदमाससभकेँ भुवनक भितरिआ बातसभ पता लगैत रहलैक आ ओ सभ तकर अनुचित फएदा उठओलक।

बिलट भुवनक विश्वस्त आदमी छल। भुवन अपन बहुत रास संपत्ति ओकरे नामे बेनामी करओने छलाह। बिलटकेँ एहि बातक जनतब नहि रहैक। मुदा भुवनक बदमास संगीसभकेँ एहि बातक जानकारी चलि गेलैक। ओ सभ बिलटक पाछू एहीलेल पड़ि गेल छल।

ओ सभ बिलटसँ संपत्ति अपना नामे करेबाक प्रयासमे छल। एहि बातक हबा बिलटकेँ लगलैक। ओ मौका पाबि सभटा कागज-पत्तर लए ओकरासभक कबजासँ भागल। बिलट ओहिठामसँ श्राद्धक दूदिनक बाद आश्रम पहुँचल। आश्रम पहुँचि बिलट सभबात शिप्राकेँ कहलकनि ,सभटा कागज-पत्तर हुनका सुनझा देलकनि। ई सभटा संपत्ति अहाँक अछि। एकरा अपना नामे करबा लिअ।

“हम की करब ई संपत्ति लए कए?”

“से तँ अहाँ जानी। मुदा हमरा एहिभारसँ मुक्त करू।”

“यदि तोहर सएह इच्छा छह तँ एकरासभकेँ आश्रममे दान दए दहक।”

“जे अहाँक विचार।”

तकरबाद बिलटसभटा संपत्ति आश्रमक नामे कए देलक आ निश्चिन्त भए आश्रमक काजमे लागि गेल।

33

एतेक दिन हमर माए असगरि गामेमे रहि गेलीह,मुदा कहिओ हमरा संगे रहबाक हेतु तैयार नहि भेलीह । हुनका बूझल रहनि जे सहरमे हमरो हालति तेहने अछि। गाममे सभ कष्ट सहिओ कए अपन जगह धेने रहलीह। मुदा आब देह जबाब दए रहल छनि। अपनेसँ चाहो बनबएमे दिक्कति होइत छनि। दोसर-तेसर के सदिखन लागल रहतनि? आब हुनकर जीवन मात्र टाका पठा देलासँ नहि चलएबाला अछि। हुनका चाही सेवा,देख-रेख। तेँ हम हुनका बहुत आग्रह केलिअनि जे हमरे संगे रहथि। ओहिसँ हुनका तँ जे आराम हेतनि से हेतनि,हमरा बहुत सुविधा भए जाएत। ओना किछु करी नहि करी मोन सदिखन हुनकेपर टांगल रहैत अछि। कैक राति भरि निन्न नहि होइत अछि।

गाममे एतेक परिवर्तनक अछैत हमर माए अखनहुँ पुरनका खपरैल घरमे एकसरि पड़ल रहैत छलि। वर्षाक समयमे सौंसे घर चुबए लगैत छैक। ककरा कहितैक?के मदति करितैक? जीविका हेतु अंत-अंत धरि दिन-राति संघर्ष करैत रहल। कतबो कष्ट सहलक,मुदा हमरा कहिओ अपन दुख नहि कहलक,कहिओ गाम छोड़बाक चर्चो नहि केलक। हमर फोन आबि जाइ,ओ संतुष्ट भए जाए। मासमे एकबेर हमर मनीआर्डर भेटि जाइ ओहीसँ अपन गुजर कए लिअए। बेर-कुबेर दोसरोकेँ मदति कए दैक। मुदा जखन देहे खसि पड़लैक तँ की करैत?

एहिबेर जखन हम माएकेँ हमरे लग चलि अएबाक आग्रह केलिऐक तँ ओ मानि गेलि। हम तुरंत गाम जेबाक टिकट बनेलहुँ। अचलाकेँ सभबात बुझा देलिअनि। ओ सभ आश्रम आबि गेल रहथि। ओहिठामक दिनचर्या सामान्य भेल जा रहल छल। भुवन बाबू जहिना कमेलाह,तहिना गमेलाह। हुनकर अर्जित संपत्ति परिवारक किछु काज नहि आएल,हुनको काज नहि आएल आ हुनका रहतहि बरबाद भए गेल। जे कनी-मनी बाँचल छल से हुनकर मृत्युक बाद हुनकर बदमास संगीसभ स्वाहा कए देलक। ओहिसभसँ शिप्राकेँ कोनो मतलब नहि रहि गेल रहैक,अचलाक तँ प्रश्ने नहि उठैत अछि। ओ तँ शुरुएसँ ओहिसभसँ फराक रहलथि। हम दोसर दिन साँझमे गामक ट्रेन पकड़ि लेलहुँ। भोरे आठ बजे ट्रेन मधुबनी टीसन पहुँचल। हम ट्रेनसँ उतरैत छी,एमहर-ओमहर देखैत छी। फेर चिर परिचित सड़कपर अपन गाम दिस बिदा होइत छी।

कैक सालक बाद हम गाम वापस आएल रही। गाम बहुत बदलि गेल छल। सौंसे कोठे-कोठा बनि गेल छल। गाममे सदरिकाल बिजली रहैत छल। घरे-घर रंगीन टीभी लागि गेल छल। सभक हाथमे मोबाइल फोन ,इन्टरनेट सुविधा समेत रहैत छल। लोक जखन चाहए,जतेक काल चाहए फोनपर मगनीमे कतहु बतिआ सकैत अछि। सभ फेसबुक आ ह्वात्सपपर लगले रहैत अछि। मुदा लगपासमे

साइते ककरोसँ बतिआएत। यदि सामने देखा जेतैक तँ प्रयास कए कात भए जाएत। हँ,खिधांस करबाक कोनो अवसर नहि छुटबाक चाही। ताहिमे की शिक्षित,की मूर्ख सभ एके रंग।

हम गाम पहुँचलाक बाद सोझे अपन घर पहुँचलहुँ। रस्तामे केओ नहि देखाएल। सभ अपन घरे-घर बंद छल। ककरोसँ ककरो कोनो मतलब नहि। एक दिन बितल,दू दिन बितल। हमरासँ भेंट करए केओ नहि आएल। हमरा वापसो होएबाकक छल। वापसी टिकट संगे अनने रही। माए जरूरी सामानसभ ओरिआ रहलि छलीह। हम सोचलहुँ जे एकबेर गाम घुमि ली। पता नहि फेर कहिआ आबि सकब,के रहत के नहि रहत? समयक कोन ठेकान?

हम सौंसे गाम घुरि गेलहुँ। ककरो कोनो लसि नहि। कैकटा बूढ़सभ स्वर्गबासी भए चुकल रहथि। एकाधटा जे बाँचलो छलाह से अपने घरमे उपेक्षित कहुना कए समय काटि रहल छलाह। भरिमोन गप्पो करबासँ डराइत छलाह। नवतुरिआसभ अपने रंगमे रंगल छलाह। गामो आब सहरे जकाँ बेदरंग लागि रहल छल। थोड़बे कालमे वापस अपन घर आबि गेलहुँ। ताबे माए अपन मोटा-चोटा बान्हिए लेने रहथि। मधुबनी टीसन जेबामे आधाघंटा तँ लगबे करैत। हम किछु आओर पहिने तैयार भए गेलहुँ। माएकेँ जाइत देखि लगपासक बूढ़ीसभ जमा भए गेलीह। माए हुनकासभसँ गला मिललीह,मोन भरि कनलथि आ हमरा संगे बिदा भए गेलीह।

हमसभ जेना-जेना आगू बढ़ि रहल छलहुँ ,गाम तेना-तेना पाछू छुटि रहल छल। गामक खेत-पथार,कलम-गाछी,पोखरि-इनार ,लोक-बेदसभ माएकेँ पछोड़ कए रहल छल। ओ हमरा कतेको बितल बातसभ कहैत रहलि। ककरा संगे की भेलैक? केना गामक मंदिरपर यज्ञ भेल रहैक ,केना गाममे नबाह होइक इएहसभ भरि रस्ता बितिआइत रहलि। गप्प करैत-करैत हमसभ टीसन पहुँचि गेल रही। ट्रेनक घंटी बाजि चुकल छल। हमसभ प्लेटफार्मपर साकंछ रही।

टिकट रहबे करए। ट्रेन अबितहि अपन डिब्बामे चढ़ि गेलहुँ। ट्रेन सीटी मारलक आ बिदा भए गेल। ट्रेन आगू बढ़ैत गेल आ गाम पाछू छुटैत गेल। माए उदास मोने गाम दिस देखैत रहि गेलि।

34

ट्रेनमे कहि नहि हम कखन सुति रहलहुँ। मुदा माए जगले रहए। हम कैकबेर करोट बदली तँ ओकरा टुकुर-टुकुर करैत देखिऐक। हम कहबो करिऐक जे सुति रहै। हम औंघाएल रही। बेसी किछु नहि बूझि सकलिऐक। ओकरा कहि नहि की की सोचाइत रहलैक? भोरे जखन ट्रेन प्रयागराज पहुँचल तँ यात्रीसभ उतरए लागल। हम माएकेँ उठेबाक प्रयास केलहुँ। लागए जेना किछु कहए चाहैत अछि,मुदा किछु बाजए नहि। कोनो संकेतो नहि। ओ अखनहु एकटक देखि रहल छलि। ओकर हालति देखि कए हमरा बहुत चिंता भेल,मोनमे अनिष्टक शङ्का भेल। हमर देह थर-थर काँपि रहल छल।

“हे भगवान! ई की भए रहल अछि?एहन अनर्थ किएक भए रहल अछि? कतेक मनोरथसँ हम ओकरा आनि रहल छलहुँ। सोचने रही जे ओकर सेवा करब। ओकरा संगम स्नान कराएब। संत-महात्मासभसँ भेंट करबाक ओकरा बहुत इच्छा रहैक। सेहो एतए संभव हेतैक। मुदा आब तँ सभ स्वप्ने बुझाइत अछि।”

हम ओकर देह हिलबैत छी। सौंसे देह हिलि गेल। कतहु प्राण नहि छल। आब तँ हम भोकारि पारि कए कानए लगलहुँ। ट्रेन खाली भए चुकल छल। हमर चिकरब सुनि कए ट्रेनक कर्मचारीसभ लगीच पहुँचल। ओकरे सभक मदतिसँ माएकेँ प्लेटफार्मपर उतारल गेल। तकर बाद ओहने हालतिमे अचलाकेँ फोन लगओलहुँ।

“की भेल? अहाँ कानि किएक रहल छी?”

“माए मरि गेल?”

“से कोना?”

“हमरा संगे ट्रेनसँ आबि रहल छलि। ट्रेनमे हम सुति रहलहुँ। मुदा ओ जगले छलि। पता नहि की भेलैक की नहि? संभवतः ओकरा मस्तिष्कमे रक्तस्राव भए गेलैक। भोरे जखन ट्रेन प्रयागराज पहुँचल तँ ओ मरल पड़ल छलि।”

“ई तँ बहुत खराब भेल। हमसभ ओतहि आबि रहल छी।”

“एहि ठाम आबिओ कए की करब? हम लासकेँ संगम लए जाइत छी। ओकरा संगम स्नानक बहुत इच्छा रहैक। से जीबिते तँ नहि भए सकलैक। मरलाक बादे सही। तकर बाद ओतहि गंगा कातमे अंतिम संस्कार कए देबैक।”

“तँ हमसभ की करू?”

“अहाँसभ संगमे आबि जाउ।”

“ठीक छैक।”

माएक लासक संगे हम संगम बिदा होइत छी। मोनमे अतिशय दुख अछि। दुख एहू बात लेल अछि जे ओकर प्राण रस्तेमे चलि गेलैक। संभवतः ओ गाम नहि छोड़ए चाहैत छलि। ओकरो सोच सहीए रहैक। ओहि गाममे ओ अस्सी वर्ष रहल छलि। आब अनिच्छापूर्वक, मजबुरीमे ओकरा गाम छोड़ए पड़ि रहल छलैक। हम ई बात बुझिऐक। मुदा उपाय की छल? गाममे हमरसभक गुजर कथीपर होइत? खेत-पथार छल नहि,कोनो आओर रोजगारक संभावना सेहो नहि बुझाइत छल। फेर हम तँ एकटा विशिष्ट काजमे लागि गेल रही। जन कल्याणक हेतु कएल जा रहल काजमे अपनाकेँ समर्पित कए देने रही। आब एहिठामसँ वापस जेबाक तँ प्रश्ने नहि उठैत छल। अस्तु समस्त कठिनाइके बरदास करैत आगू बढ़बाक छल।

माएक संस्कार हेतु संगम लग अचला,शिप्रा आ समस्त आश्रमबासी आबि गेल रहथि। हुनका गंगामे स्नान कराओल गेल आ विधि-विधानसँ अंतिम संस्कार संपन्न भेल। सोचने रही की आ भए गेल किछु आओर। इएह जीवन थिक। सोचलाहा थोड़े होइत छैक? मुदा की करबैक। परिस्थितिकेँ स्वीकार करहि पड़ैत छैक। एक हिसाबे माएकेँ मुक्ति भए गेलैक। सभ सएह कहैत रहए। हिनका तँ मुक्ति भेटि गेलनि। जे भेलनि नहि भेलनि,मुदा गामक झंझटिसँ तँ मुक्ति भइए गेलनि। हमहूँ एक हिसाबे निश्चिन्त भेलहुँ। माएक लेल मोन लटकल रहैत छल। सभकिछु केलाक बादो मोनमे एकटा दुविधा रहिते छल। सदिखन इएह होइत रहैत छल जे हमरासँ किछु त्रुटि भए रहल अछि। हम एही असमंजससँ मुक्तिक हेतु ओकरा अपने संगे प्रयाग आनि रहल छलहुँ। मुदा विधिक विधान तँ किछु आओर छल। ओकरासँ के पार पाबि सकैत अछि?

संगमक्षेत्रमे ओकर अंत भेलैक,ओतहि अंतिम संस्कार भेलैक आ श्राद्ध कर्मसे ओतहि कएल गेल। माएक आकस्मिक देहावसानसँ हम दुखी छलहुँ। कोनो काजमे मोन नहि लागि रहल छल। मुदा एहि तरहेँ तँ जीवन नहि चलत। अपना मोनकेँ बुझओलहुँ। फेरसँ संपूर्ण शक्तिसँ आश्रमक काजमे लागि गेलहुँ। पुरना लोकमे आब ओहिठाम हम,अचला शिप्रा आ बिलट रहि गेल छलहुँ। भुवन चलिए गेलाह। हमर माए सेहो गुजरि गेलि। एमहर शिप्राक स्वास्थ्य सेहो ठीक नहि रहैत छलनि। दिन-राति मोनमे एकटा विचित्र उदासी रहैत छलनि। भुवन संगे हुनकर जीवन यात्रा उठा-पटकसँ भरल रहलनि। आब तँ ओ छथिओ नहि। तखन हुनकर कोन सोच-विचार? मुदा अचलाक भविष्य लए कए शिप्रा चिंतित रहैत छलीह। बढ़ैत बएसक संगे ओ चिंता बढले जा रहल छलनि। मुदा करथि की?

एहि दुनिआमे कोनो वस्तुक अंत नहि अछि । एक सँ एक धनीक,गुणी,ज्ञानी,कलाकार,संगीतज्ञसँ ई दुनिआ भरल अछि। तथापि एतए एतेक कष्ट अछि । हजारो,लाखों लोक अन्न बिना मरि जाइत अछि। एक तरफ अट्टालिकाक पाँति लागल अछि,दोसर दिस पूष-माघक जाड़मे लोक सड़कपर ठुठरैत राति बितबैत अछि । ततबे नहि,ओहनो हालतिमे सड़कपर सुतलेमे निसाँमे मत्त वाहनचालक द्वारा अनेक बेर पिचि देल जाइत अछि। एकरा की कहबैक?एहिमे ककर दोष अछि?एहि संसारमे कोनो वस्तुक अभाव नहि अछि । प्रकृति अकूत संपदासँ एहि पृथ्वीकेँ भरि देने छथि जाहिसँ हुनकर सभ संतान सुखी रहथि। मुदा ओ की जाने गेलथि जे ओ सभ एतेक स्वार्थी भए जेताह जे अपने पैरपर अपने कुरहरि मारि लेताह?हालति देखिए रहल छी। सभ तरहेँ संपन्नो लोक अशांतिमे जीबि रहल छथि। मानसिक रोगसँ ग्रस्त छथि। पथिआक-पथिआ दबाइ फाँकि रहल छथि। तैओ अकाल मृत्युक सिकार भए रहल छथि। ई सभ किएक भए रहल अछि? एतेक उठा-पटक केलाक बादो जीवन सुखी किएक नहि भए रहल अछि? तकर मूल कारण अछि मनुष्यताक अभाव । अपन आवश्यकता भरि प्राकृतिक संपदाक उपयोग करू,दोसरोक हितक ध्यान धरू,जीवनमे आध्यात्मिक संपदाक महत्व बुझू तखनहि शांति प्राप्त भए सकैत अछि। मुदा भए की रहल अछि? जेना-तेना सभकिछु हथिआ लिअ । कैकपुस्त लेल धन जमा करैत चलू। सामनेबाला जीबए-मरए तकर कोनो परबाहि नहि। एहि तरहक स्वार्थी प्रवृतिक कारणसँ पृथ्वीपर लोकक जीवन कष्टप्रद भए गेल अछि। तरह-तरहक हथिआरसभ बना कए राखल गेल अछि। एटम बमसँ शस्त्रागारसभ भरल अछि। ककरो माथा खराब होएबाकक देरी अछि आ दुनिआ बरबाद भए जाएत । एहन सुंदर दुनिआ जे हजारो-लाखों सालमे

विकासक वर्तमान स्तर धरि पहुँचल अछि,से देखिते-देखिते छाउर भए जाएत। अहंकार आ अतिस्वार्थक कारण हमसभ एहि दुनिआक की हाल कए देलहुँ? हमरसभक भावी संतान कतए ठाढ़ हेताह? की रहि जेतनि हुनकासभक हेतु? ई सभ बहुत स्वाभाविक प्रश्न अछि जे समस्त मानव समाजक सामनेमे प्रश्न बनि कए ठाढ़ अछि । समस्या तँ बुझलहुँ,मुदा समाधानो तँ हमरे-अहाँकेँ करए पड़त। जखन आगि लगओलिएक अछि तँ पानि के ढारत?एही उद्देश्यसँ आश्रमक स्थापना कएल गेल छल।

एहन भआओन परिस्थितिसँ मानवताकेँ बँचेबाक प्रयास भए रहल छल आश्रममे। संगमक एतेक लगीच आश्रमक स्थापना एही लेल कएल गेल छल जाहिसँ लोकसभकेँ आपसमे सद्भावना बनओने रहबाक एवम् जनकल्याण हेतु एकटा सतत विद्यमान आधारभूमि भेटि सकैक ,जतए लोक स्वतंत्र रूपसँ चिंतन-मनन कए सकए,जतए मनुक्खक मानवीय संवेदनाक सहज अनुभूति होइक। सारांशमे कहल जाए तँ एतए मनुष्यक चरित्र निर्माणपर जोर देल जाइत छल जाहिसँ ओ अपन जीवनक समस्याकेँ सही समाधान कए सकए आ मानव जीवनकेँ सफल बना सकए। ओहिठामक वातावरण अद्भुत छल । लोकसभ एक-दोसरक दुख-सुखमे सामिल होइत छलाह। मानवमात्रक जीवन सुखी करबाक उद्देश्यसँ छोट-पैघकेँ जोड़बाक एकटा अभिनव प्रयोगशाला छल ओ । आश्रम सही मानेमे लोक कल्याणकेन्द्र बनि गेल छल।

असलमे आश्रममे लोकक विचार परिवर्तनपर जोर देल जाइत छल । कोनो आदमी नीक-बेजाए नहि होइत अछि । अपितु ओकर विचार जखन जेहन होइत छैक ओ तेहने भए जाइत अछि । प्रयाग माघमेलामे बहुत रास संत महात्मासभ ओही प्रयासमे लागल रहैत छलाह। यत्र-तत्र पसरल संत-महात्मासभ सेहो मनुक्खक आध्यात्मिक शक्तिक विकासमे लागल रहैत छथिहे । आश्रम एहि तरहक काजमे

लागल अनेक संस्था,संत,महात्मा लोकनिक बीचमे समन्वय स्थापित कए अधिक सँ अधिक लोककेँ ओहिसँ लाभान्वित होएबाकक प्रयासमे सहयोग करैत छल। संगहि संत महात्माक नामपर लोककेँ ठकनिहारसभक विरुद्ध सेहो अबाज उठबैत छल। एहिसभक सूत्रधार श्वेतानन्दकेँ साइते केओ जनैत छल,ने ओ ककरोसँ भेंटो करैत छलाह। ओ चुपचाप अपन काजमे लागल रहैत छलाह। हुनकर एहि तरहक नियमित प्रयाससँ गाम-गाम बिना कोनो ताम-झामकेँ एहि संस्थाक समर्थकसभक संख्यामे निरंतर बृद्धि होइत गेल। लोकसभ धर्मक सही अर्थ बूझनाइ शुरु केलक। अंधविश्वास आ पाखंडक प्रभाव शिथिल होइत गेल। श्वेतानन्द एहि काजकेँ निरंतर करैत रहलाह। हमसभ हुनकर काजमे यथासंभव सहयोग करैत रहलिअनि। हुनका ककरोसँ बेसी अपेक्षो नहि रहैत छलनि। हँ,ओ ई जरूर चाहैत छलाह जे गलत काज केनिहारसभकेँ चिन्हित कएल जाए। समाजक सामने ओकरसभक असली रूप राखल जाए। तकरबाद तँ लोक अपने सही चुनाओ कए लेत। हुनकर एहि सोचक अनुकूल प्रभाव भइओ रहल छल। मुदा दुष्ट व्यक्तिसभ सेहो अपना भरि लागले रहैत छल। ई कोनो आइए नहि भेलैक अछि। सभ समयमे नीक-बेजाए रहबे केलैक अछि।

आश्रममे रहनिहार लोकक संख्यामे निरंतर बृद्धि होइत रहल। किछु नीक करबाक विचारसँ ओ सभ आश्रमसँ जुड़ल छलाह। जकरा जे पार लगैत छलनि से करितो छलाह। एहिठाम रहि रहल लोकसभ दिन-राति राष्ट्र निर्माणमे लागल रहैत छलाह। दिन-राति परिश्रम कए समाजकेँ सही दिशा देबाक प्रयासमे सहयोगी भए रहल छलाह। एतए केओ ककरोपर निर्भर नहि छल। सभ अपन शक्तिक अनुसार त्याग करबाक हेतु तत्पर छल। ओकरसभक सोच छलैक-जे देश बाँचत तखनहि हमहूँसभ बाँचब। राष्ट्रीय भावनासँ ओतप्रोत ओहिठामक बासीसभ जीवनमे उच्चकोटिक आदर्श स्थापित करबाक हेतु

कृतसंकल्प छलाह । हुनकर सभक समर्पणेक परिणाम छल जे माहौलमे एतेक तेजीसँ सुधार भए रहल छल।

समस्त आश्रमबासी संस्कार संपन्न भए समाजक कल्याणमे अग्रसर भए गेलाह। सुंदर समाजक निर्माणमे लागि गेलाह। लोकसभ स्वस्थ एवम् चरित्रवान बनथि ताहि हेतु एक-दोसरकेँ शुभसंस्कार दैत रहलाह । समाजसँ अज्ञान,अहंकार,कटुता,ईर्ष्या,द्वेष सन-सन निषेधात्मक विचार समाप्त होइत चलि गेल। एहि तरहेँ चतुर्दिक ज्ञानक दीपसँ दीप जरैत गेल। एकटा नूतन सुशिक्षित,संस्कारसंपन्न व्यक्तिक निर्माण हेतु समाज अग्रसर होइत रहल।

36

आइ शरदपूर्णिमाक दिन अछि। आश्रममे विशेष कार्यक्रम भए रहल अछि। भजन-कीर्तन भए रहल अछि । लोकसभ आनन्दपूर्वक एक-दोसरसँ भेंट करैत,गप्प-सप्प करैत,गला मिलैत छथि। लगैत छल जेना पृथ्वीपर स्वर्गक रचना भए गेल अछि। लगपासक गामसभसँ हजारो भक्तसभ पहुँचि गेल छथि । सभक मोनमे उत्साह छनि । अचानक माहौलमे परिवर्तन होइत अछि । भजन-कीर्तन बंद भए जाइत अछि। जे से श्वेतानन्दक कक्ष दिस बढ़ल जा रहल अछि। आश्रमक अंतिम छोर लग बहुत लोक जमा होमए लगैत अछि। सभ चुप,उदास। केओ ककरो टोकि नहि रहल अछि। जेना सभ किछु जानबाक हेतु उत्सुक छथि। ओहिठाम लोकक भीड़ बढ़िते जा रहल छल। ओहि समय हम थोड़बे फटकी टहलि रहल छलहुँ। हमहूँ ओतए पहुँचि जाइत छी। भितरसँ एकटा लासकेँ बाहर आनल जाइत अछि। ओ पीताम्बरीसँ झाँपल छल। लास देखितहि ओतए उपस्थित लोकसभ एकस्वरसँ चिकरि उठलाह-

“श्वेतानन्द अमर रहथि।”

श्वेतानन्दक देहावसानक समाचार चारूकात पसरि गेल । सभ शोकाकुल छल। पहिल बेर हुनकर शरीर बाहर भेल छल ओहो एहि हालतिमे। आश्रममे चारूकात घंटासभ बाजए लागल।

समस्त आश्रम बासी एवम् प्रवासी ओतए उपस्थित रहथि। आकाशमे एकटा तेजपुंज प्रकट भेल। अचानक प्रकट भेल ओहि तेजपुंज दिस सभक ध्यान चलि गेलैक। ओहिसँ विकीर्ण भए रहल सकारात्मक ऊर्जासँ ओतए उपस्थित सभगोटे नेहाल भए रहल छलाह। ओहिसँ निरंतर ध्वनि निकलि रहल छल-

ॐ असतो मा सद्गमय।

तमसो मा ज्योतिर्गमय।

मृत्योर्माऽमृतं गमय।

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः॥

हमरा असत्यसँ सत्य दिस लए चलू। अंधकारसँ प्रकाश दिस लए चलू। मृत्युसँ अमरता दिस लए चलू। ओ तेजपुंज आकाश दिस बढ़ैत गेल आ अनन्तमे समाहित भए गेल। तकर बाद श्वेतानन्दक अबाज फेर कहिओ नहि सुनाएल।

के रहथि श्वेतानन्द,केहन छनि हुनकर मुँह-कान से केओ नहि जनैत छल। मुदा हुनकर प्रभाव सर्वव्यापी छल। जे केओ एको बेर हुनका सुनि लैत छल से हुनकर पाछू ठाढ़ भए जाइत छल। कोनो प्रचार नहि,कोनो शक्ति प्रदर्शन नहि ,ने कोनो व्यक्तिगत अभिलाषा छलनि हुनका। सर्वजन हिताय ओ निःस्वार्थ भावसँ काज करैत छलाह,लागल रहैत छलाह। एहन महान व्यक्ति छलाह श्वेतानन्द। बाह रे श्वेतानन्द!कमालकेँ काज केलाह ओ।

सभक मोनमे अभिलाषा रहैत छलैक जे एकबेर हुनका देखितिअनि। सभक मोनमे ई रहैक जे एकबेर हुनकर दर्शन होइत।

देखितिअनि जे ओ के छथि? केहन छथि?मुदा से सौख लागले रहि गेलैक। केओ कहिओ हुनकर भौतिक स्वरुपक दर्शन नहि कए सकल। तँ की ओ एकटा भ्रम मात्र छलाह ? नहि,नहि से के कहि रहल अछि। माघमेलामे उपस्थित हजारो संत-महात्माक चिंतन-मननसँ उत्पन्न सकारात्मक वैचारिक ऊर्जाक परिणाम छलाह श्वेतानन्द।

आइ जखन श्वेतानन्दक देहावसान भए गेलनि तखन हमरा लोकनिकेँ हुनका बारेमे जानकारी भेटल। ओहो अकस्माते। संयोगसँ हम आश्रमक ध्यानकक्षमे बैसल रही कि हुनकर एकटा भक्त अएलाह आ हमरा एकटा झोरा पकड़ा देलनि। कहलनि-

“ई अहींक लेल अछि।”

हम कतबो रोकलिअनि ओ रुकलाह नहि,चलि जाइत रहलाह। हम ओहि झोरामे राखल एकटा पत्र पढ़ैत छी। ओहिमे लिखल अछि-

“हमसभदिन कहैत रहलिअह जे अपना बारेमे तोरासभकेँ सही समयपर जानकारी अवश्य देबह। से जानि लएह। हमर नाम श्वेतानन्द अछि। हम सैनिक रही। शत्रुदेशसँ युद्ध करैत हमर टांग कटि गेल। हम अथबल भए गेलहुँ। हमरा सेनासँ मुक्त कए देल गेल। हम एहि बातसँ बहुत दुखी रही। संयोगसँ माघमेलामे हमरा गुरुजीसँ भेंट भेल। ओ हमर परेसानी बुझलनि, हमरा उचित मार्गदर्शन केलनि। अपन स्थानपर लेने अएलाह। ओ निरंतर प्रेरित करैत रहलाह–

“तूँ बहुत किछु कए सकैत छह।” हुनके प्रेरणासँ हम समाज कल्याणक काजमे लागि गेलहुँ। ओ हमरा कहि गेल रहथि जे तूँ अपन जीवन लोक कल्याणमे लगाबह। समाजमे चरित्रवान व्यक्तिक निर्माण होएब सभसँ जरूरी अछि। ताहि हेतु प्रयास करह। तकर बादे तोहर मुक्ति संभव होएत।

गुरुजीक देहान्तक बाद एहि आश्रमक कार्यभार हमरेपर आबि गेल। तहिएसँ हम गुप्तरूपसँ एहि आश्रममे काज कए रहल छी। हम

एहि बातसँ संतुष्ट छी जे हमर गुरुजीक स्वप्न हम साकार करबामे आजीवन लागल रहलहुँ आ बहुत हद धरि सफलो रहलहुँ। आब शिप्रा सन लोक एहिठाम आबि गेल छथि। तूँहु छहे। हम निश्चिन्त छी। हम आब बहुत संतुष्ट भए जा रहल छी। हरि ओम्।”

37

जहिआसँ शिप्रा आश्रममे रहए लगलीह,जीवनक प्रति हुनकर दृष्टिकोण बदलि गेलनि । जीवनमे आडंवर,अहंकार,लोभ,लालचक नामो निसान नहि रहि गेलनि । जनकल्याणमे निरन्तर व्यस्त हुनकर मोन अत्यन्त शांत आ स्थिर भए गेलनि,तथापि अचलाक चिंता हुनकर संग नहि छोड़ि रहल छलनि । संतानक मोह होइते तेहने छैक । ओ अखनहु एकान्तमे इएहसभ सोचि रहल छलीह। ताबते हम अचलाक संगे हुनका तकैत ओहिठाम आबि जाइत छी। हमरासभकेँ आपसमे हँसैत-बजैत देखि हुनकर मोन प्रफुल्लित भए जाइत छनि। ओ हमरा लगमे बजबैत छथि। हमरा पाछू-पाछू अचला सेहो अबैत छथि। तकर बाद ओ अचलाक हाथ हमरा हाथमे धए दैत छथि। आनन्दसँ हुनकर आँखिसँ अश्रुपात होमए लगैत छनि। चारूकात मंगलगान होमए लगैत अछि।

हमरा लोकनिक बिआह विधिपूर्वक संपन्न होइत अछि । बिआहक बाद हमसभ भविष्यक बारेमे आपसमे चर्चा करैत रही । शिप्रा सेहो ओतए आबि गेलथि। हम शिप्रासँ पुछलिअनि-

“आब हमसभ की करी?”

“हमरा विचारसँ तँ तोरासभकेँ गाम चलि जेबाक चाही जाहिसँ आश्रममे प्राप्त कएल गेल संस्कारसँ ओहिठामक समाज फएदा उठा सकए।”

“हमसभ तँ सोचने रही जे आश्रमेमे रहब । जखन गामेमे रहबाक छल तँ माएकेँ अनेरे एतए अनलिऐक। गाममे रहैत तँ साइत अखन आओर जीबैत।”

“ई सभ सोचलासँ कोनो फएदा नहि होमएबाला अछि। जे भावी छल से भेल। आब तकर कोन हिसाब छैक। हानि लाभ जीवन मरण यश अपयश विधि हाथ।”

“पता नहि गामक की हाल अछि? घरो बाँचल अछि कि खसि गेल?”

“जा कए देखहक तँ। पहिनेसँ किएक परेसान छह।”

शिप्राक बात मानि आखिर हम आ अचला गाम दिस मुखापेक्षी भेलहुँ। गाम बिदा होमएसँ पूर्व हम आ अचला शिप्रासँ भेंट करैत छी। हुनकर आशीर्वाद लैत छी। हुनका अपना संगे गाम चलबाक आग्रह करैत छिअनि। मुदा ओ मना कए दैत छथि। आश्रम छोड़ि कतहु नहि जेतीह से कहि रहल छथि।

हम अचलाक संगे अपन गाम बिदा होइत छी। आश्रम छोड़ए काल मोनमे कष्ट तँ भेवे कएल। ईहो चिंता रहए जे आखिर एकर काज आगू केना होएत? फेर अपने मोनमे भेल जे ककरो बिना ई दुनिआ रुकल नहि रहि जाइत अछि। आश्रममे जे नीक विचारसभ अंकुरित भेल से समयक संगे स्वतः समाजमे प्रस्फुटित,पल्लवित होइते रहत,होएबे करत। प्रकृति अपन काज करबे करत।

हम अचलाक संगे गाम पहुँचैत छी। अपन पुरुखाकक स्थानपर जेबाक सुखक की वर्णन कएल जाए? गाछ-बृच्छ,चिड़ै-चुनमुन सभकिछुसँ अपनत्वक बोध भए रहल छल। गाम अबैत काल कतेक आनन्दमे रही। की-की ने सोचने रही। मुदा गाम पहुँचितहि से सभ दिवास्वप्न बुझा रहल छल। एहिठामक तँ हाले बेहाल छल। गामक स्वरुप बदलि गेल छल। चारूकात कोठे-कोठा छल। मुदा हमर घरक

कतहु नामो-निसान नहि छल। हमर घर खसि चुकल छल। दिआद-बादसभ घराड़ी हथिआ चुकल रहथि।

गाममे अपन डीहपर पैर रखतहि मोन उदास भए गेल। लागैत छल जेना किछु हरा गेल अछि। जेना हम ओकरा ताकि रहल छी। कनीकाल तँ किछु बुझेबे नहि कएल जे एना किएक भए रहल अछि। क्रमशः स्थिर होइत छी। आब बूझि रहल छी जे माएक अभावसँ ई शून्यताक अनुभव भए रहल अछि। हम जखन गाममे रही,कतहुसँ आबी तँ माए हँसैत सामने ठाढ़ि भए जाइत,किछु एहन बात कहैत जाहिसँ मोन प्रसन्न भए जाइत। हांइ-हांइ जलखैक ओरिआन करैत। कहैत-

“ताबे ई खाह। हम झट दए भोजन बनबैत छी।”

से कहि ओ भनसा घरमे चलि जाइत। भोजनक विन्यासमे लागि जाइत। मुदा आब? आब के अछि जे ओकर स्थान लेत? ने माता, ने मातृभूमि। सभकिछु बरबाद भए गेल। ककरा की कहल जाए? केओ हालो-चाल पुछनाहर नहि छल। सभ घरे-घर बंद छल। एहिसभसँ हमर मोन अतिशय उदास आ दुखी भए गेल।

भगवतीक घर सेहो नहि बाँचल छल। आब की करितहुँ? मोने-मोन भगवतीकेँ गोर लगलिअनि आ गामसँ वापस होएबाक सुर-सार करैत रही। तावतमे पड़ोसमे फट्ट दए एकटा फट्टक फुजलैक। इजोत छिड़िअएलैक। हम ठमकि गेलहुँ तत्खनात...।

****

हमर पोथीसभक मुद्रित संस्करण निम्नलिखित वेवलिंकपर क्लिक कए आनलाइन कीनल जा सकैत अछि:

भोरसँ साँझ धरि(आत्मकथा)(पेपरबैक)
https://pothi.com/pothi/node/195476.

भोरसँ साँझ धरि (सजिल्द)

https://pothi.com/pothi/node/209754.

प्रसंगवश(निवंध संग्रह)
https://pothi.com/pothi/node/195527.
स्वर्ग एतहि अछि(यात्रा प्रसंग)
https://pothi.com/pothi/node/195487.
फसाद(कथा संग्रह)
https://pothi.com/pothi/node/195510.
नमस्तस्यै(मैथिली उपन्यास)
https://pothi.com/pothi/node/195444.

विविध प्रसंग(निवंध संग्रह)
https://pothi.com/pothi/node/195633.

महराज (मैथिली उपन्यास)

https://pothi.com/pothi/node/195795
लजकोटर (मैथिली उपन्यास)

https://pothi.com/pothi/node/196264.

सीमाक ओहि पार(मैथिली उपन्यास)

https://pothi.com/pothi/node/197004.

समाधान (निवंध संग्रह)
https://pothi.com/pothi/node/197754.

मातृभूमि(उपन्यास)

https://pothi.com/pothi/node/198699.

स्वप्नलोक(उपन्यास)
https://pothi.com/pothi/node/199847.

शंखनाद(उपन्यास)

https://pothi.com/pothi/node/200903.

इएह थिक जीवन(संस्मरण)

https://pothi.com/pothi/node/202488.

ढहैत देबाल(उपन्यास)

https://pothi.com/pothi/node/203720.

पाथेय

https://pothi.com/pothi/node/205009.

हम आबि रहल छी(उपन्यास)

https://pothi.com/pothi/node/206093.

प्रलयक परात(उपन्यास)

https://pothi.com/pothi/node/207234.

बीति गेल समय(उपन्यास)

https://pothi.com/pothi/node/208351.

प्रतिबिम्ब(उपन्यास)

https://pothi.com/pothi/node/208632.

बदलि रहल अछि सभकिछु(उपन्यास)

https://pothi.com/pothi/node/209281.

राष्ट्र मंदिर(उपन्यास)

https://pothi.com/pothi/node/210181.

संयोग(कथा संग्रह)

https://rb.gy/edit6k.

नाचि रहल छलि वसुधा(उपन्यास)

https://bit.ly/3The07Y

दीप जरैत रहए(उपन्यास)

https://t.ly/nU_E.

The Lost House (Collection of short stories)

https://pothi.com/pothi/node/195843.
Life is an Art (Motivational essays)

https://pothi.com/pothi/node/196385

न्याय की गुहार (हिन्दी उपन्यास)

https://pothi.com/pothi/node/198163.

www. amazon.com/www.flipkart.com/ पर सेहो ई पोथीसभ आनलाइन कीनल जा सकैत अछि।